हिसिर

[हार]

रामदयाल मुण्डा

हिसिर

[हार]

रामदयाल मुण्डा

प्रकाशक

रुमबुल

दिरि ओड़ाः, सरनाटोली–हतमा, राँची कॉलेज के पीछे
राँची–834008, झारखण्ड

हिसिर

[हार]

प्रकाशक : रुम्बुल
दिरि ओड़ाः, सरनाटोली–हतमा, राँची कॉलेज के पीछे पीछे,
राँची–834008, झारखण्ड
फोन : 07739817358
ई–मेल : rdm.rumbul@gmail.com

प्रथम संस्ककरण : 1972

द्वितीय संस्करण : 2014

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग, कोकर, राँची–834001 1
मो. 094311 82812

मूल्य : 100/– रूपये

प्रस्तावना

मुण्डा जाति गीत प्रिय रही है, उसका जीवन ही गीतमय रहा है। जब भी, जिसने भी इसके जीवन को देखा, प्रथमत: गीतों में ही देखा। मुण्डा जाति की यह सम्पत्ति ऐसी सम्पत्ति है जिसे कोई दूसरा चाह कर भी अपना नहीं सकता, और अब तो हम यह कहते भी नहीं हिचकिचाते कि इस जाति का अस्तित्व यदि है तो इन्हीं गीतों के कारण है। इन गीतों ने युगों के थपेड़ों, आँधी-तूफानों में भी हमारा साथ नहीं छोड़ा है। अनेक स्थलों में मार्ग निर्देशित कर हमें बचाया है।

प्रगति और परिवर्त्तन के लम्बे अर्से में इन गीतों ने अपना रूप बदला है- कुछ खोया है, कुछ पाया है। हमें प्रसन्नता होती है कि इन गीतों के परों में उड़ान भरने की ताकत आने लगी है। इनकी गूंज पहाड़ों की घाटियों तक ही सीमित नहीं; राजमहलों की ईंटों से भी इनका परिचय है। ये सब मिला-जुला कर इनके शुभ लक्षण हैं।

इसी गीत में परम्परा की कतिपय नवीन कड़ियों को प्रस्तुत करने का हमने प्रयास किया है। इनका बिगड़ा, बना जो भी रूप है, वह मुण्डारी गीत प्रेमियों के सामने है। इनका यह परिवर्त्तन, यह शैशव समझने और विश्लेषण करने की वस्तु है और आवश्यक रूप से विद्वत् समाज को आमंत्रित करता है।

मैं उन कवि-मित्रों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ जिन्होंने अपने रचनाएं हिसिर में सम्मिलित करने का मेरा आग्रह स्वीकार किया है। अन्य गुरुजनों एवं सहयोगियों का भी जिनका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष योग हिसिर के निर्माण में मिला है मैं कृतज्ञ हूँ। भूमिका लेखक गुरुवर श्री जगदीश त्रिगुणायत जी को मैं किन शब्दों में धन्यवाद दूँ। जिनकी प्रेरणा के बिना हिसिर ने जाने और कितने दिनों तक अप्रकाशित रहता।

शिकागो विश्वविद्यालय

रामदयाल मुण्डा

इसलिए यह सिर्फ संयोग की बात नहीं है कि आदिवासी कविता की पुरानी डालों पर सब से अधिक नई कोंपले मुण्डा भूमि पर ही फूट रही हैं।

किन्तु आज की चुनौती अबतक की किसी भी अन्य चुनौती से प्रबल है। आज शिक्षा, सम्पर्क और औद्योगीकरण के तीव्र 'प्रहार' से आदिवासी संस्कृति की सारी विशिष्टताएं दाँव पर चढ़ गई हैं। इस चुनौती का उत्तर देने की जिम्मेवारी आदिवासी की नई पीढ़ी पर है।

राजनीति, समाज-विज्ञान अथवा समाज-सेवा में से किसी में भी इस प्रहार से आदिवासी को बचाने की शक्ति नहीं है, वे मोर्चे पर सिर्फ कुमुक पहुँचा सकती है। लड़ाई तो स्वयं आदिवासी को ही लड़नी है— विशेषत: उसकी नई पीढ़ी को।

इस नई पीढ़ी के सामने एक बड़ी तेज धारा बह रही है। उसी धारा को काटने के लिये अपने पैरों को बड़ी दृढ़ता से जमाते हुए चलना है। वाह्य वस्तुओं के चाकचिक्य में पड़ कर अपनी वस्तुओं के प्रति मन में हीन भाव नहीं आने देना है। वनों-पर्वतों में भूख, अशिक्षा, रोग और रूढ़िवादिता में ग्रस्त अर्धमानव का जीवन बिताने वाले नर नारियों और बच्चों के प्रति, उसे अपने दायित्व से विमुख नहीं हो जाना है।

इसके लिए उसे अपना संगठन बनाना और नये युग के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक हर मोर्चे पर लड़ना है। जीवन के किसी एक अंग की रक्षा और सेवा अकेले नहीं हो सकती। जीवन को टुकड़ों में नहीं बाँटा जा सकता।

मेरे लिए यह अनुभव करना बड़े आनन्द और उत्साह की बात है कि इस 'हिसिर्' में मुण्डा-युवकों की वही जागरूकता परिलक्षित हो रही है।

एक दर्जन कवियों के गीतों का संकलन, और अपनी नव-संगठित 'सहकारी प्रकाशन समिति' द्वारा इसका प्रकाशन, न केवल वांछनीय प्रयत्न है, वरन् जीवन के हर पक्ष में, आदिवासी के परम्परागत सहकार के अनुकूल भी है।

श्री रामदयाल के इस नेतृत्व का हार्दिक अभिनन्दन किया जाना चाहिए। इसके द्वारा उन्होंने अपनी सहृदयता और सृजनात्मक प्रतिभा का एक उत्तम उपयोग किया है और सही दिशा में किया है।

वैसा ही अभिनन्दनीय आदिवासी युवकों का इस सहकारी प्रकाशन का प्रयत्न भी है। इस प्रयोग से साहित्य की धरती तो समृद्ध होगी ही, अन्य क्षेत्रों के

भूमिका

'मुण्डा' शब्द एक ही साथ चार अर्थों का भार ढोता है। 'मुण्डा'— एक जाति, 'मुण्डा'— गाँव का मुखिया, 'मुण्डा'— एक भाषा, और फिर 'मुण्डा'— विश्व-भाषाओं के विशाल 'आष्ट्रिक' या 'आग्नेय' परिवार की कतिपय उन बोलियों का समूह, जो मध्यवर्ती भारत के वनों-पर्वतों में लाखों की संख्या में फैली हुई अनेक जातियों द्वारा बोली जाती है, और प्रस्तुत पुस्तक की मुण्डा भाषा जिनकी मात्र एक छोटी इकाई है।

प्रजाति के रूप में 'मुण्डा', जातियों के विशाल 'प्रोटो-आस्ट्रेल्वायड' परिवार की एक उप-शाखा है और जैसा कि बताया गया, भाषा के रूप में 'मुण्डा' 'आष्ट्रिक' या 'आग्नेय' परिवार की भारतीय उप-शाखा 'मुण्डा भाषाएं' की एक इकाई।

उक्त प्रजाति और भाषा दोनों का किसी दिन अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है, किन्तु कालान्तर में ये दोनों भारत की धरती पर अपने अन्य पड़ोसियों में बहुत कुछ विमिश्रित और विलुप्त होती गई हैं। इस प्रकार का मिश्रण या विलोप भाषा के क्षेत्र में प्रजाति की अपेक्षा अधिक हुआ है।

यहाँ आकर मुण्डा की स्थिति अपने अन्य सह-शाखाओं से पृथक हो जाती है। और यह भिन्नता उसके स्वभाव के सम्बन्ध में अनेक रहस्यों का उद्घाटन करती है।

इस परिवार की अन्य शाखाओं ने मुण्डा की अपेक्षा बहुत बड़े अनुपात में अपनी भाषाएं छोड़ दी हैं और मुण्डा ने अन्यों की अपेक्षा बहुत बड़े अनुपात में अपनी भाषा बचा रक्खी है। जहाँ सम्पूर्ण प्रजाति और भाषा की जनसंख्या का अनुपात भारत में मुश्किल से 10:1 का होगा वहाँ अपनी भाषा का प्रयोग करने वाले मुण्डा 10 में 7 से कम नहीं होंगे। यह तथ्य अपने अस्तित्व और संस्कृति की रक्षा के प्रति मुण्डा की सनातन जागरूकता का ज्वलन्त प्रमाण है।

दूसरे प्रमाण भी हैं। इस जाति ने किसी भी प्रकार के वाह्य प्रभाव से अन्यों की अपेक्षा अपनी अधिक रक्षा की है, इसी के पास पुरानी परम्पराएं सर्वाधिक सुरक्षित हैं, मात्र इसी की एक बड़ी जनसंख्या में अभी तक द्वैभाषिकता नहीं आयी है और इसी ने, किसी भौतिक समृद्धि में कोई विशेष स्थान नहीं रख कर भी हर प्रकार के आन्दोलन का नेतृत्व किया है, पुराने नृत्य-गीत अपने अविकल रूप में इसी के पास सर्वाधिक सुरक्षित हैं।

काबु एपेराञा, सुगाड़ा, काबु सेपेगेदा	20	17	बंधु, हम नहीं लड़ेंगे-झगड़ेंगे
आमा: दोगो छाएला	21	18	तुम्हारा रंगीलापन
कामि इतुनाबु, सुगाड़ा, उदाम इतुनाबु	22	19	हम काम सीखें, प्रिय, उद्यम सीखें
चिका लेका पाड़िञ हाला बेना	23	19	कैसे ऋण चुकाएँ

दुलायचन्द्र

बुरू दिसुम होड़ो को	24	23	पहाड़ के निवासी
हातु ताञेम मेनेआ	25	24	मेरा देश कहते हो
जवाहर लाल्	26	24	जवाहरलाल
डिण्डा लेका सुकुसोमाए कामलेलेआ	27	25	कुंवारापन का-सा सुख नहीं देखोगे
गातिञ आमा: जी दो गोसो जानारे	28	26	प्रिय, तुम्हारा मन मुर्झा गया
बिरसा भागोआन	29	27	बिरसा भगवान्
आमलेलतेञ दानदा गिड़ि जाना	30	27	तुम्हें देख मैं आश्चर्य में पड़ गया
बिपोति रे जेताए बांगाइआ	31	28	विपत्ति में कोई नहीं है
चिलका तेञ पारोमेआ गाड़ा	32	28	कैसे मैं नदी पार करूँ
तोआउ चेड़ें[1]	33	29	कोयल पंछी[1]
तोआउ चेड़ें[2]	34	30	कोयल पंछी[2]
बा चाण्डु:[1]	35	30	सरहुल का चाँद[1]
बा चाण्डु:[2]	36	31	सरहुल का चाँद[2]
ओको तिआ भाला	37	32	भला, वह कहाँ चला गया
चिलकाञ रिड़िङि (आ)	38	33	मैं कैसे बिसारूँ
चिना: आम	39	34	तुम क्या हो

बलदेव

इनुङेञ सेनो: आ दादा	40	37	भैया, मैं खेलने जाऊँगा
बापू का होञ रिड़िङ मेआ	41	37	बापू, तुम्हें मैं नहीं बिसारूँगा
सोबेन रे आमगे	42	38	सर्वत्र तुम ही बिराजते हो
ने रिड़िं चिलकाते हालो: (आ)	43	38	यह ऋण कैसे चुकेगा

भी वे बन्द मार्ग खुलेंगे जिनपर चलकर मिलने वाली घाटी आदिवासी युवकों को हर्ष, उत्साह और आश्चर्य से भर देगी।

एक युवक पुजारी के हाथों अपनी संस्कृति के चरणों पर चढ़ाये जाने वाला यह बड़ा नया और मनोहर हार है। गन्ध की विभिन्नता ने इस हार का शोभा और सरसता बहुत बढ़ा दी है। इस संग्रह के दो पुराने कवि बुदु बाबू और राम तो मुण्डा के परम लोकप्रिय कवि हो ही चुके हैं, शेष युवक कवि भी आज अपने गीतों द्वारा कंठ-कंठ में मुखरित हो रहे हैं।

इस संग्रह में पुरातन और नूतन अथवा परम्परा और प्रगति का मोहक संयोग हुआ है– व्यक्तियों की ही तरह विचारों के क्षेत्र में भी। श्री उदय, काण्डे, विश्वनाथ, सहदेव और सागू ग्रामीण कवि हैं, थोड़ी बहुत शिक्षा पाए हुये, लोक गीतों की परम्परा के निकट।

श्री दुलाय, बलदेव, भइयाराम, मीरु और रामदयाल सुशिक्षित कवि हैं, वाह्य साहित्य से परिचित, नवीनता की घाटियों में घूमे फिरे हुये।

मगर, ग्रामीण कवि न तो युग के परिवर्त्तनों से बे-खबर हैं, और न सुशिक्षित कवियों ने अपनी परम्परा से नाता तोड़ा है। इस संग्रह में यह भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि मुण्डा कविता पर्वत की कन्दराओं से घाटी में उतर कर विस्तार पाने के लिए रास्ता खोज रही है। परम्परा से नाता रखते हुये भी, नये प्रश्नों का उत्तर खोजने की बेचैनी कवियों में बढ़ती जा रही है।

इस मोहक संग्रह, और इधर हाल में निकले हुए मुण्डा गीतों के अन्य संग्रहों ने जीवन संघर्ष की व्यापक और प्रभावशाली अभिव्यक्तियों के रूप में, अन्य विधाओं–नाटक, कथा, प्रबन्ध-कविता आदि के प्रति भी आदिवासी-जीवन और साहित्य के प्रेमियों की आशा बढ़ दी है।

श्री रामदयाल ने अपनी सहज शालीनता-वश मुझसे भूमिका मांगी, उनका यह प्रथम प्रयास स्वयं उनके आगामी सत्प्रयत्नों के लिए सजीव और सच्ची भूमिका बने, इसी मंगल कामना के साथ।

जगन्नाथ नगर
9-12-1967

जगदीश त्रिगुणायत

गीत	संख्या	पृष्ठ	हिन्दी
आलाङ दिसुम रेलाङ जोनोम जाना	65	80	हम इस देश में जन्में
राबाङ तायोमेतेम हि:आकाना	66	81	जाड़े के बाद आए हो
सामाड़ोम लेका गेको जोगाओलेद मेआ	67	81	सोने की तरह तुम्हें संजोया गया

रामदयाल

तिरंगा ओटाङ जान सिरिमा रे	68	85	तिरंगा लहरा उठा आसमान में
भारत एंगा	69	85	भारत माँ
ने हापे	70	86	यह मौन
कोतेम सेन केदा रे	71	87	कहाँ तुम चली
चिआ:ते कामे उदुबेआ	72	87	क्यों तुम नहीं बताते
आङ ताना, तुर ताना	73	88	भोर हुआ, सूर्योदय हो रहा है
बागेताम आड़िसा, कुदेलाम ने मिसा	74	89	आलस्य छोड़ो कुदाली धरो
ने तिरि रिरि रूतु साड़ि रे	75	89	बाँसुरी के इस तिरि रिरि स्वर में
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि	76	90	अखाड़े में नया मंदोड़ी
हाटिआ हातु दोरे हिले, हिले	77	91	हटिया गाँव काँपता सा दीखता है
ओकोए तीते काजिञ कुले	78	91	किससे बात भेजूँ
हिजु: राबाङ चाण्डु: कोलोम कुमुते	79	93	अगहन के भरपूर खलिहान की.....
लेलेमे लेलेमे तीरे गेरा बेरा रे	80	94	देखो हम हथकड़ी लिए आये हैं

विश्वनाथ

कुड़ि होन जोनोम दो आड़ांनदि नांगेन	81	97	कन्या का जन्म शादी देने के लिए
आमा: नुतुम ताइजाना	82	97	तुम्हारा नाम रह गया
जोआर हे भारत एंगाञ	83	98	जोहार हे भारत माता
ने मागे चाण्डु: हिसि तुरिआ हुलाङ	84	100	इसी छब्बीस जनवरी के दिन
ताबु हातु पांचइटि	85	101	हमारा ग्राम पंचायत
सिदा दोलाङ ताइकेना	86	103	पहले (जब) हम साथ थे
पंचवर्षीय योजना	87	104	पंच वर्षीय योजना
का सेनो: सेनो: मोनिञ	88	105	जाने का मन नहीं करता है

क्रम

प्रस्तावना (क)

भूमिका (ग)

उदय

गीत	संख्या	पृष्ठ	हिन्दी
आमलेका डिण्डा तिञ रे	1	1	जब मैं तुम्हारी तरह कुंवारी थी
एला रे राजा सोमाए	2	1	आओ ऋतुराज
आमचि डिण्डा सुताम बिण्डा	3	2	सूत की न्योठे वाली
ओते ओतोरोङ	4	3	ओतोरोङ् की लता
लागे प्रभु दागे गामालेम	5	3	प्रभु, पानी बरसा दो
दोलाङ युग कवि हातु दिसुम	6	4	कवि, चलो देहातों की ओर चलें
एलारे सुगाड़ाञ सामपोड़ो लेमा	7	5	आओ, प्रिय तुम्हारा सिंगार कर लूं
भोट काजि बोले छोट जाना	8	6	भोट की बात जोरों से उठी
बागे बागेबु काजि केना	9	7	फूलों के त्योहार की ही हम.....
ने कालोम आञा: रासिका	10	8	इस वर्ष की मेरी उमंग
आञ गेगो साला जोमा	11	8	मैं स्वंय ही चुन लूंगा
काजि तेगे बोलेम आटाकोआ	12	9	तुम बातों से ही फंसा लेती हो
कुहे-कुहे चेड़ेम रागे बेड़ाए	13	10	पंछी, तुम कुहू-कुहू अलापती.....

काशीनाथ सिंह काण्डे

आपे आले प्रेमबु तोलेआ	14	13	(आओ) हम तुम प्रीत जोड़ें
सोमाए, बा लेकाम आला लेना	15	13	जवानी, तुम फूल-सी खिली थी
आएआ: नाङगेन जी गे लो ताना	16	14	उसके लिए जी जल रहा है
कामि पाइटि आलाङ तायोम जाना	17	15	काम में हम ही पीछे पड़ गये
आञ होनाङ चाण्डु: रे दो.....	18	15	यदि में चाँद होता.....
जोआर जागार काबु रिपिड़िङा	19	16	सलाम-जुहार करना नहीं भूलेंगे

गीत	संख्या	पृष्ठ	हिन्दी
बुदुबाबु			
आहो गुरू आबा सिबो बोंगा	44	41	हे गुरू पिता, शिव देवता
आगो दुति, पोचो जाना सुडगुति	45	42	दुती, हमारा प्रेम ढह गया
रूतु तेदो आमगे नुतुमतान	46	42	बाँसुरी से तुम्हें ही बुलाता है
आगो दुति सेनोगाबु दोला	47	43	दूती, चलो हम चलें
रास नीला	48	44	रास लीला
भैयाराम			
गाँधी	49	47	गाँधी
कुंजलसाय मिरू			
कालि जूगु तेबा: लेना	50	63	कलियुग आया
एओनो: पे	51	64	जागो
सोमाए सेनो: ताना	52	65	समय जा रहा है
ओ विधि	53	66	हाय बिधि
सेंगेल लेकाम जुलेताना बोले	54	67	तुम आग की तरह जल रही हो
रूतु-बानाम	55	68	बाँसुरी-बनम्
सुमदि किङ	56	70	दो समधि
राम			
सिंगि लेका सिरिमारे जुलेतान प्रभु	57	75	आसमान के सूर्य-से ज्योतिर्मय प्रभु
आलाङ दिसुम रेलाङ हारा माता लेना	58	76	हम धरती पर बढ़े, बड़े हुए
बाले:बाले: रेलाङ सोंगोति गातिञ	59	76	बचपन के हम संगी हैं
एंगाञ आपुञ दुलाड़ा रे	60	77	(जब) मां बाप का प्यार था
डिण्डा सोमाए ताइकेना	61	78	कुंवारापन का समय था
जारगि दा:	62	78	बरसात
इसु दुकु सुकु तेबु तेबा: नाम तादा	63	79	अनेक दु:ख सुख के बाद पहुँचे हैं
हेनदे होड़ोमो जिलिब लेकान....	64	80	काली चमकीली कोयली पंछी

गीत	संख्या	पृष्ठ	हिन्दी
सहदेव			
सोमाए कोरेञ नामेआ	89	109	समय फिर कहाँ पाऊँगा
मोयोद तुका रेबु जोनोम लेना	90	109	हम एक घोंसले में पैदा हुए
सिङ बोंगा उकुआकाना जीरे	91	110	भगवान (तुम्हारे) मन में छिपा है
बा दोरे लेले नांगेन	92	111	फूल तो (केवल) देखने के लिये है
उरूमेमे एना गोनोए: होरा	93	111	पहचानो वही मरण की राह है
बाले: बा चाण्डु: दो मुलु: लेना	94	112	सरहुल का नया चाँद उग आया
बाले: दारू सुड़ा रे तोआउ चेड़ें	95	113	वृक्षों की कोपलों पर कोयल पंछी
आतु ताना ने डिण्डा सोमाए	96	113	ढह रहा है कुंवारा समय
आबु गेआ हागा होन	97	114	हमही भाई बंधु हैं
सेनेआबु पानति पानति	98	115	चलेंगे हम पांति पांति
भोगोमान ओमा लेमे निराल रासिका	99	115	भगवान, हम में उमंग भर दो
आहो ताबु काबु हेपेनदोआ	100	116	भाइयो, हम घृणा न करें
सागू			
जीउ मार लेल जोम मे	101	119	रे मन, पहचान लो
सोमाए ताञ निरेतान	102	119	मन समय निकला जा रहा है
बिरसा सिंगि लेकाहोम तुरेलेना	103	120	बिरसा, तुम सूर्य की तरह उगे
प्रेम दारू दो लिदि लिदि	104	122	प्रेम का वृक्ष लहलहा रहा है
तिसिङ गातिङ काम हेता रूड़ाञ	105	123	आज तो तुम हमारी ओर नहीं.....
लेल जोम में होरा	106	123	राह पहचान लो
ने सोमाए दो गातिङ काम नामेआ	107	124	प्रिय, यह समय फिर नहीं पाओग
बा लेकाम लेलो: ताना	108	125	तुम फूल-से लगते हो

उदय
पिड़िहातु

(1)

आमलेका डिंडा तिञ रे	जब मैं तुम्हारी तरह कुंवारी थी
आमलेका डिंडा तिञ रे	तुम सी जब मैं कुंवारी थी
आमलेका डाङगुआ तिञ रे	तुम सी जब जवान थी
निमताङ दो बा सुबा रिङा	इस समय तो मैं फूलों की छाया में थी
निदा सिंगि बा गेञ गुतुकेना	दिन रात फूल पिरोती थी
आका माका दिले दोङगोब	फूलों के झूलते झूबरों से
सुपिद बाते बिउर लेना	खोंपा मेरा भरा था
डाड़ि दा: रेञ लेपेल उमबुल केना	डाड़ी घाट में अपनी छाया देखती थी
साला सालाते बाञ गुतुकेना	चुन-चुनकर फूल पिरोती थी
सुकु रासिका पारिड़ि लेना	सुख और उमंग भरे थे
पाड़िआ पाचोन ओटाङ लेना	पाड़िया पाचोन उड़ा था
बोओ: चेतान सुनुम लिंगि लेना	सिर पर तेल बहा था
नाकि: सुपिद गेगोञ धांदा केना	कंघी करना, खोंपा बनाना ही मेरा धंधा था
गोले केनाञ दुराङ केना	शिशकारी और गीत गाई थी
लानदा केनाञ जागार केना	हंसी थी बोली थी
सोंगे कोलो: धुनिञ उड़ाओ केना	दोस्तों के साथ गप्पें उड़ाई थी
सुसुन काराम गेगोञ धांदा केना	नाचना गाना ही मेरा धंधा था

(2)

एला रे राजा सोमाए	आओ ऋतुराज
एला रे राजा सोमाए	आओ ऋतु राज
नावा जीदान आगु केतेम हिजु: लेना	तुम नव जीवन लेकर आये
दुनिआ कोना कोना रे	धरती के अंग-अंग पर
नावा सुड़ा साड़ी बोलेम दालोब केदा	तुमने नयी साड़ी पहनाई

बिरेम मेने बोले साके गुटु को	जंगल कहे या झाड़ियां कहे
हरियाली साड़ी सुड़ाम गुगुला केदा	कोपलों की हरी साड़ी तुमने डाल दी
फुलवारी आमबराए बागाइचा को	फुलवारी और आम के बगीचों में
आलाकान बा मालाम हिसिर केदा	फूलों की माला तुमने सजाए
आमागा: हिनिजु: रासिका ते	तुम्हारे आगमन की खुशी में
दुनिया जीदान कुड़ाम रासिकाताना	दुनिया हृदय से खुश है
हाड़ामो: तान भोगोमाना: नीला नाओआ	बूढ़े भगवान की यह लीला
छाटिआ कालासरेम राकाब ताना	तुम सब कुछ नये में परिवर्तित हो रहा है

(3)

आमचि डिंडा सुताम बिंडा — सूत की न्योठे वाली

आमचि डिंडा सुताम बिंडा	सूत की न्योठे वाली
आमचि डिंडा इआमा	युवती, क्या तुम रो रही हो
आमचि गाले रुतु बाले हाले	बाँस की बाँसुरी वाले
आमचि गाले साएआदा	युवक, क्या तुम ही अफसोस कर रहे हो
सुताम बिंडा आमे नेंडा मेंडा डिंडा	न्योठे वाली, तुम किस भूल भुलैया में पड़कर
आमचि डिंडा हिआतिङ	कुंवारी, रो रही हो
बाले रुतु आमे डाले काले हाले	बाँसुरी वाले, तुम किस दुविधा में पड़े हो
आमचि गाले साएआदा	युवक, क्या तुम ही अफसोस कर रहे हो
सुताम बिंडा कोरेम बेंडाओ केदा डिंडा	सूत का न्योठा तुमने कहाँ खो दिया
आमचि डिंडा हिआतिङ	युवती, रो रही हो
बाले रुतु कोरेम आतु केदा हाले	बाँसुरी तुमने कहाँ बहा दी
आमचि गाले साएआदा	युवक, क्या तुम अफसोस कर रहे हो।

(4)

ओते ओतोरोङ ओतोरोङ की लता

ओते ओते ना माइ — लड़की, जमीन लिपटी हुई
ओते ओते ओतोरोङ — यह ओतोरोङ की लता है
सिरमा सिरमा ना माइ — लड़की, आसमान में फैली हुई
सिरमा जाल कुनदुरु — यह कुंदरु का जाल है

ओतोङ ताम गेआए: ना माइ — लड़की, कहीं यह तुम्हारा पीछा न करे
ओते ओते ओतोरोङ — यह ओतोरोङ की लता है
जारताम गेआए: ना माइ — लड़की, कहीं यह तुम्हारे पीछे न पड़ जाय
सिरमा जाल कुंदरु — यह कुंदरु का जाल है

गितिल सेके सेके ना माइ — लड़की, देखना, किसी मरुभूमि की ओर
आदेरताम गेआए: ना माइ — तुम्हें न ले जाए
साड़ागिरे रोलो रोलो ना माइ — लड़की, बचना किसी पानी प्रपात में
बुआलताम गेआए: ना माइ — तुम्हें न बहा दे।

(5)

लागे प्रभु दागे गामालेम प्रभु, पानी बरसा दो

आसाड़ साओआन रे — आषाढ़ सावन के महीने में
आड़ि चिमिरे दागे बानो: — खेतों में पानी नहीं है
रोआ काड़ाए कामि आकाम जान — रोपनी निकौनी सब कुछ रुका है
भोगोमान, लागे प्रभु दागे गामालेम — भगवान पानी बरसा दो

ताला जारगि रे दागे बानो: — वर्षा काल के बीच पानी नहीं है
भादोर रे धरती रोओड़ोजान — भादो में धरती सूखी पड़ी है
जीर ओते रे दुड़ा ओटाङजान — दल दल जामीन में धूल उड़ रही है
भोगोमान, नेआ दासारे चिमिनेम दोआ काले — भगवान, ऐसे ही हमें कब तक रखोगे

इसु दिनातेम बागे केदले	(लगता है) हमें तुम बहुत दिन से भूल गये हो
कोकोनो काम पिचा केदले	कभी भी सुधि नहीं ली
जारगि दा:रेम जेटे सिंगि केद	वर्षाकाल में ग्रीष्म ला रहे हो
भोगोमान, लगे प्रभु हेता रुड़ालेम	प्रभु, हम पर दया दृष्टि करो
ओ विधिम चिका केदले	विधि, तुमने क्या कर दिया
दुनिआरेम दुकु केदले	दुनिया में केवल दु:ख ही मिला
जीनिद रे आपासुलो: चिलकाले हारे निरे	(ऐसे में) यह जीवन कब तक चलेगा
भोगोमान, जेताम चिकाले आमगे इतुआन	भगवान जो भी करो, तुम ही जानते हो

(6)

दोलाङ युग कवि हातु दिसुम — कवि, चलो देहातों की ओर चले

टाट-बाट-घाट को बागे केते	हम ठाठ बाट छोड़कर
दोलाङ जूगु कवि हातु दिसुम	युग कवि, चलो गाँव को चलेंगे
नाओआ बोरोन रा: भोगोमान: नीला	भगवान की लीला, (वहाँ की) नयी छटा
लेलाउआलाङ रवि किसिम किसिम	रवि, हम किस्म-किस्म का सौन्दर्य देंखे
भोगोमान: आसीरबादे: नामाकादा	भगवान का आशीर्वाद जो पाया है
दोलाङ जूगु कवि हातु दिसुम	कवि, चलो हम (उस) गाँव की ओर चलें
सुगाड़ा सोरोगोरा: डेरा टाएआद	सुन्दर, स्वर्ग का वास स्थान
दोलाङ जूगु रवि किसिम किसिम	रवि, हम किस्म-किस्म का सौन्दर्य देखें
दोलाङ जूगु कवि हातु दिसुम	कवि, चलो हम (उस) गाँव को चलेंगे
इमान मेहनाति: डेरा तादा	(जहाँ) ईमान और मेहनत वास करते हैं
दोलाङ जूगु रवि किसिम किसिम	रवि, हम हर किस्म का सौन्दर्य देंखे
सारते सुकु बोले: बासातादा	(जहाँ) सत्य और सुख का निवास है
सोबेन किसिम एनलेकाते जीताञ दाउड़ितान	जिधर से भी सोचता हूँ वहीं जी दौड़ता है
दोलाङ जूगु कवि हातु दिसुम	कवि, चलो हम गाँव की ओर चलेंगे
हतु दिसुम बागे केते नागर को ताइनो:	गाँव छोड़ इन नगरों में रहना
ना: दो जूगु रवि जी गे ताञ बानो:	रवि, मेरे मन में नहीं है

(7)

एलारे सुगाड़ाञ सामपोड़ो लेमा

आओ, प्रिय, तुम्हारा सिंगार कर लूं

दिसुम सेवा को सेनो: ताना — देश की रक्षा को वे चल रहे हैं
एला रे गातिञ रेञ सिंगार लेमा — प्रिय, आओ, तुम्हें सजा लूँ
गामाए सुसार को बिरिद ताना — देश की सेवा में वे निकल रहे हैं
एला रे सांगाञ रेञ सामपोड़ो लेमा — प्रिय, आओ, तुम्हारा सिंगार कर लूँ

एला रे गातिञ रेञ सिंगार लेमा — आओ, मैं तुम्हारा सिंगार कर लूँ
आइदि बुइदि तेञ सिंगार लेमा — अपनी बुद्धि भर सिंगार कर लूँ
एला रे सांगाञ रेञ सामपोड़ो लेमा — आओ, मैं तुम्हें सजा लूँ
गुने गेआने तेञ सामपोड़ो लेमा — अपने गुण और ज्ञान से सजा लूँ

आइदि बुइदि तेञ सिंगार लेमा — अपनी बुद्धि भर सिंगार कर लूँ
आदाकान दिसुम राटिम आगुइ लेका — खोया हुआ देश भी फिर से पा सको
गुने गेआनेतेञ सामपोड़ो लेमा — अपने गुण और ज्ञान से तुम्हें सजा लूँ
दानासि बिरि राटिम तोपाडे लेका — बेड़ी के बन्धन भी (तुम सहज ही) तोड़ सको

आदाकान दिसुम राटिम आगुइलेका — खोया हुआ देश भी फिर से पा सको
दुसुमान जी ताको एकेलाओ: लेका — दुश्मन का मन (तुम्हें देख) काँप जाए
दानासि बिरि राटिम तोपाडे लेका — बेड़ी के बन्धन भी (तुम सहज ही) तोड़ सको
बाइरि देआ तेको उसारो: लेका — बैरी पीठ पीछे भाग जाए

दुसुमान जी ताको एकेलाओ: लेका — दुश्मन का मन (तुम्हें देख) काँप जाए
गोटा दिसुम आमा: काटोरे सोमबोदो: लेका — सारा देश तुम्हारा चरण छुए
बाइरि देआ तेको उसारो: लेका — बैरी पीठ पीछे भाग जाए
गोटा गामाए आयार रे तीको जोड़ाओए लेका — सारा देश तुम्हारे आगे हाथ जोड़े

(8)

भोट काजि बोले छोट जाना

भोट काजि बोले छोटो जाना
हातु-हातु बोले हिल हिलाओजाना
छांटे काजि बोले आँटे जाना
कोना-कोना बोले धूम-धाक जाना

निदा सिंगि सभा आर प्राचार केते
सोबेन कोआ: जीउ दोको चाकाराओ जादा
जाति पाति पाटा-पाटी बुपुजाओ काजिते
आपान अधिकारबु डुबाओ जादा

डोंडो लोभ हागा होनको
भोट बाकासाबु जोआर ताना
बहकाओ जाँएआ: डारुआओ कोते
आपान भोट जाँए गेबु ओमाको ताना

कुमुतेओ जेता नेता काए: तेबाए: टायांद
तेबा: केते हागा जाति को काजिन ताना
एटा: पाटी कोआ: हो को उकुता ताना
आबु बुगिनोगा: हो को कारार तानां

भोट की बात ज़ोरों से उठी

भोट की बात ज़ोरों से उठी
गाँव-गाँव इसी की चर्चा चली है
चुनाव की बात ज़ोरों से उड़ी
कोने-कोने में इसी की धाक जमी है

दिन रात सभाओं और प्रचार से
सबके सिर चकरा रहे हैं
जाति पांति की उलझी बातों से
हम अपना अधिकार खो रहे हैं

हम मूर्ख और लोभी लोग
भोट के बक्से को नमस्कार करते हैं
किसी की धमकी और बहकावे में आकर
अपना भोट किसी को दे देते हैं

स्वप्न में भी जहाँ ये (नेता) नहीं आये
(अभी) आकर मित्र बंधु गिना रहे हैं
(ये) दूसरों की आलोचना करते फिरते हैं
हमारी भलाई की ही करार करते हैं

(9)

बागे बागेबु काजि केना

फूलों के त्योहार की ही हम बात करते थे

बागे बागेबु काजि केना
बादो गुलिनिचा तेबा: लेना
डालिगे डालिगेबु चारेचा केना
डालि दो गोंगोर सालु सेटेर लेना

फूलों के त्योहार की ही हम बात करते थे
गुलिनिचा वही फूलों का त्योहार आया है
फूलों की डाली की ही चर्चा करत थे
फूलों की डाल, सुग्गे, पहुँचा है

रूड़ा सिरमाते बोले दुडुमाकान जी
एओन बिरिद नांगेनेम हिआकाना
उजाड़ा मानोवा जीउ कोरे एटा: सोमते
हारिआतिङ ओजो: तुकाम सेटेराकाना

साल भरसे सोए हुए (हमारे) मन को
आज तुम जगाने आए हो
मनुष्य के उजड़े हुए मन में फिर से
आज तुम हरियाली बसाने आए हो

बारो बोछोर रेआ: रेंगे: उडु: दुकु को
मेटाओ ते निसान लेकाम हिजु: लेना
हिपिसिंगा जीउ कोरे प्रेम जोड़ाओ तेआ:
नावा काजि आगु केतेम सेटेर लेना

बारह वर्ष की भूख प्यास विपत्ति
मिटाने के लिए तुम आए हो
राग द्वेष भरे मन में प्रेम जोड़ने की
नयी बात लेकर तुम आए हो

गोसो मोरोसो जीउ को रासिका नातेन
निराल होरा बोलेम उदुब केदा
कामि पाइंटि पेड़े: सेंड़ा आयारो: तेआ
होरा ताले बोलेम पाएलाद लेआ

मुरझे हुए मन में उमंग भरने की
तुमने अच्छी राह दिखायी
काम उद्यम में नया उत्साह भरने को
तुमने एक अच्छा रास्ता बताया

आरजि तानाए: बोले ने फारचि पोरबो
ओकोए चि नुबा: जीउ रे: मारसाल केदबुआ
पोरबो मानातिङ तानलो: तेबु उरुमेन काबु
नेकान दासातेबु राकाब काब

यह पुण्य वर्ष हम से अर्ज करता है
जिसने अंधकार मन में प्रकाश फैलाया
इस वर्ष पूजन में हम स्वयं को पहचानें
इस गिरी हालत से हम ऊपर आएं

(10)

ने कालोम आञा: रासिका इस वर्ष की मेरी उमंग

ने कालोम आञा: रासिका इस वर्ष मेरी उमंग ने
आञगे गोए: सादाओ कि:ञा मुझे ही तबाह किया
ने कालोम आञा: छाएला इस साल मेरे उत्साह ने
आञगे गोए: बालाए कि:ञा मुझे ही परेशान किया

आञगे गोए: सादाओ कि:ञा इसने मुझे ही तबाह किया
हातु हातुइ: इदि बेड़ा कि:ञा गाँव-गाँव में लेते फिरा
आञगे गोए: बालाए कि:ञा इसने मुझे ही परेशान किया
टोला टोलाए: सुतु: बेड़ाञा टोले टोले में साथ करते फिरा

हातु हातुइ: इदि बेड़ाञा गाँव गाँव में लेते फिरा
चिलकातेञ कोटा गिड़िआ इसे मैं कैसे छोड़ूं
टोला टोलाए: सुतु बेड़ाञा टोले टोले में साथ करते फिरा
चिलकातेञ हिचि राड़ाइआ इसे मैं कैसे टालूँ

(11)

आञगे गो साला जोमा मैं स्वयं ही चुन लूँगा

केरकेटा दुतामो काञा: केरकेटा के खोज देने पर भी नहीं
डिंचुआ: दाराड़ाओ काञा: ढिंचुआ के ढूँढ़ लाने पर भी नहीं
आञगे गो साला जोमा मैं ही स्वयं खोज लूँगा
आञगे गो पिति जोमा मैं ही स्वयं चुन लूंगा

बुरु आखाड़ा रे बुलि बुलि बुरु अखाड़ों में जम जमकर
राकाबतान को एकाल आपार आ रही हैं एक से एक बढ़कर
जितिआ जातारा रे बोरनो बोरनो जितिया जतराओं में रंग बिरंग
नुपार तानाको साटोब साटोब उठ रही है मिल मिल बन ठनकर

आञगे गो साला जोमा मैं ही स्वयं खोज लूँगा
लाइकि जाति रेगेञ साला जोमा अपनी ही जाति में खोज लूँगा
आञ गे गो पिति जोमा मैं ही स्वयं चुन लूँगा
सुपाट सामानेरेञ साला जोमा अपनी ही बराबरी में खोज लूँगा

(12)

काजि तेगे बोलेम आटा कोआ	तुम बातों से ही फंसा लेती हो
काजितम गुलिनिचा जाटाङ जुड़ा:	तुम्हारे बखान गुदगुदी भरे होते हैं
काजि तेगे बोलेम आटा कोआ	बखानों में ही तुम लोगों को भुला लेती हो
बाकाड़ां ताम गोंगोर सालु गिसिर गामाङ	प्रिय, तुम्हारी बातें लस-लस लगती हैं
बाकाड़ां तेगे बोलेम गोलाङ कोआ	बातों से ही तुम लोगों को फंसा लेती हो
काजि तेगे बोलेम आटा कोआ	बातों से ही लोगों को तुम फंसा लेती हो
जीरे सीरे रेम आटा कोआ	मन के नश नश में बाँध देती हो
बाकाड़ां तेगे बोलेम गोलाङ कोआ	बखानों से ही तुम लोगों को भुला लेती हो
ऊर रे ऊबे रेम गोलाङ कोआ	शरीर का अंग अंग वश में कर लेती हो
जीरे-सीरे रेम आटा कोआ	मन के नश नश को बाँध देती हो
सोबो दिने बोलेम आटा कोआ	सब दिन बाँधा करती हो
ऊर रे उबे रेम गोलाङ कोआ	शरीर का अंग अंग वश में कर लेती हो
बारो मास बोलेम गोलाङ कोआ	बारहो मास भुलाया करती हो

(13)

कुहे कुहे चेड़ेंम रागे बेड़ाए

पंछी, तुम कुहू-कुहू अलापती चलती हो

हेनदे होड़ेमो जिलिब लेकान तोआउ चेंड़े
दारू-दारु चेड़ेम दाड़ां बेड़ाए
नावा सुड़ा दाड़ा जुमबाड़ा बितार
कुहे-कुहे चेंड़ेम रागे बेड़ाए

काली चमकीली कोयल पंछी
पंछी, तुम वृक्ष-वृक्ष खोजती चलती हो
नयी कोपलों वाली डाल के भीतर से
पंछी तुम कुहू-कुहू अलापती चलती हो

जुड़ि चि रे बांगाइःआ
दारु-दारु चेंड़ेम दाड़ां बेड़ाए
जोता चि रे बांगाइःआ
कुहे-कुहे चेंड़ेम रागे बेड़ाए

क्या तुम्हारी जोड़ी नहीं है?
(कि) वृक्ष-वृक्ष खोजती चलती हो
क्या तुम्हारा संगी नहीं है
तुम कुहू-कुहू अलापती चलती हो

दारु-दारु चेंड़ेम दाड़ां बेड़ाए
आञ लेका गेचि चेंड़ेम उडुः ताना
कुहे-कुहे चेंड़ेम रागे बेड़ाए
आञ लेका गेचि चेंड़ेम दुखाइ ताना

इस गाछ से उस गाछ में खोजती चलती हो
क्या हमारी ही तरह तुम भी चिंतित हो
कुहू-कुहू अलापती चलती हो
क्या हमारी ही तरह तुम भी दुखी हो

काशीनाथ सिंह काण्डे

जोजोहातु

[illegible]

(14)

आपे आले प्रेम बु तोलेआ (आओ) हम तुम प्रीत जोड़ें

ने दिसुम ताला रे इसी धरती पर
जोनोमाकानाबु भाई हम लोग जन्मे हैं
ए भाई सोंगेको ऐ मित्र बन्धुओ
एला भाई सोंगेको ऐ दोस्त भाइयों
आपे आले प्रेम बु तोलेआ आओ, हम तुम प्रीत जोड़ें

आयार तायोम जेताए बांगाइः आगे पीछे कोई नहीं हैं
आबु गेआ कुटुम कुपुल हम ही कुटुम्ब परिवार हैं
ए भाई सोंगेको ऐ मित्र बंधुओं
एला भाई सोंगेको ऐ दोस्त भाइयो
होटोः रे बिरबा मालाबु बादालाए हम तुम गले का वनफूल माला बदलें

बुरु पीड़ि पीटि पीड़ि मेले में, बाजार में
जागाराबु जोआराबु हँसेंगे, बोलेंगे
ए भाई सोंगेको ऐ मित्र बन्धुओं
एला भाई सोंगेको ऐ दोस्त भाइयों
दुकु सुकु सोबेन बु उपुदुबा दुःख सुख का हाल आपस में पूछें

(15)

सोमाए, बा लेकाम आला लेना जवानी, तुम फूल-सी खिली थी

सोमाए, बा लेकाम आला लेना जवानी, तुम फूल-सी खिली थी
ने सोमाए रे बानोः रेंगेः उडुः रे (तब) भूख प्यास नहीं थी, चिन्ता नहीं थी
सोमाए, बा लेकाम आला लेना जवानी, तुम फूल-सी खिली थी

धुती साड़ी ओटाङ लेना धोती फहरी थी, साड़ी उड़ी थी
बोओः चेतान बा बिउर लेना माथे पर फूल सजे थे
सोमाए, बालेकाम आला लेना जवानी, तुम फूल-सी खिली थी
निदा सिंगि सुसुनेम हिआतिङ रे दिन रात तुम्हें नाच की चिन्ता थी
सोमाए, बालेकाम आला लेना जवानी, तुम फूल-सी खिली थी

बुरु आखाड़ा पीटि पीड़ि	मेले, अखाड़े, हाटबाजार में
आमा: गेआ रावा दावा	तुम्हारा ही रावा दावा था
सोमाए, बा लेकाम आला लेना	जवानी, तुम फूल-सी खिली थी
निदा सिंगि आमा: मोनेम होनोर बेड़ा रे	अपनी इच्छा पर दिन रात घूमती थी
सोमाए, बा लेकाम आला लेना	जवानी, तुम फूल-सी खिली थी

(16)

आएआ: नांगेन जी गे लो ताना — उसके लिये जी जल रहा है

सोंगोती जानाते	दोस्ती होने के बाद
तायोमते पीरिति	प्रेम भी हुआ था
तायोमते काए: लेल इरिन जाना	उसके बाद (जाने क्यों) हमसे छिप ग़यी
आएआ: नांगेन जी गे लो ताना	उसी के लिए जी जल रहा है
डाटा रे: मिसि केना	मिस्सी से उसने दांत रंगे थे
तीरे साकोम चुड़ि	हाथ में सकोम और चूड़ी थी
इनि: लेलते जी ताञ बुलाओ लेना	उसी में मेरा मन रमा था
आएआ: नांगेन जी गें लो ताना	उसी के लिए जी जल रहा है
होटो: रे मुंगा माला	गले में मूंगे की माला थी
रांगा नीले साड़ी	लाल और नीली साड़ी (वह पहनी थी)
इनि: लेलते कुड़ाम रेआड़ा लेना	उसे देख मेरा मन बहला था
आएआ: नांगेन जी गे लो ताना	उसी के लिये जी जल रहा है
होड़ोमोञ जिमा लिआ	मैंने उसे अपना शरीर दे दिया था
काजिञ चाबा लिआ	बातें सब शेष थी
तायोमते काए:गे जापा:न जाना	(किन्तु) बाद में वह फिर मिली नहीं
आएआ: नांगेन जी गे लो ताना	उसी के लिये जी जल रहा है

(17)

कामि पाइंटि आलाङ तायोम जाना — काम में हम ही पीछे पड़ गये

आसाड़ साओआन रे — आषाढ़ सावन का महीना
हेड़ेद तुसाङ सिउ: चालु — निकौनी के लिए है कोड़ने के लिए है
दोती दोलाङ हो गातिञ — चलो प्रिय, हम भी खेत को चलेंगे
सोबेन को उड़ुङ जाना — सब कोई निकल गये
कामि पाइंटि आलाङ तायोम जाना — काम में हम ही पीछे पड़ गये

झाल-झिल सोनो: दुति रे — धोती के झक मक में
लाले-नीले रांगा साड़ी रे — लाल और नीली साड़ी में
ने नाम उदाम सोमाए कालाङ लेल गोदे — उद्यम का समय यूं ही नहीं गवाँऐंगे
कामि पाइंटि रेगे जोम जोपोम — काम करने में ही हमारा पोषण है

काशीनाथे: काजि ताना — काशीनाथ कहते हैं
सोमाए सिंगारेन रे कालाङ बुलाओआ — शृंगार में यह समय नहीं खोऐंगे
मोदे बिता लाइ: सुगाड़ा काए: मानातिङा — बित्ते भर का यह पेट हमारी नहीं सुनेगा
कामि पाइंटि रेगे जोम जोपोम — काम करने में ही हमारा पोषण है

(18)

आञ होनाङ चाण्डु: रेदो आपे होनाङ इपिल रेदो — यदि मैं चाँद होता (और) तुम तारिकाएँ

आञ होनाङ चाण्डु: रेदो — यदि मैं चाँद होता
आपे होनाङ इपिल रेदो — (और) तुम तारिकाएँ
नीले रिमबिल रेबु होनोर बेड़ा होनाङ — नीले गगन में हम मन चाहे घूमते
गोटा निदागोबु लानदा जागर होनाङ — सारी रात हम हँसते बोलते
गोटा निदा गोबु बाराङ बिरिङ — सारी रात हम चमकते दमकते

आञ होनाङ आयरा रेदो — काश, मैं आयरा मछली होता
आपे होनाङ चिरपि रेदो — (और) तुम चिरपी मछली
गाड़ा-गाड़ा तेबु बिआन बोएओन होनाङ — नदी की धारा में हम खेलते मचलते
बानदा पुकुरि रेबु बिजिर बिजिर होनाङ — बांध और पोखर में उछलते तैरते
लोयोङ सोकोड़ा रेबु गेओन गेओन — दोनों और खेतों में दल बाँध चलते

आञ होनाङ माएनो रेदो — जब मैं मैना होता
आपे होनाङ केआद रेदो — (और) तुम सुग्गे
सिरमा रेबु आपिर बेड़ा: होनाङ — ऊपर आसमान में लंबी उड़ान भरते
दारु दारु होबु जारू बेड़ा होनाङ — गाछ वृक्षों में हम उठते बैठते
केरे डोरे होबु जापागार — हम मीठी बातें बोलते

आञ होनाङ राजा रेदो — काश, मैं राजा होता
आपे होनाङ रानी रेदो — (और) तुम रानियाँ
हुड़िङ मोटोर तेबु होनोर बेड़ा: होनाङ — छोटी कार पर हम टहलने निकलते
डोनडो 'काण्डे' दासि जोगाओ ताइ:आ होनाङ — मूर्ख काण्डे को हम नौकर रखते
इतिर चिपुद दो इनि: बु आचु ताइ:आ — उसी से हम अपनी सेवा कराते

(19)

जोआर जागार काबु रिपिड़िङा — सलाम जुहार करना नहीं भूलेंगे

बापारिबु सोंगे जाना — हम यों घुल मिल गये
जी कुड़ाम बादालाओ: लेका — (कि) मन प्राण बदल लें
जीदान बारि काबु बापागेआ — जीवन भर नहीं भूलेंगे
जोआर जागार काबु रिपिड़िङा — सलाम जुहार करना नहीं भूलें

दुकु मेना: सुकु मेना: — (यहाँ) दु:ख है (यहाँ) सुख है
रेंगे: मेना: राबाङ मेना: — भूख भी है जाड़ा भी है
आपे आले सोबेन बु उपुदुबा — हम एक दूसरे का (सुख-दूख) कहें सुनें
जोआर जागार काबु रिपिड़िङा — सलाम जुहार करना नहीं भूलें

आबु गेआ जाति जापा: — हम एक ही जाति के हैं
आबु गेआ कुटुम कुपुल — हम ही कुटुम्ब परिवार हैं
सोबेन कोबु हिरा कोपो:एओगा — एक दूसरे की हम सुधि लें
जोआर जागार काबु रिपिड़िङा — सलाम जुहार करना नहीं भूलें

काशीनाथे: काजि ताना — काशी नाथ कहते हैं
मेद लेपेल मोचा जागार — दृष्टि रखेंगे, हँसेंगे बोलेंग
जीदान बारि बु लेपेल जापागारा — जीवन भर हम हिलमिल रहें
बारसिंङ नांगेन चिआ:म एपेराङा — दो दिन के लिए क्यों झगड़ें

काबु एपेराङा सुगाड़ा काबु सेपेगेदा

काबु एपेराङा सुगाड़ा, काबु सेपेगेदा
मोयोद दिसुम रेबु जोनोमाकाना
काबु एपेराङा सुगाड़ा काबु सेपेगेदा
आपे आले मोसा तेबु माराङाकाना

मोयोद दिसुम रेबु जोनोमाकाना
आबु गेआ रे ताञ हागा होन
आपे आले मोसातेबु माराङाकाना
आबु गेआ रे ताञ कुटुम कुपुल

आबु गेआ रे ताञ हागा होन
नापाम जान रेदो होबु जोपोआर जागार
आबु गेआ रे ताञ कुटुम कुपुल
लान्दा जागाराबु सुसुन काराम

नापाम जान रेदो होबु जोपोआर जागार
दुकु सुकु होबु उपुदुबा
लान्दा जागाराबु सुसुन काराम
आबु आबु रेबु हिरा नापाम

बंधु, हम नहीं लड़ेंगे–झगड़ेंगे

हम नहीं लड़ेंगे, बंधु, नहीं झगड़ेंगे
एक ही धरती में हम तुम जन्मे हैं
हम नहीं लड़ेंगे, बन्धु, नहीं झगड़ेंगे
हम तुम एक साथ बढ़े हैं

एक ही धरती में हम तुम जन्मे हैं
हम ही सब भाई–बंधु हैं
हम तुम एक साथ बढ़े हैं
हम ही कुटुम्ब परिवार हैं

हम ही सब भाई–बन्धु हैं
(जहाँ भी) मिलेंगे, बोलेंगे बतियाएंगे
हम ही कुटुम्ब परिवार हैं
हँसेंगे, बोलेंगे, नाचेंगे, गाएंगे

(जहाँ भी) मिलेंगे बोलेंगे बतियाऐंगे
एक दूसरे का दु:ख–सुख सुनेंगे
हँसेंगे बोलेंगे, नाचेंगे गाएंगे
एक दूसरे की हम सुधि लेंगे

आमा: दोगो छाएला

तुम्हारा रंगीलापन

डाड़ि होरा हाटिआ	डाड़ी के रास्ते
गागारि चाटु दा:म आगु	गागरी भरने जाती हो
आमा: दोगो छाएला	तुम्हारा छैलापन (भी खूब है)
निदा सिंगि आमदोम नाकि: सुपिदा	रात-दिन खोंपा ही बनाती हो
आमा: दोगो छाएला	तुम्हारा छैलापन (भी खूब है)
लुतुर जापा: साए सुनुपिद	कान में सटा तिरछा-सा जूड़ा
चापु केनाम चापु केना	छूती हो, छूती हो
आमा: दोगो छाएला	तुम्हारा छैलापन (भी खूब है)
सुपिद दो बाते बिउराकाना	तुम्हारा खोंपा फूलों से ही भरा है
आमा: दोगो छाएला	तुम्हारा छैलापन (भी खूब है)
सुपिद रे चिरे जी ताम	क्या तुम्हारा मन जुड़े में है,
बा रे चि रासिका	क्या तुम्हारे प्राण फूलों में हैं
आमा: दोगो छाएला	तुम्हारा छैलापन (भी खूब है)
डाड़ि दा: रे आमदोम लेपेल उमबुला	डाड़ी के पानी में अपनी छाया देखती हो
आमा: दोगो छाएला	तुम्हारा छैलापन (भी खूब है)

(22)

कामि इतुनाबु सुगाड़ा उदाम इतुनाबु	**हम काम सीखें, प्रिय, उद्यम सीखें**
कामि इतुनाबु सुगाड़ा उदाम इतुनाबु	हम काम सीखें, प्रिय, उद्यम सीखें
बालेकान डिंडा सोमाए रे काबु बुलाओनाबु	फूल-सी जवानी में स्वयं को न भूलें
जोआर इतुनाबु सुगाड़ा जागार इतुनाबु	मिलना सीखें, हम बोलना सीखें;
मुसिङ दिनबु तेबा: नामे बुड़िआ हाड़ाम	एक दिन हम भी बुढ़ापा प्राप्त करेंगे
बालेकान डिंडा सोमाए रे काबु बुलाओनाबु	फूल-सी जवानी में स्वयं को न भूलें
आङ नाम रेंगे: सुगाड़ा काए: आपानो:आ	यह भूख हमसे संधि नहीं करेगा
मुसिङ दिन बु तेबा: नामे बुड़िआ हाड़ाम	एक दिन हम भी बुढ़ापा प्राप्त करेंगे
हागा होन कुटुम रे एनागे सिबिल	बिरादरी और कुटुम्ब में वही अच्छा है
आङ नाम रेंगे: सुगाड़ा काए: आपानो:आ	यह भूख हमसे संधि नहीं करेगा
मुसिङ दिन का रेदो हाए दानदा-पानदा	एक दिन यह हमें धोखा देगा
हागा होन कुटुम रे एनागे सिबिल	बिरादरी और कुटुम्ब में वही अच्छा है
ओम जोम दो हो का दाड़ि रेओ	खाना पीना दे सकें या नहीं

(23)

चिका लेका पाड़िञ हाला बेना — कैसे ऋण चुकाऊँ

एंगाञ-आपुञ किङ जुड़ि-जुड़ि — मेरे माँ-बाप की जोड़ी
जीओ कुड़ामे बेन आड़ाओ लेदा — तुमने मेरे लिए मन प्राण अड़ा दिए
दुकु दासारे बेन जोगाओ ले दिञा — मुझे दुःख में बचाए रखा
निदा सिंगि गाबेन सादाओ जाना — तुमने रात दिन दुःख सहे

जीओ कुड़ामेबेन आड़ाओ लेदा — तुमने मन प्राण अड़ा दिए
सिपिङ कोयोङ हातार तेबेन मराङ किञा — गोदी में मुझे बड़ा किया
निदा सिंगि गाबेन सादाओ जाना — तुमने रात दिन दुःख सहे
चिका लेका पाड़िञ हालाबेना — यह ऋण कैसे चुका पाऊँगा

सिपिङ कोयोङ हातार तेबेन माराङ किञा — गोदी में मुझे बड़ा किया
डिंडा सोमाए रेबेन आड़ांदि किञा — समय हमारी जोड़ी मिला दी
चिका लेका पाड़िञ हाला बेना — यह ऋण कैसे चुकाऊँगा
निदा सिंगि बोलेञ उडुः ताना — रात दिन यही सोचता हूँ

हाड़ाम जान रेदो गाबेन बुड़िया जान रेदो — तुम जब बूढ़े हो जाओगे; समय ढल जाएगा
गाड़ा दागे दोञ आनुआ बेन गेआ — कच्चा पानी तो अवश्य ही पिलाऊँगा
जिआन जान रेदो गाबेन दुडुम जान रेदो — जब मृत्यु को पाओगे, सो जाओगे
आंड़ेः इलि दोञ दोड़ोमाबेन गेआ — (तुम्हारे नाम) इलि अर्पण करता रहूँगा

दुलाय चन्द्र मुण्डा

बारूडीह

Copyright Material
Blocked

(24)

बुरु दिसुम होड़ोको	पहाड़ के निवासी
आबु दो ताञ हागा को	भाइयों हमलोग
बुरु दिसुम होड़ोको	पहाड़ों के रहने वाले हैं
ओते आड़ि सोबेन दिरि गेआ	यहाँ की धरती पथरीली है
चिलका तेबु आसुलेआ होड़ोमो	हम अपने शरीर को कैसे पालें
सिदा दो ताइकेना ताबु	पहले हमारे पास सबकुछ था
पिड़ि बुरु गोड़ा दारु	मैदान, पहाड़, गाछ-वृक्ष
सिबिल सिबिल जो बु जोम केना	हमने मीठे-मीठे फल खाये
रेंगेः तेताङ काबु उडुः केना	हमें भूख प्यास की चिन्ता नहीं थी
माः केदाबु बिर दारु चिलका	जैसे ही हमने जंगल उजाड़ा
रेगेः जानाबु सोबेन एनका	वैसे ही हम भूख के शिकार हुए
उडुः लेरे इसु माराङ गुना	उसे सोचना ही गुनाह है
मानोवा होन रे काबु लेकाओः लेका	हम मनुष्य में नहीं गिने जा सकते
सेनोः जानाः दो सेनोः जाना	जो गया सो चला गया
काकालाए रे का रुआड़ा	चिल्लाने से नहीं फिरेगा
आयारते आसुलोः राः मुंडि बु दांड़ाएआ	अब हम आगे की ही सी सोचेंगे
मुंडा जाति आबुगे तायोमा काना	हम मुण्डा लोग ही पीछे पड़े हैं
दिसुम कोतेः चुनडुल जादा	देश जिधर इंगित करता है
काटा एनते बु चांडाडेआ	हम उधर ही कदम बढ़ायेंगे
मुंडा हागा बेगा बिरिदाबु	मुण्डा भाइयों, आओ हम जल्दी उठें
तिंगु केटेःनाबु बेगा एला	हम अपने पैरों पर जल्दी खड़े हों

(25)

हातु ताञेम मेनेआ　　मेरा देश कहते हो

हातु ताञेम मेनेआ　　मेरा देश कहते हो
हातु दो ताम आतुताना　　तुम्हारा देश बहा जा रहा है
साबे रुड़ाए में मुंडा बेगा　　मुण्डा तुम इसे जल्दी सम्भालो
हेने: ताम हातु आतु ताना　　देखो तुम्हारा देश बहा जा रहा है

सामुंदार ताला ते　　बीच समुद्र की ओर
हातु मुंडा ताम आतु ताना　　मुण्डा, तुम्हारा देश जा रहा है
राचा: उडुङेमे मुंडा बेगा　　मुण्डा इससे जल्दी खींच निकालो
हेने: ताम हातु आतु ताना　　देखो, तुम्हारा देश बहा जा रहा है

हेता लेमे तायोम सा:　　तुम पीछे की ओर देखो
चिमिन सांगिनेम सेनाकादा　　कितनी दूर चले हो
इलि आरकि रेगेम आतुन ताना　　(अब तक) तुम शराब में ही डुबे हो
पुरना हातु तामेम आतु जादा　　देखो तुम्हारा देश बहा जा रहा है

आयार तायोम उड्डु: लेमे　　आगे पीछे की ओर सोच लो
इलि आरकि होका तामे　　हंड़िया दारू त्याग दो
हातु ताम तिसिङ रूड़ा ताना　　आज ही तुम्हारा देश लौट आयेगा
मुंडा हागा चन्द्र लेलेमे　　भाई, मुण्डा चन्द्र, इसे समझो

(26)

जवाहर लाल　　जवाहरलाल

चेतान लारि गुले गुले　　ऊपरी बादल काला काला है
तिसिं गामाए गापाए: गामाए　　आज बरसेगा, कल बरसेगा
दिसुम होड़ो सोबेन को बोरो ताना　　देश के लोग विचलित हैं
ओको कोरे होबु सुरूना　　हम कहां बचेंगे

सिंगि राटि निदा जाना　　दिन भी रात सा लगता है
गोटा दिसुम नुबा: जाना　　सारा देश अंधकारमय हो गया
सेन होरा को होरा को आद केदा　　राह चलने वाले रास्ता भूल गये
भोगोमान कोरेम चिका केद ले　　भगवान तुमने हमें कहाँ क्या किया

श्री वृंदा सिङ बोंगा	वृन्दावन के श्री कृष्ण (की तरह)
मेनाइ: ताबु जवाहर लाल	(हमारे देश में) जवाहर लाल हैं
बुरु दोंदो केते सुरु बुआ	(वे ही) पर्वत उठाकर हमारी रक्षा करेंगे
हागा को आलोपे हिआतिङ	भाइयो, चिन्ता मत करो
सिंगि लेकाए: तुरे ताना	वह सूर्य की तरह उग रहा है
आबु तालाए: हिआकाना	हमारे बीच आया है
आबु दिसुमे: मारेसालेआ	हमारे देश को प्रकाशित करेगा
आदाकान को होराए: उदुबाकोआ	भूले हुए को राह दिखायेगा
दिसुम कंस मेनाइ: मुदाइ	देश के शत्रु कंस की तरह हैं
भारत दिसुम डुबाओ नांगेन	भारत देश को डुबाने के लिए
जवाहरलाल मेनाइ: श्री कृष्णा	जवाहरलाल श्री कृष्ण की तरह हैं
दिसुम कंस डुबाओ नांगेन	शत्रुओं का नाश करने के लिए

(27)

डिंडा लेका सुकु सोमाए काम लेलेआ

कुंवारापन का सा सुख नहीं देखोगे

काम नामेआ, काम नामेआ	नहीं पाओगे, नहीं पाओगे
एंगा लेका दुलाड़ा	माँ का दुलार
काम नामेआ	(फिर) नहीं पाओगे
काम लेलेआ काम लेलेआ	नहीं देखोगे, नहीं देखोगे
डिंडा लेका सुकु सोमाए	कुंवारे पन का-सा सुख
काम लेलेआ	(फिर) नहीं देखोगे
ओड़ा: जान रे, ओड़ा: जान रे	घर हो जाने पर, घर हो जाने पर
एंगा लेका दुलाड़ा	माँ का प्यार
काम नामेआ	नहीं पाओगे
दुआर जान रे, दुआर जान रे	द्वार हो जाने पर, द्वार हो जाने पर
डिंडा लेका सुकु सोमाए	कुंवारे पर का-सा सुख
काम लेलेआ	नहीं देखोगे

हिआतिङ रेओ, हिआतिङ रेओ	चिन्ता करने पर भी, चिन्ता करने पर भी
एंगा लेका दुलाड़ा काम नामेआ	कुंवारे पन का सा सुख
चाकातिङ रेओ, चाकातिङ रेओ	सोचने पर भी, सोचने पर भी
डिंडा लेका सुकु सोमाए	मां का प्यार नहीं पाओगे
काम लेलेआ	नहीं देखोगे

(28)

गातिञ आमा: जी दो गोसो जानारे

प्रिय तुम्हारा मन मुर्झा गया

बा चांडु: हिजु: लेना	सरहुल का महीना आया
जोतो बा को आला जाना	सभी फूल फूटे
गातिञ आमा: जी ओ आला जाना रे	प्रिय तुम्हारा मन भी खिल उठा
जोतो बाको आला जाना	सभी फूल खिले हैं
लालो-लीलो बा लेलो: ताना	लाल नीला खिले हैं
गातिञ निदा सिंगि बागेम गुतुकेनारे	प्रिय, तुम रात दिन फूल ही पिरोती थी
हेना बा नेआ बा रे	इस फूल से उस फूल पर
आपिर बेड़ा केना रासिकाते	तुम खुशी से उड़ी फिरी थी
गातिञ दुकु लुतुम काम सारि लेदारे	प्रिय, तुम दु:ख का नाम भी नहीं जानती थी
बा चांडु: सेनो: जाना	सरहुल का चाँद चला गया
जोतो बाको गासार जाना	सभी भूल झड़ गये
गातिञ आमा: जी दो गोसो जानारे	प्रिय, तुम्हारा मन भी मुर्झा गया
निदा सिंगिम हिआतिङा	दिन रात तुम चिंतित हो
तायोम सा: गेम हेता होरा	पीछे की ही बात सोचती हो
गातिञ रसिका चन्द्र लेल उरुम के:मारे	प्रिय, रसिक चन्द्र ने तुझे पहचान लिया

(29)

बिरसा भागोआन

हातु तुका रे, मानोवा जाति रे
बिरसा भागोआन एसेकार गे
तुरे लेनाए: नावा चांडु: लेका
नावा दिआ होए: जुंडि केदा

नावा दिआ होए: जुंडि केदा
बिरे बुरु कोरे: दिआ केदा
आदाकान को होराए: उदुबाद कोआ
तेनाकान कोए: दोंदो बिरिद केद कोआ

सारोआदा: रे साआर जाना
डोमबारि बुरु रे गुलि जाना
मुंडा जाति काए: रिड़िङ मेआ
बिरसा काजि रानुआन गेआ

बिरसा भगवान्

गाँव के घोंसले में, मानव जाति में
बिरसा भगवान् एक अकेले
नये चाँद की तरह उगे
नयी ज्योति फैलायी

उसने नयी ज्योति फैलायी
जंगलों पहाड़ों को भी प्रकाशित किया
खोये हुओं को रास्ता दिखाया
गिरे हुओं को ऊपर उठाया

सरवाद: में तीर चला
डुम्बारी में गोली चली
मुण्डा जाति तुम्हें नहीं भूलेगा
बिरसा तुम्हारी बात औषध सी थी

(30)

आम लेल तेञ दांदा गिड़िजाना

आम दो हो राजानि गोंधो
ताला निदाम आलाना
तिकिन सिंगि काना:म हिआतिङा
आम लेलतेञ दांदा गिड़िजाना

हरि तोवा आटाल बा
सिंगि साटुब आला ताना
तिकिन सिंगि काना:म हिआतिङा
आम लेलतेञ दांदा गिड़ि जाना

चांडु: लो:म जुड़िआकान
इपिल कोलो:म पिरितिन
आमा: पुलाइ का हो चाबाकाना
आम लेलतेञ दांदा गिड़ि जान

तुम्हें देख मैं आश्चर्य में पड़ गया

रजनी गंधा, तुम
आधी रात को खिलती हो
दोपहर की तुम क्या सोचती हो
तुम्हें देख मुझे आश्चर्य होता है

हरि दुधिया और चमेली फूल
दिन को ही खिलते हैं
दोपहर को तुम क्या सोचती हो
तुम्हें देख मुझे आश्चर्य होता है

तुमने चाँद के साथ दोस्ती की है
तारों के साथ प्रीति जोड़ी है
तुम्हारा रंगीलापन नहीं गया है
तुम्हें देख मुझे आश्चर्य होता है

(31)

बिपोति रे जेताए बांगाइ:आ विपत्ति में कोई नहीं है

बिपोति रे जेताए बांगाइ विपत्ति में कोई नहीं है
मुकुंद मुरारी बांगाइ मुकुन्द मुरारि नहीं है
ओकोतिआ कहाँ गया
बिपोति रे जेताए बांगाइआ विपत्ति में कोई नहीं है

गोकुल दिसुम डुबा जाना गोकुल देश डूब गया
गोआला सोबेन को डुबा जाना सभी गोप डूब गये
डोंगा बानोगा– नाव नहीं हैं
बिपोति रे जेताए बांगाइआ विपत्ति में कोई नहीं है

आलोपे हिआतिङा इसकी तुम चिन्ता मत करो
एसेकार गेपे हिजु:आकाना तुम अकेले ही आये हो
डोंगा बानोगा नाव नहीं है
विबोति रे जेताए बांगाइआ विपत्ति में कोई नहीं है

(32)

चिलकातेञ पारोमेआ गाड़ा कैसे मैं नदी पार करूं

लातार जारगि जाड़ाम जाड़ाम पूरबी वर्षा झम झम कर रहा है
सिंगि बुड़ाए: गामा केदा दिन भर पानी बरस रहा है
माराङ गाड़ा गाड़ा पेरे:आकाना बड़ी नदी उमड़ आयी है
चिलकातेञ पारोमेआ गाड़ा कैसे मैं नदी पार करूं

होड़ो दोको कामि ताना सभी लोग काम कर रहे हैं
सिंगि साटुब सिगिद लेका दिन भर मेहनत कर रहे हैं
लाइ: नांगेन पीटि होञ सेनकेना मैं पेट के लिये हार गया था
चिलकातेञ पारोमेआ गाड़ा कैसे मैं नदी पार करूं

होन बुड़ि को सामा ताना स्त्री बच्चे भूखे पड़े हैं
कामि उदाम आकाम ताना (मेरा) काम उद्यम भी बन्द है
बुसु: ओड़ा: देराङ जोरो ताना मेरा पुवाल का घर चू रहा होगा
चिलकातेञ पारोमेआ गाड़ा कैसे मैं नदी पर करूं

(33)

तोआउ चेंड़े[1]	कोयल पंछी[1]
दारु जुंबाड़ा रे तोआउ चेंड़े	पेड़ों के झुरमुट में, कोयल पंछी,
रागे ताना चिमे दुराङ ताना	तुम रो रही हो या गा रही हो
दुकु ताना चिमे सुकु ताना	सुखी हो या दुखी हो
आमागा: काकाला दो उड़ु:इ लेका	तुम्हारी आवाज करूण लगती है
का होञ रागे ताना मानोवा होन	मनुष्य, मैं रो नहीं रही हूँ
काहोञ दुकु ताना मानोवा गांड़ां	मनुष्य, मैं दुखी नहीं हूँ
बा चांड़ु: होञ दारोम ताना	मैं सरहुल का स्वागत कर रही हूँ
सुकु रासिकातेञ दुराङ ताना	मैं खुशी से गा रही हूँ
राबाङ तायोमेतेञ हिजुआ काना	जाड़े के बाद आई हूँ
दारु दारु कोरेञ दुबे ताना	(वन के) वृक्षों पर बैठती हूँ
सोबेन दारु कोञ जागाराको ताना	सभी वृक्षों से मैं कहती हूँ
पुरना पांडु साकाम ओचो: तापे	पुरानी पीली पत्तियाँ त्याग दो
पुरना पांडु साकाम ओचो: तापे	पुरानी पत्तियों को छोड़ दो
सिंगि मारेसाल रे लेल उरुमेन पे	दिन के प्रकाश में अपने को पहचानो
नावा सुड़ा साड़ी किचिरिन पे	नये कोपलों का पहिरावा पहिनो
मोगो मोगो सोआन बाते सुपिद बानपे	सुगंधित फूलों से अपना खोंपा भरो
लेल इतुन में मानोवा दारु कोते	मनुष्य, इन पेड़ों से तुम भी कुछ सीखो
जागार इतुन में आञे लो: ते	मेरे साथ बोलना सीखो
दिसुम तालारे दो दुकु आर सुकु	इस धरती पर सुख, दुख (हैं ही)
बालाए तानको बुलाओगेञ हिजु: आकाना	मैं पीड़ितों को शक्ति देने आयी हूँ

(34)

तोआउ चेंड़े[2]

निदा सिंगि चेंड़ेञ लेले मेआ
दुराङ बेड़ा तान गेञ लेले मेआ
आमा: ओड़ा: ताम कोता: रेआ
कोता: कोरे चेंड़ेम गिति:ताना

कामि उदाम कोदो बागे तादा
दुराङ तेगे सोमाए सेनो: ताना
काना: को रासिका चेंड़ेम नामे दुताम
काचि रासिका चेंड़े रेंगे: तेताङ तेमा

जेटे सिंगि काले काले रे
आमागा: दुराङ दो रेआड़ान गे
आमागा: होड़ोमो चिमिन रेआड़ान
एनातेगे रासिका, चेंड़े का रेंगे: तेताङ तेमा

रासिका चन्द्र बोले: गोसोटोङ ताना
आमा: लेकान रेआड़ दुराङे हाएआ ताना
इतु तुकाइ में हो सिबिल जागार
लुतुर किङ बोले: आताङाकादा

कोयल पंछी[2]

पंछी तुझे मैं दिन रात देखता हूँ
तुम्हें उड़ते फिरते ही देखता हूँ
तुम्हारा घर कहाँ है
तुम कहाँ सोती हो

तुमने काम उद्यम करना छोड़ दिया है
गीतों में ही समय जा रहा है
रसिका पंछी, तुम क्या खोजती फिरती हो
पंछी, क्या तुम्हें भूख प्यास नहीं है

ग्रीष्म की कड़ी धूप में
तुम्हारा गीत ठण्डा लगता है
तुम्हारा शरीर कितना ठण्डा होगा
तभी तो तुम्हें भूख प्यास नहीं लगती है

रसिक ''चन्द्र'' तुमसे आग्रह करता है
तुम्हारी तरह गीत गाना चाहता है
तुम उसे मीठी बोली सिखा दो
उसने दोनों कान खोल रखे हैं

(35)

बा चांडु:[1]

सोना लेकान बा चांडु: दोए: हिजु:आकाना
राजा-रानी लेकाए: सामपोड़ोआकाना
मुसिङ मोसातेबु सुसार लिआ
सुकु रासिका तेबु दारोम लिआ

नेगे कोरे ताबु माराङ नेग
नीगे बा जो कोए: ओमाबु ताना
मुसिङ मोसातेबु सुसार लिआ
सुकु रासिका तेबु दारोम लिआ

सरहुल का चाँद[1]

सोने की तरह सरहुल का महीना आया है
राजा रानी की तरह सज-धज कर आया है
एक दिन एक साथ इसे हम मनायें
सुख और उमंग से इसका स्वागत करें

त्योहारों में यह सबसे बड़ा है
यही हमें फूल फल देता है
एक दिन एक साथ इससे हम मनाएं
सुख और उमंग से इसका स्वागत करें

सांगि साला तेबु नेंडाएका	सब मिल कर हम दिन निश्चित करेंगे
लेलमुलु: मोड़ेमा रेबु नेंडाएका	पंचमी का ही दिन इसके लिए ठहरायेंगे
सालिन सालिन ने दिने मुंडि रे	सालाना सालाना इसी दिन
सोना लेकान बा चांडु: बु सुसारिआ	सोने से सरहुल चांद का स्वागत करेंगे
सोबेन दिने ताबु बुगिन गेआ	सभी दिन अच्छे ही होते हैं
लेलमुलु: मोंड़ेमा बु साकि केआ	पंचमी ही इसके नाम पर रख दिया जाय
रासिका चन्द्र दोए: दुराङ केदा	रसिक चन्द्र (यह सोच सोच) गा उठा है
मुसिङ मोसातेबु रासिकाना	एक दिन एक साथ खुशियाँ मनायेंगे

(36)

बा चांडु:^{2}	**सरहुल का चांद^2**
मा साल बा रेबु काजि कुलादिआ	बीते साल सरहुल में हमने इसे कह भेजा था
ने दिने मेने तेबु मेतादिआ	इसी दिन कह कर हमने भेज दिया था
एन दिन मुंडि रेगे: हिजु:आकाना	उसी दिन वह फिर से आया है
बिरे बुरु कोरे: तेबा: तादा	जंगल और पहाड़ों में पहुँचा है
बिरे बुरु कोरे: तेबा: तादा	जंगलों और पहाड़ों में पहुँचा है
हुरुम सुकु कोलोए: हिजु:आकाना	यह मधु मक्खियों के साथ आया है
हातु तुका रेबु नेओता लिआ	गांव भर का न्योता हमने भेजा था
मुसिङ मोसातेबु सुसुन को:आ	हम एक दिन एक साथ मिलकर नाच लें
नागेरा डुलकि कोबु जुगुतुइआ	हम नगाड़े और ढोल ठीक करें
तोआउ चेंड़े लो: बु सापाकिआ	हम कोयल पंछी के साथ दोस्ती जोड़ें
हुरुम सुकु कोबु सोंगोतिकोआ	मधु मक्खियों के साथ मिताई करेंगे
मुसिं मोसातेबु सुसुन को:आ	एक दिन एक साथ मिल कर नाच लें
सेकेड़ाते सेकेड़ाबु रा: आउइगेआ	जल्द से जल्द उसे हम बुला लाएं
आयारते सेनो: ताएआ: मेना: गेआ	उसे बहुत दूर आगे भी जाना है
छाएला चांदर बोले: आकाबाकाओ आकाना	छैला ''चन्द्र'' अकबका रहा है
जादुर सुसुने: हाएआ ताना	जदुर नाचने को उसका जी चाहता है

(37)

ओको तिआ भाला भला, वह कहाँ चला गया

ओकोतिआ ब्रोजोबाला ब्रज बाल कहाँ चला गया
ओड़ाः बागे केदा घर छोड़ दिया
गोकुल दिसुम सामा गेआ गोकुल देश शून्य हो गया
जोतोएः इदि केदा सबकुछ ले गया
ओको तिआ भाला भला! वह कहाँ चला गया

रुतु ओरोङ ओरोङ तानलोःएः वह बाँसुरी बजाते हुए
सेनोः जाना भाला (किधर) निकल गया
ओको कोरेले नामिआ उसे हम कहाँ पायेंगे
ओकोतिआ भाला कहाँ चला गया

दांड़ां तानाले बिरे बुरु हम उसे खोजते हैं जंगल पहाड़ में
कुदा उमबुल, कोदोम सुबा जामुन की छाया में कदम्ब के तले
जामुना गाड़ा पारोम यमुना के पार
हान दारु सुबा उस गाछ के नीचे
बांगाइआ हो भाला वह (कहीं) नहीं है

मांडि उतुले बागे केदा हमने खाना पीना छोड़ दिया है
इआम धेआन ताना रोते हैं कलपते हैं
ओकोको रे ले नामिआ उसे हम कहाँ पायेंगे
बांगाइआ हो भाला वह यहाँ नहीं है

ओको साःतेः हिजुः लेना किधर से आया
उधो उदुबादलेआ उधव ने हमें बताया
माथुरा रिआ प्रभु गोपाल प्रभु गोपाल मथुरा में है
बुगि तान गेआ अच्छे ही हैं
आलोपे हिआतिङा चिन्ता मत करो

गोसोतान बा रे हो मुर्झाए हुए फूल में
दाःए दुलाद लेआ उसने पानी सींच दिया
रेआड़ान दारु उमबुल ठंडी छांह
होएः उदुबाद लेआ उसने हमें बताई

ओको कोरेले हाकान जाना — हम कहीं फाँसी चढ़ा लेते
ओको कोरेले डोबेन जाना — (या) कहीं डूब मरते
बुगि उधो हिजु: लेना — अच्छा ही हुआ उधव आया
बोतोङ ताद लेआ — हमें चकित किया
जी: ओमाद लेआ — उसने हमें प्राण दान दिये

मेद दा:ते गोकुल दिसुम — (नहीं तो) अश्रु की धारा में
देराङ आतु: तेआ: — गोकुल बह जाता
डोंगाए: आगु केदा — उसने हमें नाव लाकर
सुगाड़ा जी ओमाद लेआ — हमें प्राण दिए हैं

(38)

चिलकाञ रिड़िङि — मैं कैसे बिसारूँ

जेटे सिंगि काले काल — जेठ की कलकल धूप में
हाएरे भाला बालेबाल — भला इस पसीने के समय
दारु उमबुल जी राड़े: नि: — जिसने छाया देकर मन को शान्ति दी
चिलकाञ रिड़िङिआ — उसे मैं कैसे बिसार दूँ

युरोपरा: दुदुगार रे — यूरोप की आंधी में
हीरा नागपुर आतुतान रे — जब हीरा नागपुर बह रहा था
हामबुदकेन बाबा बिरसा — जिसने उसे संभाला उस बिरसा को
चिलकाञ रिड़िङिआ — मैं कैसे बिसार दूँ

गुलाम बायारते ताबु — गुलामी की जंजीर से
तोलेलेन भारत ताबु — बंधी हुई भारत माँ को
राड़ा केन बाबा बापू — जिसने मुक्ति दी उस बापू को
चिलकाञ रिड़िङिआ — मैं कैसे भूल जाऊँ

रासिका चन्द्र काजिताना — रसिका चन्द्र कहता है
जी बाड़े सेनो: का — चाहे प्राण चले जायँ
तोवा लेकान जोनोम दिसुम — दूध-सी इस जन्मभूमि को
चिलकाञ रिड़िङिआ — मैं कैसे भूल जाऊँ

चिनाः आम

चांडुः तेमा चिगो इपिल तेमा
इपिल कोगे मेददोएः लेका ताना
बाको तेमा चिगो अंकाड़ि तेमा
जी आर कुड़ामेताञ राचागाकाना

सुगाड़ा बा तेमा चिगो बालेः सुड़ा तेमा
हुरूम सुकु गेगोञ बाइ जाना

लासा तेमा चिगो लुपुड़ि तेमा
चेंड़े लेका आञ दोञ आटाजाना

बोंगा तेमा चिगो भोगोमान तेमा
निदा सिंगि आम गेञ धेआन ताना
कातु तेमा चिगो बांइटि तेमा
कुड़ाम बितार ईमदो गेदे ताना

तुम क्या हो

तुम चाँद हो या तारा हो
(कि) तुम्हारी ही ओर मेरी नजरें गड़ी हैं
तुम बंसी हो या अंकुश हो
(कि) मेरे मन प्राण तुम्हारी ओर खिंचे हैं

तुम सुन्दर फूल हो या नई कोपल हो
(कि) मैं मधुमक्खी ही बन गया
तुम लासा हो या लुपड़ी हो
कि मैं पंछी की तरह लटक गया

तुम देवी हो या भगवती हो
रात-दिन मैं तुम्हारा ही ध्यान करता हूँ
तुम्हारे हाथ में छुरी है या बैंठी हैं
(कि) मेरा हृदय कटा जा रहा है

बलदेव

किताडीह

(40)

इनुङेञ सेनो:आ दादा भैया, मैं खेलने जाऊँगा

होड़ो तोपा बाड़े सुबा दादा भैया श्मसान के बट वृक्ष के नीचे
उरि: को गोंटो आकाना दादा बैलों का झुण्ड ठहरा है
जादुर आखाड़ा बाड़े सुबा दादा भैया, जदुर अखाड़े के इमली के नीचे
होनको जामाकाना दादा भैया, लड़के इकट्ठे हुए हैं

उरि: को लिजुम ताना दादा भैया बैल पागुर मार रहे हैं
बुरुम केआतेआ दादा वे छाया में बैठे हैं
रासिकाते काकाला जादा को दादा लड़के खुशी से हल्ला मचा रहे हैं
चुरे इनुङ लो: ते दादा भैया वे चूर खेल रहे हैं

होड़ो तोपा बाड़े सुबा दादा श्मसान के वट वृक्ष की छाया में
उरि: को तेबा: तुकाकोआएआ दादा भैया, (मैं भी) बैलों को पहुँचा दूँगा
जादुर आखाड़ा जोजो सुबा दादा जदुर अखाड़े के इमली के नीचे
इनुङेञ सेनो:आ दादा भैया में (मैं भी) खेलने जाऊँगा

(41)

बापू, का होञ रिड़िङ मेआ बापू तुम्हें मैं नहीं बिसारूँगा

दिसुम रे होम जोनोम लेना तुम (हमारे) देश में जन्मे थे
बोंगा चांडु: लेकाम तुरे लेना देव चन्द्र की तरह उगे थे
आमा: कामि कारेञ रिड़िङेआ तुम्हारे कामों को मैं नहीं भूलूंगा
बापू कारेञ बागेमेआ बापू, तुम्हें मैं नहीं बिसारूँगा

दिसुम रे होम उदुबकेदा देश को तुमने बताया
आहिंसा हो काबु बागेआ अहिंसा नहीं छोड़ेंगे
आमा: दिआ कारेञ एड़ें:एआ तुम्हारा प्रकाश मैं नहीं बुझने दूँगा
बापू कारेञ नुबा:मा बापू, मैं तुम्हारी इज्जत करूँगा

बिलाएत तेहोम सेन केना तुम बिलायत गये थे
रीति रिवाज लेले तेम दानदा जाना रीति रिवाज देखकर आश्यर्च में पड़े
एंगा: काजि कारेम बागे केदा (वहाँ भी) तुम माँ की बात नहीं भूले
बापू कारेञ रिड़िङ मेआ बापू, तुम्हें मैं नहीं भूलूँगा

(42)

सोबेन रे आमगे सर्वत्र तुम ही बिराजते हो

बुरु रे, जोला रे पहाड़ में, पर्वत में
गाड़ा रे, बेड़ा रे नदी (और) घाटी में
निदा रे, नुबा: रे रात की अंधियारी में
ओड़ा: रे, दुआर रे घर में, बाहर में
आमगे मेना: मेआ तुम ही बिराजते हो

आङो: रे, तुरो: रे उषा की ललिमा में
सेन रे, होरा रे रास्ता चलने में
तोद रे, तुगुड़ि रे ठेस में, ठोकर में
कामि रे, उदाम रे काम और उद्यम में
आमगे मेना: मेआ तुम ही बिराजते हो

सुसुन रे, दुराङ रे नाच और गान में
रुतु रे, बानाम रे बाँसुरी और बनम में
दुकु रे, सुकु रे दु:ख और बिपत्ति में
आमगेआ सोबेन रे सर्वत्र तुम हो
आमगे मेना: मेआ तुम ही बिराजते हो

(43)

ने रिड़ि चिलकाते हालो: (आ) यह ऋण कैसे चुकेगा

लिंडुङ लिंडुङ तेपे माता लिञा तुमने छुटपन से मुझे बड़ा किया
तोवा तेगे बाचाञ माराङ जाना मैं दूध पीकर ही बड़ा हुआ
हुड़िङ हुड़िङ तेपे तिंगु लिञा तुमने मुझे बालपन में खड़ा किया
मांडि तेगे बाचाञ हारा जाना भात खाकर ही मैं बड़ा हुआ

ने तोवा कोरेञ नामे यह दूध मैं कहाँ पाऊँगा
एंगा बागे किआते माँ को छोड़ कर
ने मांडि कोरेञ उदामे यह भात कहाँ मिलेगा
आपु राड़ा किआते बाप को छोड़ कर

ने रिड़ि चिलकाते हालो: यह ऋण कैसे चुकेगा
एंगा बाचारे हो विधाता रानी माता बिधाता की तरह है
मोचाते कागे रूलो: मुंह से शब्द भी व्यक्त नहीं होते
आपु बाचारे विधाता राजा पिता बिधाता स्वरूप है

बुदुबाबू
बछैकुंडी

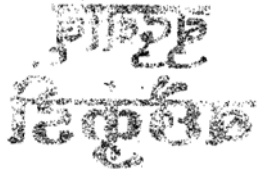

(44)

आहो गुरु आबा सिबो बोंगा हे गुरू पिता, शिव देवता

(पयार)

श्री राम रघुवीर ओड़ो: लोखोन कुऑर
बार हागा बिर हागा बिरकिङ हि:आकाना
सिब बोंगा थापना मेनते
सोड़ोक मुलिते हरे हरे किङ नुतुमताना

(पयार)

श्री राम रघुबीर और लक्ष्मण कुंवार
दोनों भाई वन में आए हैं
शिव की स्थापना करने
सड़क पर चलते हुए 'हरे हरे' कह रहे हैं

(रंग)

बोंगा मुनि वीर को दुबाकान
राम लोखोन सिब किङ सेबा तान
घाड़ि घाड़ि घाड़ि, बो: चेतान मुड़ि
मधु गुड़ को दुले ताना हो
आहो गुरु आबा सिबो बोंगा
मेनते सेबा ताना हो
आहो गुरु आबा सिबो बोंगा

(रंग)

देव, मुनि और वीर सभी बैठे हैं
राम लक्ष्मण शिव की पूजा कर रहे
बार-बार (शिव के) मस्तक पर
मधु गुड़ ढाल रहे हैं
हे गुरु-पिता, शिव देवता
कह कर वे पूजा कर रहे हैं
हे गुरु पिता, शिव देवता

आम प्रभु श्री भोगोमान
आमा: उमबुल ते जी जीदाकान
भुबोनो मोण्डोलो चेतानो पातालो
जोतोको इतुआना हो
आहो गुरु आबा सिबो बोंगा
मेनते सेबाताना हो
आहो गुरु आबा सिबो बोंगा

हे प्रभु, तुम्ही श्री भगवान हो
तुम्हारी ही छाया में, हम पल रहे हैं
भुवन-मण्डल, आकाश पाताल
सब तुम्हें जानते हैं
हे गुरु-पिता, शिव देवता
कहकर वे पूजा कर रहे हैं
हे गुरु पिता, शिव देवता

निआ काजि प्रभुञ विनतितान
आञा: मोनरा: आसा पूरनो ताम
देवी सीता सोती, लंकापुर पति
इदि तिआए: रावन हो
आहो गुरु आबा सिबो बोंगा
मेनते सेबा ताना हो
आहो गुरु आबा सिबो बोंगो

प्रभो, तुम से यही प्रार्थना है
मेरे मन की आशा पूर्ण कर दी
देवी सीता को लंकापुर पति
रावण ने चुरा लिया है
हे गुरु-पिता, शिव देवता
कह कर वे पूजा कर रहे हैं
हे गुरु पिता, शिव देवता

(45)

आगो दुति, पोचो जाना सुंगुति दूती, हमारा प्रेम ढह गया

इआम-इआम काजि ताना रूलाई के स्वर में कह रही है
सोति सिमोती सती श्रीमती
आगो दुति, पोचो जाना सुंगुति दुती, हमारा साथ छूट गया
आगो दुति हे दूती

दुकु-सुकु चाबा जाना सुख-दुख की बातें सब कुछ छूटी
ताइजानाए: सिमोत्ति रह गयी श्रीमती
आगो दुति, आतु जाना पीरिति दूती, हमारी प्रीति बह गयी
आगो दुति हे दूती

चि मेनते चिका जाना क्यों यह क्या हुआ
हांड़ा जानाए भोगोबोति (क्या) भगवती रूठ गई
आगो दुति, बागे किआए: जी हिति प्राण प्रिय हमें छोड़ चले गये
आगो दुति हे दूती

बुदुबाबुइ: काजिताना बुदु बाबू कहते हैं
लालिता सुंगुति सुनो, अरी ललिता
आगो दुति, ओलाकाना ने रीति (यहाँ) यही रीति लिखी है
आगो दुति हे दूती

(46)

रुतु तेदो आमगे नुतुमतान बाँसुरी (के स्वर) से तुम्हें ही बुलाता है

हेनदे-हेनदे: दुतिआना (शरीर से) सांवला, धोती धारी (छोकरा)
उरि: गाइ कोए: गुपि ताना गाय चरा रहा है
बिर बितार जोलारे: दुबाकाना वन के भीतर चट्टान पर बैठा है
रुतु तेदो आमगे: नुतुम ताना बाँसुरी से तुम्हें ही बुलाता है

इचा: बाते: डालिआना (बालों में) इचा फूल पहना हुआ है
सामाड़ोम ते: मालाकाना सोने का हार डाले हुए हैं
सेर मेंड़ेद होड़ोमो जुलेताना गर्म लोहे सा शरीर दमकता है
रुतु तेदो आमगे: नुतुमताना बाँसुरी से तुम्हें ही बुलाता है

पारकातेञ लेल केना — (छिपकर) दूसरे देख लिया हूँ
इनाते राधाञ हि:आकाना — राधा, इसलिए मैं (तुम्हें बुलाने आयी हूँ)
पुरा चांडु: बिरे: तुराकाना — पूर्णमासी का चाँद वन में खिला है
रुतु तेदो आमगे: नुतुमताना — बाँसुरी से तुम्हें ही बुलाता है

बुदु बाबुइ: काजि ताना — बुदु बाबू कहते हैं
नेकान होड़ो काञ लेलान — ऐसा आदमी मैंने नहीं देखा है
सिङ बोंगा चि बोंगाए: दुबा काना — स्वयं भगवान या कोई देवता बैठा है
रुतु तेदो आमगे: नुतुमताना — बाँसुरी से तुम्हें ही बुलाता है

(47)

आगो दुति सेनोगाबु दोला — दूती, चलो हम चलें

ओकोतिआ ब्रोजो बाला — ब्रज-बाल कहाँ चला गया
सुगाड़ा सुनदोर काला — सुन्दर सुधड़ श्यामल
इदि केदाए सोबेन नीला खेला — अपने साथ रास रंग सब कुछ ले गया
आगो दुति, सेनोगाबु दोला — दूती, चलो हम (भी) चलें

आञ दो होञ चिका जाना — (न जाने) मुझे क्या हो गया है
निदा सिंगि नुबा: जाना — (कि) रात और दिन में अन्तर नहीं दीखता है
ति: इदिञ पेरे दुति दोला — दूती, मुझे पकड़ो (और) ले चलो
आगो दुति सेनोगाबु दोला — दूती, चलो हम भी चलें

तिसिङ कापे इदि किञ रे — यदि आज मुझे नहीं ले गये
आञ दो रेञ गोजो:आ — (तो) मैं मर ही जाऊँगी
जी बीतार जुले ताना जाला — हृदय में जल रही है ज्वाला
आगो दुति सेनोगाबु दोला — दूती चलो हम चलें

आञ दोरेञ ठोराना — मैं (इसका रहस्य) जानती हूँ
माथुराते: सेना काना — (कृष्ण) मथुरा गये हैं
बुदुबाबु एनरे: लेललि:आ — बुदु बाबू ने उन्हें वहीं देखा है
आगो दुति सेनोगाबु दोलो — दूती, चलो हम (वहीं) चलें

रास लीला

बिर बितार प्रभु गोपाल
बाइ तादाएः नीला चोमोतकार
जिकि मिकि जुले ताना
राधा विनोनदिनि सोबेन ब्रोजोधोनि
जोतो को हिआ काना हो
एला एला एला एलाबु लेला
दोला दोला दोला दोला हो
सिङ बोंगा बाइतादा नीला हो... एला...

बिङ होड़ोको हादुड़ाकान
बोंगा मुनि वीर को दुबा कान
लेलताना को नीला
प्रभु सिरोमोनी रुतुइ ओरोङ तानिः
तालारेः सुसुन ताना हो
एला एला एलाबु लेला
दोला दोला दोला दोला हो
सिङ बोंगा बाइतादा नीला हो... एला...

पूरा चांडुः लेकाएः तुराकाना
जोतो गोपिन को इपिलाकाना
एन लेका सोभाकाना
निदा सिंगि आबु सेनेआबु ताबु
दो दो दो दोलाबु हो
एला एला एला एलाबु लेला
दोला दोला दोला दोला हो
सिङ बोंगा बाइ तादा नीला हो... एला...

सोबेन होड़ोको उड़ुङाकान
बुदुबाबु ताबुएः तायोमाकान
इपाएः डोंडो होड़ो लेका
सेनोआएःचि इदु काएः सेनोआ
सेनोः गेआबु दोला हो
एला एला एला एलाबु लेला
दोला दोला दोला दोला हो
सिङ बोंगा बाइ तादा नीला हो... एला...

रास लीला

वन के भीतर प्रभु गोपाल
चमत्कारपूर्ण लीला रचे हैं
(रास-मण्डप) झाकमक चमक रहा है
राधा, विनोदिनी (और) अन्य ब्रज बालाएं
(रास में सम्मिलित होने) सभी आई हैं
आओ, आओ हम देखने चलें
चलो, चलो हम देखने चलें
प्रभु ने रास लीला रची है

नाग (और) नर उतरे हैं
देव, मुनि (और) वीर बैठे हैं
(सभी) रास देख रहे हैं
प्रभु शिरोमणि बाँसुरी बजा रहे हैं
(और) बीच में नाच रहे हैं
आओ, आओ हम देखने चलें
चलो, चलो हम देखने चलें
प्रभु ने रास-लीला रची है

(कृष्णचन्द्र वन में) पूर्णचन्द्र की तरह खिले हैं
(और) सारी गोपियां तारों-सी लगती है
(वहाँ की) शोभा ऐसी ही बन गई है
दिन रात हम चलते ही चलेंगे
चलो, चलो, चलो, हम चलें
आओ, आओ, हम देखने चलें
चलो, चलो, हम देखने चलें
प्रभु ने रास लीला रची है

सभी लोग निकल गए हैं
(किन्तु) बुदु बाबू पीछे पड़ गया है
जैसे कि वह कोई गंवार आदमी हो
पता नहीं वह जायगा कि नहीं
हम (तो) अवश्य चलेंगे
आओ, आओ, हम देखने चलें
चलो, चलो, हम देखने चलें
प्रभु ने रास लीला रची है

भैयाराम

सेलदा:

(49)

गाँधी	गाँधी
दिसुम ताबु जिलि मिलि	देश हमारा झलमल
इसु बुगिन बाइआकान	बहुत सुन्दर बना है
सोना ते सामाड़ोम ते	सोने ही सोने से
जाका माका सिंगाराकान	झकमक शृङ्गारित है
नामिनाङ सुगाड़ा दिसुम	इतना सुन्दर देश
पाटि लेका बिलाकान	चटाई-सा बिछा है
एन चेतान लिंगितान	उसके ऊपर बहती है
गंगा जामुना तांड़िआकान	गंगा जमुना फैली है
उत्तर रेदो राताङ बुरु	उत्तर में हिमालय पर्वत
पूरब पाछिम जांगिआकान	पूरब पच्छिम खड़ा है
दिसुम ताबु एनातेगे	देश हमारा इसी से
बुगि लेका केसेदाकान	अच्छी तरह रक्षित है
दाखिन रेओ एनालेका	दक्षिण में उसी तरह
जालाकार ते कोटोङाकाना	समुद्र से घिरा है
जिलिङ चाकार इसु सांगिन	लम्बा चौड़ा बहुत दूर
दा: गेहो हेलो आकान	पानी ही लहराता है
ने दिसुम एआङ ताबु	यह मातृभूमि हमारी
भारत मेनते साकिआकान	भारत नाम से विदित है
हुड़िङ माराङ सोबेन दिसुम	छोटे बड़े सभी देश
एनाकोरे नुतुमाकान	उनमें यह नामी है
जोम जोपोम किसिम किसिम	खाद्य यहाँ किस्म किस्म
एनाकोते पेरे: आकान	इन्हीं से भरा है
गुन गेआन सेंड़ां धोरोम	गुण, ज्ञान, बुद्धि, धर्म
सोबेना: ते आमिआकान	सबसे यह पूरित है

बिर कोते बुरु कोते — जंगलों से पहाड़ों से
दिसुम ताबु सुगाड़ाकान — देश हमारा सुशोभित है
बा कोते जो कोते — फूलों से फलों से
एआङ ताबु दालोबाकान — माँ हमारी लदी है
जोरोतान कुड़ामाते — झरता है छाती से
तोवा दो हो हुंडिआकान — दूध जो भरा है
होनको ताए: सोबेन आबु — सन्तान उसके हम सभी
एनातेबु माताकान — उसी से बढ़े हैं

सोबेन किसिम धान दाउलात — सब तरह धन दौलत
ओते बितार उकुआकान — धरती में छिपा है
एनाकोते दिसुम ताबु — उससे देश हमारा
इसु गेहो पुंजिआकान — बहुत ही धनी है
ने लेका सुगाड़ा दिसुम — ऐसा सुन्दर देश
का गेहो आइउमाकान — सुना नहीं गया है
आबुआ: जोनोम दिसुम — हमारी जन्म भूमि
दुनिआ रे चुनडुलाकान — दुनिया में इंगित है

नेरेगेहो को ताइकेना — यहीं पर थे कभी
रिसि मुनि को सेंड़ाकान — ऋषि मुनि ज्ञानी
गेआन भंडार बेद पुरान — ज्ञान भंडार वेद पुराण
इनकुते बाइआकान — उन्हीं से निर्मित है
नेआ गेहो सुकु दिसुम — यही सुख का देश है
सोवारग लेका लेकाकान — स्वर्ग-सा मान्य है
दुनिआ रे दिसुम गुरु — दुनिया में देश गुरु
नेआ गेहो काजिआकान — इसे ही कहते हैं

इसु जूगु सेनो: जान — बहुत युग चले गये
सोतो जूगु ताइकेना — सत युग था
इमान धोरोम गेहो — ईमान और धर्म में ही
पुरखा को ताइकेन — हमारे पुर्खे थे
निदा सिंगि बोंगा बुरु — दिन रात पूजा पाठ
एना गेको कामिकेन — यही उनका काम था
सारते को काजिकेन — सत्य वे बोलते थे
एनारेको आड़ाओ केन — उसी पर अड़े थे

दिरि लेका को कुड़ामलेन	पत्थर की छाती थी
पाड़ांगा लेका को सुपुलेन	अड़कठे-सी बाहें
हाति लेका को होड़ोलेन	हाथी-सा शरीर था
कुला लेका को पेड़े: लेन	शेर-से बलवान थे
बिर कोरे को ताइकेन	जंगलों में रहते थे
का होको बोरोकेन	उन्हें डर नहीं थी
जेता लेका हामबाल कामि	कितना ही कठिन काम
राबाल ताको ताइकेन	हलका ही लगा था
आको रेको ताइकेन	उनके बीच थे
पानडित को ताइकेन	पण्डित ज्ञानी थे
गुन गेआन इनकु रे	गुण ज्ञान उनमें
सोबेन लेका ताइकेन	सब कुछ भरा था
का दाड़िआ काजि कामि	असम्भव काम-काज
का ताको ताइकेना	उनके लिये नहीं था
आयार तायोम सोबेन मुंडि	आगे पीछे की बात
इनकु ताको उदुब केन	वे ही कहते थे
हागा होन बुगिन बुगिन	भाई बन्धु अच्छे-अच्छे
दुलाड़ा तेको ताइकेन	प्रेम से रहते थे
दुराङ केन सुसुन केन	गाते थे नाचते थे
लानदा केन जागार केन	हंसते थे बोलते थे
सुकु रेको जागार केन	सुख से थे वे
दुकु काको उड़ु: केन	दुख की चिंता नहीं थी
एन लेका सुगाड़ा सोमाए	ऐसा सुन्दर समय
सिदा जूगु ताइकेन	पहले का युग था
मोसा-मोसा को ताइकेन	कभी-कभी हुए थे
होड़ोको इसु एदकान	लोग बहुत ही बुरे
इनकुतेको सिगिदजान	उनसे कष्ट पाए
मानोवा होन बुगि लेकान	मनुष्य गण अच्छे
होबाजान हाल चाल	हुआ था हलचल
दिसुम रेदो चिमताङ	देश में जब जब
भोगोमान हादुडु लेन	भगवान उतरे थे
इनकु नास इमताङ	उनके नाश को तब तब

रावान मुदाइ ताइकेन — रावण दुष्ट था
राजा इनि: लाङका रेन — राजा वह लंके का
सिगिद केनाए: साधु सानत — कष्ट दिया साधु सन्त—
होड़ो होनको दिसुम रेन — देश के लोगों को
दुकु तेको बालाए जान — जब दु:ख बहुत फैला
राम प्रभु हिजु: जान — राम प्रभु आये
रावान चाए: टुनडु जान — रावण का अन्त हुआ
सिनिगिद चाबाजान — विपत्ति खत्म हुई

कंस राजा माथुरारे — कंस राजा मथुरा का
दुसुमाने: ताइकेन — वह भी दुशमन था
जुलुम चेतान जुलुम रे — जुल्म पर जुल्म में
होड़ो होनको उयु:जान — लोग गिराए गये
कृष्ण ताबु हाड़ागु लेन — कृष्ण हमारे उतरे थे
कंस होए: गोए: जान — कंश तब मारा गया
दुकु दासा निरजान — दु:ख विपत्ति चले गए
मानोवा को सुकुजान — मनुष्य सभी सुखी हुए

मोद सोमाए दिसुम रे — एक समय देश में
धोरोम कोरोम बागेजान — धर्म कर्म छूट गया
एनाते हो होड़ो को रे — इससे लोगों में
पाप सेंगेल जुल जान — पापाग्नि फैल गई
बुद्ध देव जानाम जान — बुद्ध देव पैदा हुए
धोरोम अहिंसा उदुबजान — धर्म अहिंसा फैलाए गए
धोरोम तोबे रुआड़ जान — धर्म तब लौट आया
पाप सेंगेल एड़ें: जान — पाप की आग बुझ गयी

पुंडि होड़ोको सेंडां रेन — गोरे चालाक लोग
बिलाइत दिसुम सांगिन रेन — दूर देश बिलायत से
आबु दिसुम को हिजु: लेन — हमारे देश आये थे
सामुनदार पारोम रेन — समुन्दर पार से
बेपार मेनते को राकाब लेन — व्यापार को आए थे
ताइकेनाको चेनटा रेन — वे बहुत धूर्त थे
होड़ो कोको बेदा केन — लोगों को ठगते थे
आबु दिसुम भारत रेन — हमारे देश भारत के

भारत ताबु जोनोम दिसुम	भारत हमारी जन्मभूमि
एना धान ते पेरे:आकान	यह धन से भरी है
नेआ लेलते हिसिंगाजान	इससे उन्हें ईर्ष्या हुई
पुंडि होड़ो को हिजु:आकान	गोरे लोग जो आए थे
कोना कोना को बोलोजान	कोना कोना वे घुस गये
जाति रेगे पुंडिआकान	जाति से वे गोरे थे
भारत ताबु दासिजान	भारत गुलाम हो गया
दुनिआरे राजाकान	(जो) दुनिया का राजा था
दिसुम ताबु चेचा:जान	देश हमारा खण्डित हुआ
सोबेन लेका उजाड़ाजान	सब तरह से उजड़ गया
रेंगे: तेताङ बोलोजान	भूख प्यास समा गयी
हागा होनबु सिगिद जान	भाई बन्धु कष्ट पाए
सिङ बोंगा बिलिकाजान	भगवान को दया आयी
गाँधी ताबु कुल जान	गाँधी को भेजा गया
पुंडि होड़ोको हार जान	गोरों को भगाया गया
दुकु ताबु बानो: जान	दु:ख हमारे चले गये
बोंगा लेकाए: हिजु: लेन	देवता की तरह वे आए
ताइकेनाए: गाँधी बाबा	थे वे गाँधी बाबा
दिसुम ताबु तामबाओ जान	देश हमारा झुक गया
आएगा: काटा सुबा	उनके चरण तले
आए: ताबुए: होबालेन	हमारे वे पिता बने
दिसुम रेन माराङ आबा	देश के बड़े पिता
जागार आएआ: आयुम	उनकी ही बातें सुनने
हागाको एलाबु दुबा	भाई, आओ बैठें
गुजरात हुड़िङ दिसुम	गुजरात छोटा देश
भारत रे हाटिङाकान	भारत का हिस्सा है
मिलिकेन मिलिकेन	मिलि-मिलि धरती यह
सामुंदार ते आतोमाकान	समुन्दर से घिरा है
ने दिसुम बुगिन दिसुम	यह देश सुन्दर देश
सोबेन लेका पुंजिआकान	सब प्रकार से धनी है
दा: ते हो तारा आतोम	पानी से एक किनारा
बुगिलेका चापिआकान	अच्छी तरह धुलता है

ने दिसुम होड़ोहोन	इस देश के लोग
मेना: कोआ सेंड़ांकान	हैं बड़े ज्ञानी
सिदाकोरे को ताइकेन	पहले से ही थे यहाँ
मापाराङ होड़ोको जोनोमाकान	जन्मे बड़े आदमी
काजि-कामि सेंड़ा जागार	काम धाम बुद्धि में
दिसुम रेहो उनावाकान	देश में नामी है
एना सोबेन जोगावाकान	यह लिखा गया है
सोतो: आकान सांगोमाकान	संभाल कर सुरक्षित है
नेरे गेहो मेना: गेआ	यहीं पर बसा है
सुदामा पुरी हातु सुंदार	सुदामा पुरी गांव सुन्दर
बुगिन हातु एना ताबु	अच्छा सा गांव यह
काजिआकान पोरबांदार	कहलाता है पोरबन्दर
नेरे गेको ताइकेन	इसी गांव में थे
होड़ोको इसु नुतुमाकान	लोग बहुत नामी
दिसुम होको बाइकेन	देश उन्हों ने बनाया
एनाते को माराङाकान	इसी से बने भारी
नेरे गेहोए: ताइकेन	यहीं पर था
काराम चानद जोनोम लेन	करम चन्द जन्म हुआ
एंगा आपुकिन ताइकेन	उसके माँ बाप थे
सुकु-सुकु जुड़ि लेन	सुख की जोड़ी थी
पुतली बाई सुगाड़ा कुड़ि	पुतलीबाई सुन्दर थी
ताइकेनाए: दांगिड़ि कुड़ि	जब वह युवती थी
काराम चानद पुतली बाई	करमचन्द पुतलीबाई
आड़ांदि लेन जुड़ि जुड़ि	जोड़ी लगी, विवाह हुआ
अठारह सौ उनसाठ	अठारह सौ उनसठ
चांडु: आक्टोबर ताइकेन	माह अक्टोबर था
मोहनदास जानाम लेन	मोहनदास पैदा हुआ
तारीख दो ताइकेन	तारीख दो था
पुतली बाई काराम चानद	करमचन्द पुतलीबाई
बारान किङ सुकु जान	दोनों सुखी हुए
हुड़िङ माराङ हागा होन	छोटे बड़े, भाई बन्धु
सोबेन होको रासिका जान	सबको खुशी हुई

सुदामा पुरी गोटा हातु	सुदामापुरी सारा गाँव
कुड़ि होको हुंडिन जान	औरतें जमा हुई
लानदातान जागार तान	हंसता बोलता
कोड़ा होन जोनोम जान	बालक पैदा हुआ
बाले: होन लेल तान	बच्चे को देखते
कोयो:तान टेपेसातान	झांकते धकेलते
बुड़िआको जामान जान	बूढ़ियाँ जमा हुई
एह-एह काजि तान	'एह-एह' कहती
गाँधी ताबु जोनोम जान	गाँधी हमारे पैदा हुए
मोहनदास नुतुम जान	मोहन दास नाम हुआ
एंगा आपु सुकुजान	माँ बाप प्रसन्न हुए
हागा होन रासिका जान	भाई बन्धु खुश हुए
कोयोङ चेतान कोयोङ जान	गोदी पर गोदी
इसु होए: दुलाड़ा जान	बहुत ही प्यार मिला
बुगि लेकाए: जोगाओ जान	अच्छी तरह रखा गया
माजा लेकाए: माताजान	अच्छी तरह वह बढ़ा
मोहनदास माराङ जान	मोहनदास बढ़ गया
सेसेन जान जागार जान	चलने बोलने लगा
राचा कोरे: इनुङ जान	आँगन से खेला
होनको लोए: जामान जान	बच्चों के साथ मिला
इनि: लेका गोटा हातु	उसकी तरह गाँव में
कोड़ा होन बांकु जान	कोई बच्चा नहीं था
लानदा तान दुराङ तान	हंसता हुआ गाता हुआ
ओड़ा: राटि सोभाजान	घर भी शोभित हुआ
पाड़ाओ ओड़ा: पाड़ाओ नातिन	पाठशाला पढ़ने को
मोहनदास भारति जान	मोहन भर्ती किया गया
इनि: तेहो होन सोबेन	उससे सारे बच्चे
गुरु सोबेन रासिका जान	गुरु सभी प्रसन्न हुए
पाड़ाओतान इतुनतान	पढ़ते हुए सीखते हुए
इनि: तोबे ताइन जान	वह तब रहने लगा
जाँ दिन जेता दिन	किसी दिन किसी समय
का होए: आड़िसा जान	नहीं वह आलसी हुआ

मोहन दास माराङ जान	मोहनदास बढ़ गया
सेले बोले: दांगाड़ा जान	अच्छा नौजवान हुआ
एंगा आपु बारानकिङ	माँ बाप दोनों का
होन ताकिङ सुगाड़ा जान	पुत्र वह सुन्दर बना
जान काजि जेतान कामि	कोई बात कोई काम
का ताकिङ आंदुल जान	नहीं उनका कभी रुका
गुरु को सोंगे को	गुरु और सहपाठी
सोबेन को हो सुकु जान	सब कोई प्रसन्न हुए
पाड़ाओ ओड़ा: पाड़ाओ नातिन	पाठशाला पढ़ने को
जानाओ जानाओ सेनो: जान	रोज रोज वह गया
निदा सिंगि जुलुम जान	रात दिन लग गया
साल साल पास जान	साल साल पास हुआ
एन लेकाए: पाड़ाओ जान	इस तरह वह पढ़ा
काजि कोए: आयुम जान	वह आज्ञाकारी बना
गेल इराल सिरमा रे	अठारह वर्ष की उम्र में
मेटरिके: पास जान	मेट्रिक वह पास किया
मोहनदास होन बुगिन	मोहनदास लड़का अच्छा
दिसुम रेगे ताइकेन	हमारे ही देश में था
पुतलीबाई काराम चानद	पुतलीबाई करमचंद
एंगा आपु ताइकेन	माँ बाप उसके थे
एंगा आपु निदा सिंगि	माँ बाप रात दिन
होन गेकिङ उडु:केन	पुत्र का ख्याल किए
होन होपोन सुकु सुकु	परिवार में सुख से
आको होको ताइकेन	वे लोग रहे थे
एंगा सुगाड़ा आपु सुगाड़ा	मातृ स्नेह पितृ स्नेह
दुलाड़ा चेतान ताइकेन	प्यार में ही पला था
निदा सिंगि सिंगि साटुब	रात दिन सारा समय
काजि ताकिङे: आयुम केन	उनकी बात मानता था
एंगा ताए: सिंगि लेका	माता उनकी सूर्य-सी
दिसुम रेहोए: ताइकेन	देश में वह थी
आपु ताए: बोंगा लेका	पिता उनके देवता-से
मोहन नातिन ताइकेन	मोहन के लिए थे

आङजान आयुब जान	बिहान हुआ शाम हुई
एंगा आपु दुलाड़ा केन	माता पिता प्यार किए
एंगा: काटाए: साब केन	माता का चरण छूआ
हागा होए: जोआर केन	भाइयों को प्रणाम किया
आपुता: एनलेका	पिता के पास उसी प्रकार
मोहन होए: होपोर केन	मोहन दास आता था
जोआर केन जागार केन	प्रणाम किया विनत हुआ
काजि कामि: कुलि केन	काम काज पूछता था
गुरु काजि सोना काजि	गुरु की बात सोने-सी
एना काजि: आयुम केन	उसका उसने पालन किया
जेता लेका हामबाल कामि	कितना ही कठिन काम
एना काए: बोरोकेन	उससे वह नहीं डरा
निदाकान आयुबाकान	रात में अंधियारी में
आयुमे तोरसा होपोर केन	सुनते ही डटा था
मोहन गेहो पुरा केन	मोहन ने ही पूरी की
गुरु ताएआ: सानाङ केन	गुरु की जो इच्छा थी
हातु ताला दिसुम ताला	गाँव बीच देश बीच
हागा बोएआ ताइकेन	भाई बन्धु (उसके) थे
हुड़िङ माराङ सोबेन हागा	छोटे बड़े बिरादरी में
सोबेन कोहो बुगिन केन	सब कोई अच्छे थे
दुलाड़ा केन सुगाड़ा केन	प्यार से प्रेम से
इनकु ताला रे ताइकेन	उनके बीच वह था
मोहन ताको ताइकेन	मोहन उनके लिए था
सोबेन लेका देंगाकेन	सबकी उसने मदद की
दिसुम रेगे आपु माराङ	देश में ही बाप बड़े
काराम चानद ताइकेन	करमचंद उसके थे
हातु बितार नुतुमाकान	गांव भर में नामी
होड़ो इनि: ताइकेन	आदमी वही थे
एन लेका पुतलीबाई	उसी तरह पुतलीबाई
कुड़ि कोरे: ताइकेन	स्त्रियों के बीच थी
गोटा हातुइ: काजिलेन	सारा गांव कहता था
एंगा माराङ ताइकेन	माँ वही बड़ी थी

सोमाए ताकिङ सेनो: तान
एंगा आपु बारान किङ
हाड़ाम तान बुड़िआ तान
मोसाते बारान किङ
बारिआकिङ होबा लेन
सुगाड़ा ताकिङ होन किङ
निराल निराल ताइकेन
बारिआ कोड़ा होन किङ

हुड़िङ हागा मोयोद उतार
कारामचानद ताए: ताइकेन
हागा तेआ: होन मोयोद
सुगाड़ा ताए: ताइकेन
एन लेका ओड़ा: रे
आपिआ होन ताइकेन
सोबेन होनको दांगाड़ालेन
दुलाड़ तेको ताइकेन

कारामचानद पुतलीबाई
बारान किङ गे जागार जान
होनको तालाङ सोबेन को
सुगाड़ा-सुगाड़ा माराङजान
ओड़ा: ताको दुआर ताको
जुड़ि ताको जोता ताको
जिनीद तालाङ मेना: रेगे
आड़ांदि ताको सोबेन को

कुटुम कोते कुपुल कोते
कोनेआ को हो दांड़ां जान
दुताम तान को दुताम जान
कोनेआ को नाम जान
हागा होन हुड़िङ माराङ
सोबेन को नेओता जान
आड़ांदि आपिआ सोबेन
मोसातेगे पारोम जान

समय उनका जा रहा
माता पिता दोनों का
बूढ़े बूढ़ी हो रहे
दोनों ही एक साथ
दो ही पुत्र थे
सुन्दर सन्तान उनकी
अच्छे अच्छे वे थे
दोनों पुत्र उनके

छोटा भाई एक ही
करमचंद का था
उसका था पुत्र एक
वह भी सुन्दर था
इस तरह घर में
तीन लड़के बढ़े थे
तीनों से जवान थे
प्यार से बढ़े थे

करमचंद पुतलीबाई
दोनों ने ही बातें की—
सभी लड़के हमारे
सुन्दर-सुन्दर बड़े हुए
घर कर दें द्वार कर दें
जोड़ी कर दें जोत लगा दें
जिन्दगी हमारी रहते ही
ब्याह सबकी कर दें

कुटुम्बों में मेहमानों से
कन्याएं खोजी गयीं
अगुवादार जुट गये
कन्याएं मिल गयी
भाई-बन्धु छोटे-बड़े
सभी आमंत्रित हुए
विवाह तीनों के
एक ही साथ हो गये

आड़ांदि जान तायोमते	शादी हुई उसके बाद
हुड़िङ दिन होबाजान	थोड़े दिन हुए थे
मोहन दास गाँधी दो	मोहनदास गाँधी के
आपुते ताए: चाबाजान	पिता स्वर्गवासी हुए
गोटा दिसुम नुबागेजान	देश में अंधियारी फैली
पुतलीबाई फिकिर जान	पुतलीबाई चिंतित हुई
मोहन दास टुआर जान	मोहनदास टुवर हुए
मुंडि सोबेन आद जान	दिशाएं शून्य हुई
मोहन दास लेलकेद	मोहनदास ने देखा
भारत एंगा तोलाकान	भारत माता गुलाम है
तोलाते राड़ा नांगेन	बंधन-मुक्त करने की
आए: तोबे: उ़डु: केन	उसके मन में चिंता हुई
बिलाइत दिसुम दिसुमकोरे	बिलायत देश देशों में
सेंड़ां नातिन नुतुमाकान	ज्ञान के लिए नामी है
सेंड़ां नाम सेनो: नांगेन	ज्ञान की खोज में
मोहनदास तेआरेन जान	मोहनदास तैयार हुए
एंगाते ताए: पुतलीबाई	माता पुतली बाई को
नेआ काजि: उदुब जान	खबर इस बात की मिली
हातु हातु नेआ जागार	गाँव गाँव सब ओर
सोबेन मुलि ओटाङ जान	यह बात फैल गयी
हागा होन सोबेन जाति	भाई बन्धु सभी जात
सोबेन को हो भाकुआओ जान	सबको आश्चर्य हुआ
बिलाइत सेनो: ठीकि बानो:	बिलायत जाना ठीक नहीं
एना गे को काजि जान	सबने यही कहा
बिलाइत रे जाति बानो:	बिलायत में जाति नहीं
किलि बानो: धोरोम बानो:	गोत्र नहीं, धर्म नहीं
जान जिलु जेतान जिलु	कोई मांस किसी का मांस
एना जोजोम माना बानो:	उसे खाना मना नहीं
आरकि बारांडी नू केते	दारू बराण्डी पीकर
बुलेन जाकेद माना बानो:	बेहोश होना मना नहीं
एना मेनते बिलाइत सेनो:	इसलिए बिलायत जाना
का उतार ठीकि बानो:	एकदम ठीक नहीं

एंगाते तोबे पुतली बाई	माता तब पुतली बाई
जी रेगे: पाहाम तान	मन में वह सोचने लगी
होन विदेस आलोए: सेनो:	पुत्र विदेश मत जाए
एनागे होए उडु: तान	यही वह चाहने लगी
होन तोबे: कुलिकि:	बेटे से उसने पूछा–
हेला बाबु कोतेम तान	बाबू तुम कहाँ चले
बिलाइत दिसुम आलोम सेनो:	बिलायत देश मत जाओ
नेआ सोबेन को काजि तान	सब यही कह रहे
एंगा काटा साब केते	माता के चरण छू
मोहनदास काजितान	मोहनदास कहने लगे–
हे एआङ दुलाड़ा एआङ	हे माँ प्यारी माँ
सेंड़ां नामेञ सानाङ तान	ज्ञान पाना चाहता हूँ
भारत एंगा तोलाकान	भारत माता बंदी है
इनि: राड़ाञ सानाङ तान	उसे खोलना चाहता हूँ
बिलायत सेनो: आलोम मानाञ	बिलायत जाने से मत रोको
नेआ आञेञ बिनतितान	यही मेरी बिनती है।
हाराजान माताजान	मैं पला बढ़ गया
माराङ जान सोतो:जान	बड़ा हुआ संभल गया
आड़ांदिजान कोड़ांदिजान	ब्याह हुआ शादी हुई
जोका जान जुड़िजान	जोत लगी जोड़ी बनी
ओड़ा: रेआ: दुआर रेआ:	घर का द्वार का
भारोम हामबाल होबाजान	भार-भारी आ गया
कुटुम कुपुल बोंगाबुरु	कुटुम्ब परिवार देवी देवता
आञ: चेतान उयु:जान	मेरे ऊपर आ गिरे
आपु टुआरेञ टुआर जान	बाप से मैं टुवर हुआ
दिआ ताञ एड़ें: जान	दीया मेरा बुझ गया
गोटा मुलि लेल लेरे	सब ओर देखने से
होरा ताञा: केसेद जान	रास्ता मेरा रुक गया
उदुबनि: चुनडुलनि:	बताने वाली दिखानेवाली
आमगे एआङ होबाजान	तुम्ही, माँ, रह गयी
आमगे एआङ भोगोमान ताञ	तुम्हारी मेरे भगवान हो
कुनटा आमगे होबाजान	आधार मेरा तुम्ही हो

जिलु काञा: हाइ काञा:	मांस नहीं मछली नहीं
बुलेन तेआ: राटि काञा:	नशा नहीं करूँगा
जाँ कुड़ि जेता कुड़ि	कोई औरत किसी औरत
इनि: लो: सोंगेन काञा:	उससे नहीं मिलूँगा
होसोड़ो काञा: कुमबुडु काञा:	झूठ नहीं चोरी नहीं
एदकाना: का ते काञा:	बुराई त्याग ही दूँगा
बिदेस रे नेआ को काञा:	विदेश में यह सब नहीं
काटाञ साबजाद एआङ ताञा:	तेरे पैर पड़ता हूँ, माँ
होना: काजि केटे: काजि	पुत्र की बात कठिन बात
विदेस सेनोए: सानाङ तान	विदेश जाना ही चाहता है
एंगाते ताए: आयुम केद	माता उसकी यह सुन
चेतान लातार उडु: तान	बहुत-बहुत चिंतित हुई
सेनो: में मार सुगाड़ा ताञ	जाओ तब सुन्दर मेरे
बिदेस सेनो:म हाएआतान	विदेश जाना चाहते हो
आलोम आनदुले काजि को ताञ	आज्ञा का उल्लंघन न करना
नेआ बेटाञ सानाङ तान	यही, बेटा, चाहती हूँ
ने लेका होन होपोन	इस तरह माँ बेटे
मोदता: रे कापाजि जान	एक जगह बातें किए
होना: सानाङ बिलाइत सेनो:	पुत्र की इच्छा विदेश जाने की
एंगाते एना हे जान	माता ने उसे मान ली
मोहनदास रासिका जान	मोहनदास प्रसन्न हुए
जी ताए: दो सुकु जान	मन में उन्हें खुशी हुई
एंगा होए: जोआर जान	माँ को उसने प्रणाम किया
काटा सुबाए: उयुगेन जान	चरणों में वह गिर पड़े
हातु बितार हागा होन	गाँव में बिरादरी में
हुड़िङ माराङ होबाजान	छोटे-बड़े लोग थे
सोबेन कोता: जागार नांगेन	सबसे बातें करने को
मोहन तोबे सेनो: जान	मोहन तब चल निकले
गुरु कोता: सोंगे कोता:	गुरुओं के मित्रों के
सोबेन कोताए: सेनो: जान	सबके पास वह गये
बिलाइत सेनो: पाड़ाओ नातिन	बिलायत जाने, पढ़ने की
सोबेन कोलोए: जागार जान	सबसे उसने बातें की

रोक टोक काजि केन	रोक टोक जिसने की
इनकु ताए: सेनो: जान	उसके पास वह गये
पाड़ाओ नातिन बिलाइत सेनो:	पढ़ने को बिलायत जाने
एंगाते ताए: मानातिङ जान	माँ यह मान गयी
एन काजिको उदुबे जान	यह सब बातें कही गयी
आको सोबेन बुजाओ जान	उन्हें समझाया गया
केनटेद काजि का बिरिदजान	रोक टोक नहीं हुआ
मोहन: जी रेआड़ जान	मोहन का मन शान्त हुआ
एंगा हो पुतलीबाई	माँ उसकी पुतलीबाई
टाका पैसा जोगाओ केद	रुपये पैसे जमा की
होन नातिन साना-पाना	लड़के का संब सामान
नेते हेनतेएते: जामाकेद	इधर उधर से जुटाई
लिजा: तान किचिरितान	कपड़े लते वस्त्र विस्तरा
सोबेन सोबेना: किरिङकेद	सब कुछ उसने खरीदा
होड़ोको ओकोआ काजिकेद	लोगों ने जो भी कहा
जोतो इनि: सामपोड़ो केद	सब कुछ उसने जुटा लिया
अठारह सौ नावासी	अठारह सौ नवासी
चार दिसमबार होबाजान	चार दिसम्बर आया
ओड़ा:आते होए: उडुङजान	मोहन घर से निकल पड़ा
जहाज रे: दे जान	जहाज पर सवार हुआ
सामुनदार जापा: पोरबानदार	समुन्दर किनारे पोरबन्दर में
हागा होनको जामान जान	भाई बन्धु जमा हुए
मोहनदास बिदाजान	मोहनदास बिदा हुए
इनि: लेलगोद जान	वह देख पठाए गये

कुंजलसाय मिरु
हुड्डुआः

[illegible]

(50)

कालि जूगु तेबाः लेना

कलियुग आया

कालि जूगु तेबाः लेना — कलियुग आया
काले तेबु घेराओ जाना — हम कल ही से घिर गये
ओते सिरमा नुबाः चाबा जाना — धरती और आसमान में अंधियारी छा गयी
धोनि चिकाजाना — प्रिय, यह क्या हो गया
हासारेआः मेड़ेद बाइओः ताना — मिट्टी से लोहा बनने लगा

ने दिसुम मुकाजाना — यह देश माप लिया गया
मोंड़े-मोंड़े सिरमा रे — पाँच-पाँच वर्षों में
मुका-मुका रे मोंड़ेआः कारखाना — एक हाथ की दूरी पर पांच कारखाने
धोनि चिकाजाना — प्रिय, यह क्या हुआ
ओते सिरमा सुकुल चाबाजाना — धरती और आसमान में धूवां भर गया

बिर कानदार जोलाकोते — जंगल, कंदराओं और पहाड़ों पर
रेलगाड़ी सेसेन ताना — रेलगाड़ी चलने लगी
गाड़ा-गाड़ाते बिजली कारखाना — नदी नदी में बिजली के कारखाने खुले
धोनि चिकाजाना — प्रिय, यह क्या हो गया
सिंगि लेका निदा लेलोः ताना — दिन की तरह रात लगने लगी

ओ दिसुम नाका-जाना — हमारा देश परिवर्तित हो गया
टाटा नागार राउरकेला — टाटा राउकेला बने
हाटिआ चुटिआ जिलिब जिलिब — हटिया चुटिया अब झक-मक कर रहे हैं
धोनि चिकाजाना — प्रिय, यह क्या हो गया
निदा सिंगि सुकु बानोः जाना — दिन-रात अब चैन नहीं रह गया

(51)

एओनोः पे जागो

गितिगाकान हागाको ताञ सोये हुए मेरे भाईयों
दुडुमाकान मिसिको ताञ निद्रित मेरी बहनो
हाए रे गितिः दुडुम बागे लागातिङ रे यह नींद तुम्हें त्यागना ही पड़ेगा

इलि तेबु बुलेताना हम इलि से बेहोश हैं,
मांडि तेबु आकाल ताना (जबकि) खाने को नहीं मिलता
हाएरे इलितेगे बोंगाएः बालुताना रे हाय, इलि से ही देवता भी पागल हो रहे हैं

सुसुनाबु दुराङाबु हम नाचते गाते हैं
रुतुआबु बानामाबु बांसुरी बनम् बजाते हैं
हाएरे होएओ रेबु ओटाङ बिउर ताना रे हाय, हम कल्पना लोक में बिचर रहे हैं

बा गेबु गुतुआ हम फूल पिरोते हैं
डालि गेबु गालाङा माला बनाते हैं
हाएरे बोः चेतान सुनुम बानोः जाना रे (किन्तु) हाय, सिर पर तेल नहीं रह गया है

लेटे पेटे बुड़िआ गुंडि बूढ़ी गायों को जोतकर
सिउगाबु कामिआबु हल चलाते हैं, काम करते हैं
हाएरे लाइः पेरेः मांडि बानोः जाना रे हाय, भर पेट खाना नहीं मिलता है।

ओड़ाः दुआर होरोएआबु हम अपने घर की रखवाली करें
ओते पिड़ि जांगीआबु खेत की रक्षा करें
हाएरे कुमबुडु को लोड़ो बिउर ताना रे चोर हमारे ही पीछे लगे हुए हैं

ने सोमाए सेनोःजान रे इस समय चुक जाने से
होएओ साइबु चाब तारे हमें हवा खाकर ही जीना पड़ेगा
हाएरे आलोकाबु दुसिः भोगोमान रे तब हम भगवान् को दोषी न ठहराएं

सोमाए सेनो: ताना — समय जा रहा है

ओहोरे सोमाए — हाय, समय
सोमाए सेनो:ताना — चला जा रहा है
आयार-तायोम कोतेम हेताएआ — आगे पीछे तुम क्या देख रहे हो
हेताए आ रे सोमाए — ताक रहे हो, समय
सोमाए सेनो: ताना — समय चला जा रहा है

सिदा गेचाम ताइकेन — पहले तुम थी
जुलेतान सेंगेल लेका — आग की तरह धधकती थी
सिंगि चांडु: कोगेम हेनदो केना रे सोमाए — तुमने सूरज चाँद की हंसी उड़ायी थी
सोमाए सेनो: ताना — (तुम्हारा) समय चला जा रहा है

बो: रेताम बांका जुड़ा — सिर पर तिरछा खोंपा
मोलोङ रे सिंदुरी टिका — मस्तक पर सिंदूर की बिंदी
सुपिदेगेम चापु-चापु केना रे सोमाए — तुम बार बार जूड़े पर ही हाथ फेरती थी
सोमाए सेनो: ताना — (तुम्हारी) जवानी चली जा रही है

मायाङ रे ताम रांगा साड़ी — तुम्हारी कमर में लाल साड़ी थी
होटो: रे मादुलि माला — गले में मंदुली माला थी
पाएला गेम जिरे बिउर केनारे सोमाए — जवानी में तुम आँचल फहराती फिरी
सोमाए सेनो:ताना — (अब वह) समय चला जा रहा है

काटारेताम आंदु पोला — पैर में आन्दु पोला झकमकते थे
तीरे मुंदाम साका साकोम — हाथ में अंगूठी और सकोम्
साड़ि आतेन उमबुलेम कोयो:रे सोमाए — तुम आवाज पहचानती छाया देखती थी
सोमाए सेनो: ताना — (अब वही) जवानी चली जा रही है

(53)

ओ विधि

ओ चिमिन दुकु सुकु
होबा जाना ओते रे
एला तोबे
निदा सिंगि मेददा: जोरो ताना रे

टाका सिका रिंगा जाना
बाबा चाउलि आकालेजाना
एला तोबे
होड़ो, चेड़े, फिकिर बोलो जाना रे

हागा कुटुमो बांगाइ:
बागे जाना बोंगा बुरु
एला तोबे
हिरिति पिरिति बानो: जान रे

ओ चिमिन सिदा सुकु
ताइकेना ओते रे
एला तोबे
मानोवा जोनोम नेकान काल रे

ओ विधि विधातागे
ओला काद नेका-नेका
एला तोबे
जाँबु चिकाओ: आए:गे इतुआन रे।

हाय विधि

हाय, कितना दु:ख सुख
धरती पर हो गया
आओ देखो
रात-दिन आँसू बह रहा है

रुपये-सिक्के का अभाव हो गया
धान-चावल का अकाल हो गया
आओ देखो
मनुष्य, पंछी, सबके मनमें चिन्ता समा गयी

कुटुम्ब बन्धु कोई नहीं
देवी-देवता छूट गये
आओ देखो
प्रेम-प्यार ही खत्म हो गया

ओह पहले कितना सुख था
धरती पर, मेरे भाई
आओ देखो
मनुष्य जन्म भी कैसा काल है

विधि का ही बिधान है
ऐसा हो रहा है
आओ देखो
कुछ भी हो वही जानता है

(54)

सेंगेल लेकाम जुलेताना बोले तुम आग की तरह जल रही हो

आमदोरे सोंगोति तुम तो संगी
आमदोरे पीरिति तुम तो प्रिय
सेंगेल लेकाम जुलेताना बोले आग की तरह जल रही हो
दागे लेकाम लिंगिताना बोले पानी की तरह बह रहे हो
जोगाओ मेकाए: भोगोमान बोले भगवान तुम्हें बहुत दिन रखें

लानदा जागार हादा-हादा तुम्हारी मुस्कान भरी बातें
सुसुन दुराङ लादा-बादा तुम्हारा नाच रंगीला
मोगो-मोगो सुनुम सोआन ताना शरीर से तेल की सुगंधि आ रही है
सोंगोति कोम एला दोला ताना तुम अपनी सहेलियों को बुला रही हो
गातिमेको तिंगु तांगि ताना सहेलियाँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं

सुपिदेरे रांगा नाचा खोंपा में लाल झाबू है
सेनाकादाम राचा-राचा तुम आंगन आंगन चलती फिरती हो
जिड़िब-जिड़िब पोला साड़िताना पोला से मधुर आवाज निकल रही है
केटे: लेबे: मायाङ हेलो ताना तुम्हारी कमर लचक रही है
लेल केते जी ताञ लो ताना यह देख कर मेरा मन जलता है

आमदोरे सुकु-सुकु तुम कितनी सुखी हो
आञ दोरे रोकोम दुकु (और) मैं इस प्रकार दुखी
जी बितार उड़ु: तेबा: लेमे मन में सोच लो
कुड़ाम बितार चापु तेबा: लेमे अपना अन्तर टटोलो
निदा सिंगि कुमु तांगि लेमे तुम अपने सपनों से भी पूछ लो

जेटे मेना: लोलो मेना: यहाँ धूप और गर्मी है
रेंगे मेना: तेताङ मेना: यहाँ भूख और प्यास है
आयार-तायोम ओकोए इतुआना आगे पीछे कौन जानता है
दुकु-सुकु चिमाए सारिआना दुख सुख का पता किसे है
इदो तोबे बिधि ओलाकादा शायद भगवान का ही यह विधान है

काजि तानाए: कुंजलसाए	कुंजल साय कहता है
कागे देराङ होसोड़ोआए:	(वह) झूठ नहीं बोलता
डिंडा सोमाए उड़ु: बानो: जाना	कुंवारेपन में किसकी चिंता है
हाला जोला पारोम लागातिङा	ढलान चढ़ाई बढ़ते जाना चाहिए
मुसिङ दुड़ुम सेनो: लागातिङा	एक दिन तो आखिर चलना ही है

(55)

रुतु – बानाम बाँसुरी–बनम

बानाम	**बनम–**
आदाकाड़ा होरा रेलाङ नापाम जाना	बीच रास्ते में हमारी मुलाकात हुई
आले साइ तेलाङा चि आपे साइ तेलाङ	हमारी ओर चलें कि तुम्हारी ओर चलें
बिउर सेकोर डारे रेलाङ चिपिनाजाना	रास्ते के मोड़ पर हमारा परिचय हुआ
आले साइ तेलाङा चि आपे साइतेलाङ	हमारी ओर चलें या तुम्हारी ओ चलें

रुतु	**बांसुरी–**
आले दिसुम इचा: चिंगिड़ि बा	हमारे देश में इचाचिंगिड़ि फूल
आले दिसुम हेनदे हारिआर	हमारे देश में हरियाली (छायी है)
आले दिसुम तोआ आटाल बा	हमारे देश में दूध–सा चमेली फूल
आले दिसुम साए धानुआर	हमारे देश में तीर धनुस (सनसनाते हैं)

बानाम	**बनम–**
आले दिसुम इलि मांडिआ	हमारे देश में इलि और भात
आले दिसुम तोवा ताबेन	हमारे देश में दूध और चिउड़ा
आपे दिसुम दुकु उकाड़ा	तुम्हारे देश में दु:ख और बेईमानी है
ओको दिसुम तेलाङ सेनो:आ	(तुम्हीं कहो) किस देश को चलें

रुतु	**बांसुरी–**
आपे दिसुम सुकु सुगाड़ा	तुम्हारे देश में सुख–सौन्दर्य है
आले दिसुम दुकु उकाड़ा	हमारे देश में दु:ख और बेईमानी है
दिसुम ताञ दोलाङ बागेआ	हमारे ही देश को हम छोड़ दें
आपे दिसुम तेलाङ सेनो:आ	चलो हम तुम्हारे देश को चलें

बानाम	बनम–
आले दिसुमो कागे बोले आपे दिसुमो कागे	न हमारे देश को न तुम्हारे देश को
हातु–हातु आलाङ होनोर बेड़ा	हम गांव–गांव घूमते फिरेंगे
आले दिसुमो कागे बोले आपे दिसुमो कागे	न हमारे देश को न तुम्हारे देश को
दिसुम–दिसुमालाङ दांड़ां बेड़ा	हम देश–देश खोजते फिरेंगे

रुतु	बांसुरी–
हातु–हातु आलाङ होनोर रेदो	गांव–गांव घूमेंगे तो
जुगि फाकिर को मेतालाङा	लोग हमें योगी फकीर कहेंगे
दिसुम–दिसुमालाङ दांड़ांए रेदो	देश–देश खोजेंगे तो
गोसाञ बामाड़े को मेतालाङ	लोग हमें गोसाई ब्राह्मण कहेंगे

बानाम	बनम–
जुगि फाकिर को मेतालाङा	योगी और फकीर कहेंगे
दालि चाउलि को ओमालाङा	हमें चावल–दाल तो देंगे
गोसाञ बामाड़े को मेतालाङा	गोसाई ब्राह्मण कहेंगे
तोआ ताबेनेको–चेदालाङा	दूध चिउड़ा तो देंगे

रुतु	बांसुरी–
आञगा: काजि बोले होसोड़ो जाना	मेरी ही बात झूठी निकली
आमागा: काजि बोले–सारते जाना	तुम्हारी बात सत्य साबित हुई
कुड़ि–बुड़ि हागा होन को बांकोजाना	हमारी तो कोई संतान नहीं हैं
आलाङ–आलाङ तेलाङ आपासुला	हम आपस में ही जीविका चलायेंगे

बारानकिङ	दोनों–
आलिङ दो सिङ बोंगा माराङ बोंगा	हम परमेश्वर को बड़े देवता को
आलिङ दोलिङ जोआराइ ताना	(साक्षी स्वरूप) प्रणाम् करते हैं
आलिङ दो बुरू बोंगा इकिर बोंगा	हम पहाड़ी देवता को जल देव को
आलिङ दोलिङ दोड़ोमाइ ताना	(श्रद्धा से) सर नवाते हैं

सुमदिकिङ

दो समधि

मिआद नि:–
ओ सुड़ा साकाम लेका
सोमाए चि ताम आलाताना
सुसुन दुराङ रुतु बानाम मे
हाड़ाम सोमाए उडु: बानो: जाना

पहला–
अरे, नए कोपलों-सी
क्या तुम्हारी जवानी फूट रही है
नाचो गाओ वंशी-बनम् बजाओ
बूढ़े हो रहे हो क्या इसकी चिंता नहीं

एटा:नि–
दिसुम ताञा: हेनदे हारिआर
रिमबिल लेका ओड़ा: दुआर
बाबा चाउलि लिंगितान गेआ
आञा: जी रे उडु: बानो: जाना

दूसरा–
मेरी धरती हरियाली फैली हुई
आसमान-सा घर द्वार
धान-चावल बह रहा है
मेरे मन में चिंता नहीं

मिआद नि:–
ओ सोमाए मोसा गेआ
सेंगेल लेका जुलेताना
बा लेका गोसो जाना सोमाए
दुडुम निदा मेददा:म जोरोएआ

पहला–
अरे, समय एक ही बार आता है
आग की तरह एक ही बार धधकता है
फूल की तरह मुर्झा जाने पर
रात-रात भर आँसु बहाओगे

एटा:नि:–
उपुनिआ मोड़ेंआ ताञा:
कुड़ि होन चुडुइ:-बुडुइ:
ताला जुमबुलारेञ दुबाकान:
निदा सिंगि रुतुञ ओरोङताना

दूसरा–
मेरी चार पाँच पुत्रियाँ
चुलबुल-सी बेटियाँ
मैं वृक्षों की छाया में बैठा
रात दिन बंशी बजाता हूँ

मिआदनि:–
ओ कुड़ि होन को ताम
सोना सामाड़ोम को ताम
चो:चो: कोयोङ बिउर कोमे
मुसिङ दिन को फादा गिड़ि मेआ

पहला–
अरे, ये लड़कियाँ तुम्हारी
सोने-सी प्यारी तुम्हारी
(इन्हीं) चूम लो गोद में बैठा लो
एक दिन ये तुम्हें छोड़ देंगी

एटानि:–	**दूसरा–**
आमलेका दुसुमान	तुम हमारे दुश्मन हो
नामिनाञेम काजि ताना	ऐसा तुम कहते हो
आञा: होनको आञगे इतुआना	मेरे बच्चे हैं मैं ही जानता हूँ
जाँको चिकाओ: आञगे लेल जोमा	कुछ भी हो जाए मैं ही देखूंगा
मिआद नि:–	**पहला–**
सेले बोले चेंड़ें होनको	सुन्दर सलोने पंछी
तुकातेको आपिर जानरे	जब घोंसला छोड़ उड़ जाते हैं
दिआ सेंगेल एड़ें: तुकाओ:आ	तब दीया बुझ जाता है
कोचा कोना नुबा: तुकाओ:आ	अंधियारी छा जाती है
हाड़ाम दुडुम सोमाए रे	बुढ़ापे के अन्तिम समय में
काटा तीको हुला: जान रे	जब हाथ पांव टूट जाते हैं
टुनडान डाण्डा: ओकोए मागामेआ	लाठी टेकने को कौन देगा
जी बितार उडु:तेबा: लेमे	मन में ठीक से सोच लो
एटा:नि:–	**दूसरा–**
ओ रेताञ बिधि बाम	हा बिधि ही बाम है
बापुडि: रे चिकान जोनोम	मैं ने क्या जन्म पाया
नाका–नाका दुकुम ओमादिञ	इतने सारे दुख दिए
गाड़ा दा: रेम डोबे तुकादिञ	मुझे बहती धारा में डुबो दिए
मिआदनि:–	**पहला–**
आमदोरे मानोवा होन	ओ मानव की सन्तान
इसु–इसु डोण्डो तेमा	तुम तो बड़े मूर्ख हो
सेंड़ांलेरे होरा चिकाकाना	बुद्धि से कौन सा रास्ता नहीं निकला है
रोका–तोका सुकुम नाम जोमा	तुम तुरन्त सुख चाहते हो
आम जापा: कुड़ि होन को	तुम्हारे पास की लड़कियों को
आञ जापा: कोड़ा होन को	हमारे पास के लड़कों को
जोका–जुड़िलाङ दुब लेकाकोरे	यदि हम जोड़ी जोड़ी बिठा दें
सिरमा रे सांकोआ रुमबुलो:आ	स्वर्ग में शंख गूंजेगा

सेनहोरा होरा कोरे	राह चलते में
उमबुल रेको दुबाकान रे	वृक्ष की छाया में
लिपिर-लिपिर होएओ सेसेन तान रे	हवा जब धीरे-धीरे बहती हो
कुड़ाम रेको कुपुमबुडु कारे	ये एक दूसरे का हृदय चुरा लें

एटा: नि:-	**दूसरा-**
जोतो होनको जाइ को	हमारे बच्चे हमारे पोते
लेपेलाबु सांगि पाति	हम एक दूसरे की खबर लेंगे
आञा: ओड़ा: आमा: ओड़ा: दुआर	हमारा घर तुम्हारा ही घर है
जोनोम जीदान सांगि तेबु लेला	जन्म मरण में हम साथ देंगे

बारानकिङ-	**दोनों-**
आमा: होनको आञा: होनको	तुम्हारे बच्चे हमारे बच्चे हैं
आमो आपु आञो आपु	हम दोनों ही बच्चों के बाप हैं
आपु आपुकिङ लाङ जापागार ताना	हम दोनों बाप बातें तय कर रहे हैं
तिसिङाते आलाङ सुमदिकिङ	आज से हम समधि हो गए

राम

राङरोङ

(57)

सिंगि लेका सिरिमारे जुलेतान प्रभु

सिंगि लेका सिरिमारे जुलेतान प्रभु
ओते सिरिमा होम मारेसाल केदा
ओते रे हुड़िङ माराङ सोबेन को
आमागा: नुतुमेको हिआतिङ ताना

काजि मेने गेहो मेना: मेआ
मेनदो का गेहोञ लेले दाड़ि
दिसुम होड़ोको आयार तायोम
आमागा: मांडा गेको जारे ताना

बुरु दिरि हाटा हुटु
आञ दो होञ दानदा गिड़ि जान
बुरु जानार सुड़ा सांगेन
आञ जी दो राड़े: जान

आयार रेदो आयारिञ में
गाड़ा पारोम दिसुम टुनडुते
दोला रेदो दोलाञ में
इचा: बा रासि चेपे:ते

आसमान के सूर्य से ज्योतिर्मय प्रभु

आसमान के सूर्य की तरह ज्योतिर्मय प्रभु
तूने जमीन और आसमान प्रकाशित किया
धरती के छोटे-बड़े सभी
तुम्हारा ही नाम याद करते हैं

कहने को ही तुम हो
किन्तु देख तो मैं नहीं सकता
धरती के लोग आगे पीछे
तुम्हारे ही पदचिह्नों का पीछा करते हैं

पहाड़-पत्थर चट्टान-टीले
(इन्हें देख) मैं अचम्भे में पड़ गया
पहाड़ की तराई में नई कोपलें
मेरे मन में शान्ति छा गयी

ले ही चलना है तो ले चलो
नदी पार-देश की सीमा से परे
बुलाना ही है तो बुला लो
इचा फूल का रसास्वादन करने

(58)

आलाङ दिसुम रेलाङ हारा मातालेना — हम धरती पर बढ़े बड़े हुए

आलाङ दिसुम रेलाङ हारा माता लेना — हम धरती पर बढ़े, बड़े हुए
मोदरे गातिञ लाङ इनुङ केना — प्रिय, हम एक ही साथ खेले थे
जुड़ि-जुड़ि होलाङ सेने बेड़ाए — हम साथ-साथ चले फिरें
पानति रे सांगाञ लाङ दुबे केना — हम एक पांति में बैठे थे

चिकान काजि बोलेम आयुम लेदा — तुमने कौन-सी ऐसी बात सुनी
हाड़ाद सुकु लेकाम हाड़ादेन जाना — (कि) तीते कद्दू की तरह हो गयी
आमागा: मांडा गेहोञ पिचा तानि: — मैं तो तुम्हारा ही अनुगामी हूँ
(मेन्दो) दुबिरा: दुमबु लेकाम रिकाकिञा — तुमने मुझे गंदगी ही समझ लिया

चमपा बा तिमबुरुब जी रेड़ा तानि: — चम्पा की सुगन्धि शान्ति देने वाली
का होञ हाड़ादाञ सिबिल गेआ — मैं तीता नहीं सरस ही हूँ
चिलकाए: मेनते दोञ नेका केना — कैसी है यही देखना चाहता था
मेनदो जी रेम केटे: केदा — (लेकिन) उसे ही तुमने जी में रख लिया

(59)

बाले: बाले: रेलाङ सोंगोति गातिञ — बचपन के हम संगी हैं

बाले: बाले: रेलाङ सोंगोति गातिञ — बचपन के हम संगी हैं
मोदेरे गातिञ लाङ इनुङ केना — प्रिय, हम साथ खेले थे
जुड़ि-जुड़ि होलाङ सेने बेड़ाए — हम साथ-साथ चले फिरे
पानति रे सांगाञ लाङ दुबे केना — हम एक पांति में बैठे थे

मोयोद काजिगेलाङ काजि केना — हम एक ही बात कहते थे
मोयोद काजितेलाङ बापागाड़ाओजाना — (किन्तु) एक ही बात से हम बिगड़ गये
पानति रे सांगाञ लाङ दुबे केना — हम एक पांति में बैठे थे
दुबिरा: दुमबु लेकाम रिका किञ — तुमने मुझे गंदगी ही समझ लिया

जी रेन उड़ुः चांडाल का बुगिनि:तानिः	मनकी चिंता भली नहीं
जुलेतान सेंगेलेरे खादिड़िन लेका	धधकती आग में कूदने को जी करता है
निदा सिंगि बोलेञ उड़ुः ताना	मैं दिन रात चिंतित हूँ
आमागाः नासिब राम बांका जाना	राम, तुम्हारा नसीब टेढ़ा पड़ गया

(60)

एंगाञ आपुञ दुलाड़ा रे (जब) मां बाप का प्यार था

एंगा आपुञ दुलाड़ा रे	जब मां बाप का प्यार था
हागा मिसि सुगाड़ा रे	भाई बहन सुन्दर थे
हुड़िङ सुकुञ ताइ केना रे	मैं कितना सुखी था
बुगिन कुमुञ कुमुइ निदा रे	कितने मधुर स्वप्न देखे
जोबेञ माराङ जान सेंड़ां जानते	जब मैं बड़ा हुआ, बुद्धि आयी
काञ दुडुम जाना आमाः उड़ु:ते	तुम्हारी याद में सो नहीं सका
जी ताञ दोम कुमबुड़ु केदिञा	तुमने मेरा हृदय चुरा लिया
इपाएः होड़ोमो पारकोम रेगिञा	खाट पर केवल शरीर पड़ा है
आलाए बालाए जी होञ बालाए ताना	मेरा दिल व्याकुल हो उठा है
मांडि उतु का होञ जोमाना	खाने पीने में रुचि नहीं है
जी ताञ दोम कुमबुड़ु केदिञा	तुमने मेरा हृदय चुरा लिया
इपाएः होड़ोमो पारकोम रेगिञा	खाट पर केवल शरीर पड़ा है
हाय विधि मोन पुराताम	विधि, मन की इच्छा पूरी कर दो
नेआ कामि रे होरा आड़ाः ताम	इस काम में रास्ता छोड़ दो
कुड़ाम लुमताना मेददाः ते	आंसुओं से छाती भिंगी जा रही है
बिलका तानाए 'राम' लेल ते	यह देख 'राम' को दया आ रही है

(61)

डिण्डा सोमाए ताइकेना कुंवारापन का समय था

डिंडा सोमाए ताइकेना कुंवारापन का समय था
पुलाइ तेगेम चाबा जाना तुम फूली नहीं समायी थी
पोला ताम दो ना माइना वाले, तुम्हारा पोला
निराल साड़िताना कितना मधुर बज रहा है
माइनाम लानदा ताने गे (और) तुम मुस्करा रही हो

बो: रेदो सुताम बिंडा सिर पर सूत का नेठा है
बिंडा चेतान हासा चाटु नेठा पर मिट्टी का घड़ा
सेन तादाम ना माइना लड़की, तुम चल रही हो
जिड़िब जिड़िब तान जिड़िब-जिड़िब आवाज किए
माइनाम लानदा ताने गे (और) तुम मुस्करा रही हो

मायाङ रेदो नीले साड़ी कमर में नीली साड़ी
साड़ी तादाम ओर तानगे धूल में घिसरी जा रही है
लेलो: तानाम ना माइना तुम ऐसा लग रही हो
कादाल दारु लेका जैसे केले का कोई पेड़ हो
माइनाम लानदा ताने गे (और) तुम मुस्करा रही हो

(62)

जारगि दा: बरसात

आबु आसुल नांगेन हमारे पोषण के लिए
बाबा सुड़ा-सांगेन धान की ये बालियाँ
जारगि दा: हो भाइयों, बरसात--
तेबा: लेना बुगिन आ ही गया
मेनते: काजिताना इसलिए कहता है
कामिपे सोबेन आओ सब काम करो

गोजो: तान को जेटे ते	गरमी से मर रहे
तेताङ तानको दा: ते	प्यास से झुलस रहे
सोबेन को नांगेन	सबके लिए आया है
आउतादा दा: सोंगेते	अपने साथ पानी लिए
मेनते: काजिताना	इसलिए कहता है
कमिपे सोबेन	आओ सब काम करो
साड़िताना रिमबिल	बादल गरज रहे हैं
उयु: ताना आरिल	ओले बरस रहे हैं
सोबेन दिसुम	सारी धरती
होबाजाना बेरेल	गीली हो गयी
मेनते: काजि तानि:	इसलिए कहता है
राम हेरेल	राम (जो सबका) प्रिय है

(63)

इसु दुकु सुकु तेबु तेबा: नाम तादा — अनेक दु:ख सुख के बाद पहुँचे हैं

इसु दुकु सुकु तेबु तेबा: नाम तादा	अनेक दुख सुख के बाद पहुँच पाए हैं
सोना लेकान बा चांडु: मुलु:आकाना	सोने-सा सरहुल चाँद निकल आया है
जानाओबु सुसुनारे सोंगोति गातिञ	प्रिय, हम रोज नाचेंगे-गायेंगे
कारेबु बापागेआ पिरिति सांगाञ	हम एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ेंगे
ने हातु ताला रे बु जोनोमाकाना	इस गाँव में हम पैदा हुए
ओकोए जीदो ओकोए गोजो: मेना: बुआ	कौन मरेगा जीएगा, ऐसे हैं
जानाओ बु सुसुनारे सोंगोति गातिञ	हम रोज नाचेंगे गाएंगे
कारेबु बापागेआ पिरिति सांगाञ	हम एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ेंगे
सोना लेकान बा चांडु सेनो: जान रेदो	सोने-सा सरहुल महीना बीत जाने पर
कारेबु नामेआ रे जादुर सुसुन	जदुर नाच फिर नहीं मिलेगा
जानाओबु सुसुनारे सोंगोति गातिञ	प्रिय, हम रोज नाचेंगे गाएंगे
कारेबु बापागेआ पिरिति सांगाञ	हम एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ेंगे

(64)

हेनदे होड़ोमो जिलिब लेकान तेआउ चेंड़ें

काली चमकीली कोयल पंछी

हेनदे होड़ोमो जिलिब लेकान तोआउ चेंड़ें
दारु-दारु चेंड़ेंम दांड़ां बेड़ाए
नावा सुड़ा दाड़ा जुमबाड़ा बितार
कुहु-कुहु बोलेम रागे बेड़ाए

बिर दारु बाते तोपाताना
गुतुइआञ गालाङेआ ओकोए नांगेन
ने लेकान सुगाड़ा सोमाए फाओ: ताना चेंड़ें
कागेचा हिजु: रुआड़ा बाड़े

आञ लेका गेचिम उडु:ताना
कुहु-कुहु चेंड़ेंम रागे बेड़ाए
आञगा: नासिब 'राम' बांकाजाना
बापारि सेंगेलतेञ ओंडोर ताना

काली चमकीली कोयल पंछी
पंछी, तुम गाछ-गाछ खोजती फिरती हो
नयी कोपलों वाली डाल पर से
तुम कुहु-कुहु गाती फिरती हो

वन के वृक्ष फूलों से लद रहे हैं
मैं किसके लिए माला बनाऊं
पंछी, ऐसा सुअवसर चला जा रहा है
यह फिर से वापस नहीं आएगा

क्या तुम मेरी ही तरह चिंतित हो
(कि) कुहु-कुहु गाती फिरती हो
मेरा नसीब, 'राम,' टेढ़ा पड़ गया
हाय, मैं आग में जल रहा हूँ

(65)

आलाङ दिसुम रेलाङ जोनोम जाना

हम इस देश में जन्में

आलाङ दिसुम रेलाङ जोनोम जाना
पुताम लेका होलाङ जुड़ि जाना
आलाङ गामाए रेलाङ माता जाना
पाराए लेका होलाङ जोता जाना

पुताम लेका होलाङ जुड़ि जाना
मोदेरे गातिञे लाङ सुसुन काराम
पाराए लेका होलाङ माता जाना
आलाङा: जी सोबेन मोदे जाना

मोदेरे गातिञे लाङ सुसुन काराम
कारे गातिञे लाङ बापागेआ
आलाङा: जी सोबेन मोदे जाना
जीदान सुमुङे लाङ आपासुला

हम इस देश में जन्मे
पण्डुक की भांति हमारी जोड़ी लगी
हम इस धरती पर पैदा हुए
हम कबूतर की तरह जुट गये

पण्डुकी की भांति हमारी जोड़ी लगी
हम एक साथ नाचे गाए
कबूतर की हम तरह जुट गये
हमारे मन प्राण एक हो गये

हम एक ही साथ नाचे गाए
अब हम साथ नहीं छोड़ेंगे
हमारे प्राण अब एक हो गये
जिन्दगी भर साथ निभाएंगे

(66)

राबाङ तायोमेतेम हि:आकाना

जाड़े के बाद आए हो

राबाङ तायोमेतेम हि:आकाना — जाड़े के बाद आए हो
राजा रानी लेकाम सामपोड़ोआकाना — राजा रानी की तरह सजकर आए हो
इसु दिनातेहोञ उडु: केना — बहुत दिनों से सोच रहा था
मेनदोम मुलु: लेना बा चांडु: — सरहुल का चाँद तुम निकल ही आए

पुरना पांडु साकाम ओचो:केते — पुरानी पीली पत्तियाँ छोड़कर
नावा सुड़ा साड़ीम ओमेतादा — तुमने नयी कपलों की साड़ी पहनी है
बिरते दारु कोहोञ लेलाउकेना — वन के वृक्षों को देखकर आया
मोएताना बा ताना जो ताना — खिल रहे फूल रहे, और फल रहे हैं

हारिआलि आरा: सुड़ा पिड़ि:लेका — हरियाली और लालिमा का यह सौन्दर्य
चिकान सुनुमेदोम गोसो:आकादा — तुमने कौन सा तेल लगाया है
बिर कोरे बा बुगिन सुगाड़ा सोआन — जंगल में फूलों की सुगंधि
कुड़ाम बितारे रे गुमबुराओ ताना — मेरे अन्तर में घुल रही है

बिर दारु रे राम सोमबोदाकाना — वृक्ष के नीचे राम झुका हुआ है
सिरमा रेन सिङ बोंगाए: जोआरताना — स्वर्ग के सिङ् बोंगा को प्रणाम कर रहा है
बाएआले मेनते गोड़े: रासिका ताना — सरहूल मनाएंगे, मन में इसकी खुशी है
तारा कोतो सारजोम बाए: आसिताना — साखू फूल की एक डाल मांग रहा है

(67)

सामाड़ोम लेका गेको जोगाओ लेदमेआ

सोने की तरह तुम्हें संजोया गया

सामाड़ोम लेका गेको जोगाओ लेदमेआ — सोने की तरह तुम्हें संजोया गया
बाले: मुलु: चांडु लेकाम माता जाना — नये चाँद की तरह तुम बढ़ी
पुरनिमा चांडु: लेकाम मेद मुआड़ां जाना — तुम्हें पूर्ण चन्द्र का मुखड़ा मिला
तुरेतान सिंगि लेकाम मारेसाल केदा — तुमने सूर्य की तरह प्रकाश फैलाया

किताहातु ताला तेदो हाटिआ होरा
पाला: पाला: गेगोम सेने बेड़ाए
हातुआते सिंगि तुरो: गागारि डाड़ि
चेले चेपेले गोम बुरागेआ

लानदा जागार आर होनोर बेड़ा
सिदा रेआ: टायांद गो उड़ु: लेमे
गागारि डाड़ि दोरे आमगे: रागा
आमागा: बादाला दो ओकोए बुरागेआ

गोङ में दिने दोगो तेबा: लेना
डिंडा रेआ: सुकु सोबेन सेनो: जाना
आमागा: जीरेआ: उड़ु: आर मोने
सोबेन हासा रेगे जामा जाना

किताहातु के बीच रास्ते से
तुम 'पल:पल:' आवाज किए चलती हो
गाँव के पूरब गागरी डाड़ी से
तुम छल-छल पानी भरती हो

हंसना बोलना और घूम चलना
तुम पहले की बातें याद कर लो
गागरी डाड़ी तुम्हें ही बुलाएगा
तुम्हारे बदले कौन पानी भरेगा

तुम्हारी शादी के दिन आ गए
कुंवारेपन का सुख चला गया
तुम्हारे मन की अभिलाषाएं
सारी मिट्टी में मिल गई

राम दयाल

दिउड़ि

(68)

तिरंगा ओटाङ जान सिरिमा रे

तिरंगा लहरा उठा आसमान में

राओआन राइज सेनो:जाना — रावण राज्य चला गया
सीता सोती: रूआड़ा लेना — सती सीता लौट आयी
धरती रे, धरती रे — (हमारी) धरती पर, धरती पर
तिरंगा ओटाङ जाना सिरिमा रे — तिरंगा लहरा उठा आसमान में

आखाड़ा नावाबु बाइआ — हम नए अखाड़े बनाएंगे
नावा दुमाङ बु दाबेआ — हम नए मांदर छारेंगे
रासिका रे, रासिका रे — इसी खुशी में, इसी खुशी में
तिरंगा ओटाङ जाना सिरिमा रे — तिरंगा लहरा उठा आसमान में

गाँधी बिरसा ताकिङ — गाँधी और बिरसा को
इलिबु तिलाकिङ — हम इलि अर्पण करेंगे
बोंगा कोचा रे, बोंगा कोचा रे — देव स्थल में, देव स्थल में
तिरंगा ओटाङ जाना सिरिमा रे — तिरंगा लहरा उठा आसमान में

मुक्ति पोरोबो तिर्सिङ — आज मुक्ति का पर्व है
चिना:म हिआतिङ चाकातिङ — हम किसकी चिन्ता करें
सुकु सोमाए रे, सुकु सोमाऐ रे — सुख की बेला में, सुख की बेला में
तिरंगा ओटाङ जाना सिरिमा रे — तिरंगा लहरा उठा आसमान में

(69)

भारत एंगा

भारत माँ

धरती तालाञ मेनेआ चि मानोवा जी ताला — धरती के बीच कहूँ या मानव हृदय के बीच
आमेगेगा मेना: मेआ भारत एंगा — भारत माँ तुम ही बिराजती हो
रामेञ मेनेआ चि गाँधीञ मेने — राम कहूँ या कृष्ण कहूँ
आमागा: होन किङ गे भारत एंगा — माँ वे तुम्हारी ही सन्तान हैं

आमागा: हासा रेगे: जोनोम लेना — तुम्हारी ही मिट्टी में जन्मी थी
जोनोको नागारी रे सीता रानी — जनक नगरी में सीता रानी
सरदार पटेल चि बिरसा भागोआन — सरदार पटेल, बिरसा भगवान
आमागा: दा: तेकिन माता लेना — तुम्हारे पानी से ही पले थे

ओको सोमाए धरती दो डुबा जाना — जिस समय धरती जल पलावित हो गयी
आमा: होन मनु राजा बांचाओ लेना — तुम्हारा ही पुत्र मनु बच निकला था
नावा दिसुम दो बाइ रुआड़ा जाना — नयी धरती का निर्माण
आमागा: कुड़ामेरे भारत एंगा — माँ तुम्हारी ही धरती पर, हुआ था

आटाल डालि लेका लेलो: तना — अटल फूल-सी शोभती है
आमागा: सुपिदेरे राताङ बुरु — तुम्हारे खोपे पर हिमालय पर्वत
रोका तोवा लेका लिंगि ताना — पवित्र दूध-सी बहती है
आमागा: कुड़ामेरे गंगा गाड़ा — तुम्हारी छाती पर गंगा नदी

आमागा: होन कोले तिंगुआकाना — हम तुम्हारे ही पुत्र खड़े हैं
जीरे आम गेले धेआन ताना — मन में तुम्हारा ही ध्यान करते हैं
दुलाड़ाते जोगाओ केम आलेआ: काजि — प्यार से हमारे शब्द रख लो
तेला लेम जोआर ताले भारत एंगा — माँ हमारा प्रणाम ग्रहण करो

(70)

ने हापे — यह मौन

उलिको आमबाराए रे — आम की अमराई में
जोजोको जुमबलाए रे — इमली के झुरमुट में
चि कुइलि काम दुराङे (मेताम) — कोयल तुम गीत क्यों नहीं गाती
किंकोड़ो: काम बानामे — किंकोड़ो: बनम् क्यों नहीं सुनाते

आमदोरे कुदा सुड़ा — तुम भी जामुन की कोंपल
आमदोरे बारु सुड़ा — तुम भी कुसुम की पत्ती
ओकोरे रासिका ताम (मेताम) — तुम्हारी खुशी कहाँ चली गयी
चिमाए रे छाएला ताम — तुम्हारा उमंग कहाँ चला गया

इचा बा रासि रे — इचा फूल के रस में
मुरुद बा दारु रे — पलास फूल के पेड़ में
बा उरु काम बिउरेन (मेताम) — भंवर तुम क्यों नहीं मण्डराते
चि सुकु काम सेकोरेन — मधु तुम क्यों नहीं पास आते

(71)

कोतेम सेन केदा रे — कहाँ तुम चली

चिलका लारि ओटाङे जान — ज्यों बादल उमड़ चले
पाएला तामा: तिसारे जान — तुम्हारा आँचल लहरा उठा
लेचे कोचे मुगुइ:-मुगुइ: — मस्ती चाल, मुस्कान लिए
कोतेम सेन केदा रे — कहाँ तुम चली हो

निदा चिलका तेते: तारे — जैसे चाँदनी रात होती है
आटाल बा ताम सुपिदे रे — तुम्हारे खोंपे पर फूल शोभता है
साएतेम लेले मिसाम होताए — बगले झांकती, पीछे देखती
कोतेम सेन केदा रे — कहाँ तुम चली हो

ओको मुलि आमे सेने — जिधर से तुम निकली
ओंडोरे तान चिमिन मोने — (जाने) कितने ही प्राण जल गये
आनदु पोला झामे झाम — आंदु, पोला की झम-झम आवाज किए
कोतेम सेन केदा रे — कहां तुम चली हो

आलोम सेनो: उकु दानाङ — ऐसा छिप कर चलना ठीक नहीं
गुइउ लेलेमे सानामाङ — सामने झोपड़ी है देखो (कोई देख रहा है)
मुण्डा रामे तादा जानुम — इधर गांव का मुण्डा कांटे डाल दिया है
कोतेम सेन केदा रे — कहां तुम चली हो

(72)

चिआ: ते कामे उदुबेआ — क्यों तुम नहीं बताते

सोना साराम बेदा कि:ञा — सोने की हिरण ने मुझे छला
आमो गेचाम पिचा कि:ञा — तुमने भी मेरा ही पीछा किया
ने राम राइज रानी हाए ओको तिआ तेआ — राम राज्य की रानी कहाँ चली गयी
चिआ:ते कामे उदुबेआ — (कहो) क्यों तुम नहीं बताते

काटा मांडाञ लेले बानो: — पद चिन्ह देखता हूँ, वह भी नहीं है
ओको मुलि दांड़ांञ सेनो: — किधर खोजने निकलूँ
जनक नागारी रेनि: हाए ओकोतिआ' तेआ — जनक नंदनी कहाँ चली गयी
चिअ:ते कामे उदुबेआ — (बता दो) तुम क्यों नहीं बोलते

कुला चि बिङ बुड़ि — बाघ, साँप अथवा भालू (ने उसे खा डाला)
इदिकिआ ओको गाड़ि — (क्या) कोई बन्दर ही इसे ले भागा
जी सोहोचारी सीता हाए ओकोतिआ' तेआ — मेरी जीवन सहचरी कहाँ चली गयी
चिआ:ते कामे उदुबेआ — (मुझे बता दो) चुप क्यों हो

'को मुलि बिरे सोंगा — यहाँ इस जंगल के बीच में
ओको रिआ ओको बोंगा — मैं किस देवता से पूछूँ
जी हिति सती मती हाए ओकोतिआ' तेआ — प्राण दायिनी सीता कहाँ खो गयी
चिअ:ते कामे उदुबेआ — (मुझे बता दो, चुप क्यों हो)

(73)

आङ्ताना, तुर ताना — भोर हुआ, सूर्योदय हो रहा है

सिङ बोंगा सीते: उडुङ जाना दो — भगवान खेत की ओर निकल गये
दुदुगार जाना दो कोंआसि जाना दो — पूर्वी आसमान में धूल उड़ रहा है
सिम होन चिआब केद, चेंड़ें होन चूँ केद — मुर्गा बोला, पंछी चहके
आङनाम ताना दो मासाकाल ताना दो — बिहान आ रहा है, प्रकाश फैल रहा है

बा सोबेन होयो रे ओटाङ जाना दो — फूलों की गंध हवा में बहने लगी
दुमुर उरु दो, हुरुमसुकु दो — भ्रमर और मधुमक्खियां
जिलिङेन जाना को, जुमुरेन जानाको — कतार बांधे निकली, साथ उड़ चलीं
बा चांडु: हिजु:तान, सुकु सोमाए सेटरेतान — फूल पर्व आ रहा है, सुख समय आ रहा है

मेड़ेद माराड़ां तारान रे गोगेमे — (युवक) तुम लोहे का बैंगा कंधे पर धरो
केटे: कांचि बो:रे दुपिलेम — (युवती) तुम मजबूत टोकरी सिर पर लो
नावा बानदा बाइतेबु ताना दो — हम नया बांध बांधने जा रहे हैं
नावा आड़ि उर तेबु ताना दो — हम नया खेत कोड़ने निकल रहे हैं

(74)

बागेताम आड़िसा, कुदेलाम ने मिसा

बोंगाते ने गाड़ा का तोलो: लेलेमे
होरोते ने होरा का बाइउ: लेलेमे
ने युग रेन राम धेआन तामा: ओकोसा:
बागेताम आड़िसा, कुदेलाम ने मिसा

आमेगे दागे रे दिरिम उपालेआ
आमेगे होएओ रे गुइउम तुरूबेआ
आलोम बोरो:ए उयुगो:, मोसा का मोंड़ेंसा
बागे ताम आड़िसा, कुदेलाम ने मिसा

कामिते नामो:आ दिरि दागे दो
उदाम ते पुराओ:आ जोजना तामे दो
कुमुताम बागेताम, दे ती तारासा:
बागेताम आड़िसा, कुदेलाम ने मिसा

रेंगे: राबाङ नेआते सेनो: का
दुकु दुदुगार नेआते बिरिदका
ओकोआ का तुलो: मोने लेरे खानेसा
बागेताम आड़िसा, कुदेलाम ने मिसा

आलस्य छोड़ो एक बार कुदाली धरो

प्रार्थना से यह नदी बंधने को नहीं है
प्रतीक्षा से यह राह तैयार होने को नहीं है
इस युग के राम, तुम्हारा ध्यान किधर है
आलस्य त्याग दो, हाथ में कुदाली लो

तुम्हीं पानी में पत्थर तैराओगे
तुम्हीं आसमान में घर बनाओगे
बिचलित मत हो, बार-बार गिरोगे
आलस्य त्याग दो, हाथ में कुदाली लो

काम करने से ही पत्थर में पानी मिलता है
उद्यम से ही योजनाएँ पूरी होती हैं
स्वप्न छोड़ो हाथ बढ़ाओ
आलस्य त्याग दो, हाथ में कुदाली लो

भूख और गरीबी यहाँ से चली जाएं
दु:ख और विपत्तियाँ यहाँ से उठ जाएं
क्या है ऐसा जो परिश्रम से नहीं टला
आलस्य छोड़ो, हाथ में कुदाली लो

(75)

ने तिरि-रिरि रुतु साड़ि रे

रूतु ओकोए ओरोङे
ओको दिरि टिकुरा रे, ओहोरे.....
जी ताञा: चिते हुलुइ हुलुइ रे
ने तिरि रिरि रुतु साड़ि रे

हुलु हुलु होएओ रे
चिलका दा: ती ते बिसिल लेरे, ओहोरे.....
होका होका हिजु: सुड़ि रूड़ि रे
ने तिरि रिरि रूतु साड़ि रे

बाँसुरी के इस तिरि रिरि स्वर में

कौन बाँसुरी बजा रहा है
किसी चट्टान के ऊपर से
मेरा मन क्यों झूमने लगा है
बाँसुरी के इस तिरि रिरि स्वर में

मंद मंद हवा में
जैसे कि पानी में लहरें उठी हों
रुक रुक कर आवाज आ रही है
बाँसुरी के इस तिरि रिरि स्वर में

मायाङ रे गागारि — कमर में कलश लिए
तिंगु गिड़िन जान नागारी, ओहोरे.... — युवती चलते चलते रूक गयी
दुंबोरो काए: टोरे रासि रेगि: रे — मधुमक्खी भी मधु की रक्षा मे अक्षम है
ने तिरि रिरि रुतु साड़ि रे — बाँसुरी के इस तिरि रिरि स्वर में

रूतु ओरोङ होका लेमे — बाँसुरी बजाना बन्द कर लो
एला हो नेते हेता लेमे, ओहोरे..... — वादक, इधर जरा नजर फिराओ
ने 'मुण्डा' जामा जाइ में जुड़ि रे — (कवि) मुण्डा को भी साथ कर लो
ने तिरि रिरि रूतु साड़ि रे — बाँसुरी के इस तिरि रिरि स्वर में

(76)

आकाड़ा रे नावा मानदोड़ी — अखाड़े में नया मंदोड़ी

आयु में मे दुराङ काड़ि — गीतकार की गीत कड़ी को सुनो
सुआंड़ाए में दुमाङ साड़ि — माँदर के बोलों को पहचानो
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — अखाड़े में नया मंदोड़ी (आया है)
आयार तायोम आलोम चांगाए' थाउड़ि — कदम आगे पीछे न उठे
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — अखाड़े में नया मांदर वाला (आया है)

बानो: दुड़ा बा चाण्डु: — (यहाँ) सरहुल की धूल नहीं है
नेरे लोसोद काण्डु-माण्डु — यहाँ भादो का कीचड़ है
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — आखाड़े में नया मंदोड़ी (आया है)
टोरेम जादुर चि कारम लाजाड़ि — जदुरा है या करमा है इससे पहचानो
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — अखाड़े में नया मांदर वाला (आया है)

आचोड़ों चिमिआङ तामा: — तुम्हारा आंचल जितना है
पुरा: तेला आलोमा: — उससे अधिक गीत मत झोंकना
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — अखाड़े में नया मंदोड़ी (आया है)
आलोम बागे ताला कारम डारि — देखना अखाड़े के देवता को भूलना नहीं
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — अखाड़े में नया मांदर वाला (आया है)

आतोमेते हातु जाड़ि — अखाड़े के किनारे गाँव भर के लोग हैं
हुड़िङ माराङ जोका जुड़ि — छोटे बड़े सभी आए हैं
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — अखाड़े में नया मंदोड़ी (आया है)
दुराङे आए: ने:गे ने मुण्डारी — गीतकार मुण्डा गीत गाने ही वाला है
आकाड़ा रे नावा मानदोड़ि — अखाड़े में नया मांदर वाला (आया है)

(77)

हाटिआ हातु दोरे हिले हिले

हटिआ गाँव काँपता सा दीखता है

राँची सांडाका दो झिले मिले
राँची की सड़क झिल मिला रही है

पुण्डि सायोबे को साटोब-साटोब
गोरे साहब खटाखट चल रहे हैं

हाटिआ हातु दोरे हिले हिले
हटिया गाँव काँपता सा दीखता है

रेजा कुलि दोरे जिड़िब जिड़िब
रेजा कुली सट सटकर चल रहे हैं

पुण्डि सायोब को साटोब-साटोब
गोरे साहब खटाखट चल रहे हैं

हाटिआ सेरेङ तेको सेटेरकेदा
(वे) हटिया के चट्टानों की ओर आ गए

रेजा कुलि दोरे जिड़िब-जिड़िब
रेजा कुली सटसट कर चल पड़े

हाटिआ हांगि दोको हाड़ागु केदा
वे हटिया के खेतों में उतर आये

हाटिआ सेरेङ तेको सेटेरकेदा
वे हटिया के चट्टानों की ओर आ गये

दिरि हुटुबदो हांदिड़िजाना
पत्थर और चट्टान जड़ से उखड़ गये

हाटिआ हांगि दोको हाड़ागुकेदा
वे हटिया के खेतों में उतर आए

हाटिआ दुड़ा दोरे ओटाङ जाना
हटिया में धूल ही धूल उड़ने लगी

दिरि हुटुबदो हांदिड़िजाना
पत्थर और चट्टान जड़ से उजड़ गये

होरोतान बोंगा होको हारे निरकि:आ
वहाँ के देवता को निकाल बाहर किया

हाटिआ दुड़ा दोरे ओटाङजाना
हटिया में धूल ही धूल उड़ने लगी

जांगितान देवता होको दालेकुल कि:आ
वहाँ के रक्षक को उन्होंने मार भगाया

(78)

ओकोए तीते काजिञ कुले

किससे बात भेजूँ

हिजुगाञे: मेन तुकादा
आऊँगा कह कर

ओड़ा:ए: बागे तादा
वे घर छोड़ गये हैं

बागे तिआञ निआ इदो
उसे छोड़ आया हूँ

काचि: टोर जादा
इसकी उन्हें खबर भी है या नहीं

गाड़ा पेरे: आकाना
नदी भर आई है

ओड़ा: जोरो ताना
घर चू रहा है

पाचिरि डासाओ ताना
दीवाल धस रही है

ओकोए तीते काजिञ कुले
किससे बात भेजूँ

गाड़ा पेरे:आकाना
नदी भर आयी

आए: सेनो: तायोमेते	उनके जाने के बाद
गामा हिजु: लेना	जोरों से पानी बरसा
आड़ि कुण्डि गोड़ा पिड़ि	खेत-दोन मैदान-टाँड़
दा: लिंगि जाना	पानी ही पानी भर गया
होरा लोसोदाकाना	रास्ते में कीचड़ भर गया
चानदाए ओटा: जाना	छप्पर उजड़ गया
हाए बुसु: ओटाङजाना	हाय पुआल उड़ गया
ओकोए तीते काजिञ कुले	किससे बात भेजूं
होरा लोसोदाकाना	रास्ता कीचड़ में भर गया
जान दारु जो रेचा	वे फल तो नहीं
बाको:ञ बाइ लेका:	कि अंकुश बनाऊँ
ओलेञ इतुआन रेचा	पढ़ने लिखने भी तो आता नहीं
लिकाञ कुल लेका:	कि पत्र लिखूं
नांड़ि कोटोङाकाना	रास्ता लताओं में बंध गया है
दिरि बिदाकाना	रास्ते में पत्थर गाड़ दिये गये
हाए जानुम रामाकाना	कांटे बिछा दिये गये
ओकोए तीते काजिञ कुले	किससे बात भेजूं
नांड़ि कोटोङाकाना	रास्ता लताओं से बन्ध गया है
ने लारिञ काजि लि: रे	यदि इस बादल में कहूँ
'कोरे: बेदा किञ रे	कहीं रास्ते में खो जाए
ने होयो होनाङ मेनदो	इस हवा का क्या भरोसा
ती बानो: ताए: रे	इसके तो हाथ ही नहीं है
इसुञ कुलि ताना	मैं बहुत पूछ रही हूँ
आकाल बाकाल ताना	मन में व्याकुलता बढ़ रही है
जी लेआ गिड़ि ताना	दिल गला जा रहा है
'मुण्डा' बोले: हे लेरेचि	मुण्डा भी हां करे तब तो
इसुञ कुलि ताना	बहुत पूछ रही हूँ

हिजु: राबाङ चाण्डु: कोलोम कुमुते

ने जेटे काले-काल
ने लोलो-बाले-बाल
सातिङ दारोमेआलाङ बासि माण्डि ते
हिजु: राबाङ चाण्डु: कोलोम कुमुते

हासा जा: दिरि जान रे
दिरि जा: गेरा जान रे
सातिङ दारोमेआलाङ केटे: कुड़ांमते
हिजु: राबाङ कोलोम कुमुते

चिमिन चेंड़ें को हिजु:
बिर बुड़ि गाड़ि को हिजु:
होसोड़ो कोआलाङ एटा: चारा ते
हिजु: राबाङ चाण्डु: कोलोम कुमुते

जू सेनो:म इसु हेड़ाजान
होन जा: आमको नामताना
हिरा माता कोमे रासिका मोनेते
हिजु: राबाङ चाण्डु: कोलोम कुमुते

अगहन के भरपूर खलिहान की याद में

यह कल-कल कड़ी धूप
यह गर्मी और पसीना
बासी भात खाकर हम इसे सह लेंगे
अगहन के भरपूर खलिहान की याद में

मिट्टी भी अगर पत्थर हो जाए
पत्थर भी अगर लोहा बन जाए
हम छाती कड़ी कर इसका सामना करेंगे
अगहन के भरपूर खलिहान की याद में

कितने पंछी अनाज पर उतरेंगे
कितने बाघ भालू आयेंगे
इनका हम अलग इन्तजाम करेंगे
अगहन के भरपूर खलिहान की याद में

जाओ बड़ी देर हुई
बच्चे तुम्हें खोज रहे होंगे
उत्साहित मन से उन्हें बड़ा करो
अगहन के भरपूर खलिहान की याद में

लेलेमे लेलेमे तीरे गेरा बेरा रे

देखो हम हथकड़ी लिए आये हैं

बुरु दागे छाले छाले — रे पहाड़ी झरने
चिमिनेचिम साले बाले — तुम कब तक छलछलाते रहोगे
इदि मेआले, सुतु: मेआरे — तुम्हें हम बाँध कर ले चलेंगे
लेलेमे लेलेमे तीरे गेरा बेरा रे — देखो हम हथकड़ी लिये आये हैं

सोना नागारी रानी — स्वर्णपुरी की रानी
आयुमानाए: ताम काहानि — तुम्हारी कहानी सुन चुकी है
कोतेम निरेरे, चिमाए तेम सेने रे — कैसे बच निकलोगे, कहाँ भागोगे
लेलेमे लेलेमे तीरे गेरा बेरा रे — देखो हम हथकड़ी लिये आए हैं

झिलि मिलि गितिल पिड़ि — झिल मिल करने वाली मरुभूमि
सेंगेलेम उलाए चि घाड़ि — तुम कब तक आग उगलोगी
ओते तामा: रे, सामाड़ोम ले हेरे रे — तुम्हारी धरती पर हम सोने की खेती करेंगे
लेलेमे लेलेमे तीरे गेरा बेरा रे — देखो हम हथकड़ी लिये आए हैं

कुइलि रे लाङे छाङे — तुम भी वन की कोयल
आकाड़ा रे काम दुराङे — कब तक अखाड़े से दूर रहोगी
तिरि रिरि रे , दुराङ ले तोले रे — हम अपनी बांसुरी में तुम्हारा स्वर भर लेंगे
लेलेमे लेलेमे तीरे गेरा बेरा रे — देखो हम हथकड़ी लिये आए हैं

विश्वनाथ

चितरामू

[illegible]
[illegible]

(81)

कुड़ि होन जोनोम दो आड़ांदि नांगेन	कन्या का जन्म शादी देने के लिए
बा बुरु नांगेन गे सिमे: थोलाकाना	सरहुल और बुरु के लिए ही मुर्गा बंधा है
बाइ सिमे: थोताकाना	भाई, मुर्गा बंधा है
माण्डोआ नांगेनगे कोनेआ दुबाकाना	मड़वा के लिए ही कन्या बैठी है
बाइ, कोनेआ दुबाकाना	भाई, कन्या बैठी है
सिमे: थोलाकाना बोंगाइ नांगेन गे	मुर्गा बंधा है बलि देने के लिए
बाइ, बोंगाइ नांगेन गे	भाई, बलि देने के लिए
कोनेआए: दुबाकाना आड़ांदि नांगेन गे	कन्या बैठी है शादी देने के लिए
बाइ आड़ांदि नांगेन गे	भाई, शादी देने के लिए
बोंगाइ नांगेन गे साकाम रे सिंदुरि	बलि देने के लिए ही पत्ती में सिन्दूर है
बाइ, साकाम रे सिंदुरि	भाई, पत्ती में सिन्दूर है
आड़ांदि नांगेन गे किआ रे सिंदुरि	शादी देने के लिए कीया में सिन्दूर है
बाइ, किआ रे सिंदुरि	भाई कीया में सिन्दूर है
सिमा: जोनोम दो बोंगाइ नांगेन गे	मुर्गे का जन्म बलि देने के लिए है
बाइ, बोंगाइ नांगेन गे	भाई, बलि देने के लिए
कुड़ि होन जोनोम दो आड़ांदि नागेन गे	लड़की का जन्म शादी देने के लिए है
बाइ, आड़ांदि नांगेन गे।	भाई, शादी देने के लिए

(82)

आमा: नुतुम ताइजाना	तुम्हारा नाम रह गया
जोआर हे गाँधी बाबा	जोहार हे गाँधी बाबा
आमा: नुतुम ताइजाना	तुम्हारा नाम रह गया
चिमिन जाकेद सिंगि चाण्डु: आर ओते ताइना	जब तक सूर्य और चाँद धरती पर रहेंगे
ने दिसुम रे काम रिड़िञो:	इस देश में तुम नहीं भूले जाओगे

दुलाड़ा भारत एंगा	दुलारी भारत माँ
तिजु लि:आ को उरु लि:आ	कीड़ों से ग्रस्त थी
लेल केते जीरे दुकुजाना दुलाड़ा गाँधी बाबा	यह देश तुम्हें दु:ख हुआ, गाँधी बाबा
निदा सिंगि जी रेम इआम केद	तुम रात दिन रोते रहे
सिंगि लेकाम तुरे लेना	तुम सूर्य की तरह उगे
गोटा दिसुम मासाकालजाना	सारा देश प्रकाशमय हो गया
जेटे लेदाम बिलका जेटे ने दिसुम ताला रे	दया की धूप तुमने फैलाई
आयुर ते सोबेन को लासुर जाना	(ये कीड़े) इसकी गर्मी से मर गये
जी बिलका फिरि तामा:	जीवों पर दया-यही कवच था
सारते जागार खाण्डातामा:	सत्य संभाषण तुम्हारा खडग था
खाण्डा फिरि केदाम ने दिसुम ताला रे	देश में तुमने कवच और खडग घुमाए
गिउ: तेको निर गिड़ि जाना	(शत्रु) शर्म से भाग गये
सोना लेकान मेदद: ताम	तुम्हारे आँसू सोने-से (बहुमूल्य) थे
गाड़ा लेकाम लिङगि केद	तुमने उन्हें नदी की तरह बहाया
मेदद: ते चापि कि:आम, भारत एंगा	(उन्हीं) आँसुओं से माँ को पवित्र किया
चेतान रे तिरांगा ओटाङ जाना	तिरंगा आसमान में फहर उठा

(83)

जोआर हे भारत एंगा जोहार हे भारत माता

जोआर हे भारत एंगाञ	जोहार, हे भारत माता
सोना लेकान दुलाड़ा एंगाञ	सोने-सी प्यारी माँ
आमा: नुतुम दिसुम-दिसुम	तुम्हारा नाम देश देश में
बा लेका सुगाड़ा सोआन ओटाङ बिउर तान	फूलों का गंध-सा उड़ रहा है
दुलाड़ा एंगाञ	दुलारी माँ

गाड़ा कोतेम हिसिराकाना	नदियों से शृंगारित हो
बुरु कोतेम छोतोरिआकाना	पहाड़ों से घिरी हो
सोना लांका सोंगे लेकाए: जापागा काना	स्वर्ण लंका पड़ोसिनि-सी खड़ी है
दुलाड़ा एंगाञ	पास में प्यारी माँ
आमा: नुतुम दिसुम-दिसुम	तुम्हारा नाम देश देश में
बा लेका सुगाड़ा सोआन ओटाङ बिउर तान	फूलों का गंध-सा उड़ रहा है
दुलाड़ा एंगाञ	दुलारी माँ
रामायण रा: होयो गामा	रामायण में वर्णित आँधी और तूफान
महाभारत रा: जेटे लोलो	महाभारत में उल्लिखित धूप और गर्मी
सुगाड़ा होड़मो रेम पाचाओ गिड़ि तादा	अपने शरीर में तुमने पचा डाली है
भारत एंगाञ	भारत माँ
आमा: नुतुम दिसुम-दिसुम	तुम्हारा नाम देश देश में
बा लेका सुगाड़ा सोआन ओटाङ बिउर तान	फूलों का गंध-सा उड़ रहा है
दुलाड़ा एंगाञ	प्यारी माँ
ने वृन्दाबिर रेगे	यहीं के वृन्दावन में
ने कुंजाबिर रेगे	तुम्हारे ही कुंजवन में
उरि: गुपि लो: कृष्ण जी रुतुइ: ओरोङ केना	गाय चराते कृष्ण ने बाँसुरी बजायी थी
दुलाड़ा एंगाञ	प्यारी माँ
आमा: नुतुम दिसुम-दिसुम	तुम्हारा नाम देश देश में
बा लेका सुगाड़ा सोआन ओटाङ बिउरताना	फूलों का गंध-सा उड़ रहा है
दुलाड़ा एंगाञ	प्यारी माँ
नेरे गेआ गीता पुरान	यहीं पर गीता पुराण है
नेरे गेआ उपुन वेद	यहीं पर चारों वेद हैं
आमा: दुलाड़ा कोयोङ रेगे	तुम्हारी ही गोदी पर
दुलाड़ा एंगाञ	प्यारी माँ
आमा: नुतुम दिसुम-दिसुम	माँ, तुम्हारा नाम देश देश में
बा लेका सुगाड़ा सोआन ओटाङ बिउर तान	फूलों का गंध-सा उड़ रहा है
दुलाड़ा एंगाञ	प्यारी माँ

ने मागे चाण्डुः हिसि तुरिआ हुलाङ

इसी छब्बीस जनवरी के दिन

आबुआः दुलाड़ा भारत एंगा
तीरे बेरा काटारे छानदि
ताइकेनाएः इसु दिन
ताइकेनाएः हो जेहेल होड़ो लेका
दासि लेका हो कामिड़िं लेका
निदा सिंगि जी रेः दुकु लेना

हमारी दुलारी भारत माँ
हाथों में हथकड़ी पैरो में बेड़ी
बहुत दिन पहनी थी
वह बंदी की तरह थी
नौकरानी की तरह थी
रात दिन मन में दुखी थी

ने मागे चाण्डुः हिसि तुरिआ हुलाङ
राड़ा जानाएः हो बुसाड़ा जानाएः
दुलाड़ा सुगाड़ा भारत एंगाः
चेतान रे तिरांगा ओटाङ जाना
सोबेन कोआः जाए-जाए काजि
सिरमा जाकेद तायुर गिड़ि जान

इसी छब्बीस जनवरी को
बंधन टूट गये, दासता छूटी
हमारी माँ की धरती पर
तिरंगा फहर उठा
सबकी सम्मिलित जय वाणी से
आसमान गूंज उठा

कोना-कोना रेन सोबेन होड़ो कोरे
ऊब-ऊबरे नावा पेड़ेः
बिजिलि लेका जुले जाना
तिरांगा चाओंआर साब केते
राम लेका हो जिरे जाःइआ
दुलाड़ा सुगाड़ा भारत एंगा

कोने कोने के लोगों के
रोम की रोम में नयी शक्ति
बिजली की भांति दौड़ गयी
तिरंगा चंवर हाथ में लेकर
राम की तरह उसे झल रहे हैं
दुलारी, अच्छी भारत माँ

ने लेकान सुगाड़ा सोमाए नाम केते	ऐसा सुअवसर पाकर
काबु उसारेन हागाको	भाईयों हम पीछे नहीं हटेंगे
आयार तेबु चांगाएआ	हम आगे ही बढ़ेंगे
ने हिमालय बुरु चुटि	हिमालय की चोटी
दिसुम रे होएः नुतुमाकाना	धरती पर नामी है
उसार कोःते काबु निसारे	पीछे हटकर नहीं करेंगे गौरव हानि
हातु रेन सोबेन होड़ो	गाँव-गाँव के सभी आदमी
इतुनाबु होबु सेड़ांनाबु	विद्या सीखेंगे, बुद्धिमान बनेंगे
चेतान तेबु राकाबा	ऊपर ही उठेंगे
नावा-नावा कामि होराते	नयी राह पर चलेंगे
हेरेआबु होबु बिदेआ	(खेतों को) जोतेंगे बोएंगे
दिसुम केबु पुंजिआ	देश को समृद्ध बनाएंगे
हातु-हातु रे पंचाइट बाइकेते	गाँव गाँव में पंचायत बनाकर
चरखा ताकली होबु साबेआ	चरखा तकली चलाएंगे
रेंगेः दुकुबु हारिआ	भूख और गरीबी को भगाएंगे
ताइनाबु सोबेन कोलोः दुलाड़ाते	सब हिल मिलकर रहेंगे
राम राइज होबु बाइआ	(इस तरह) राम राज्य कायम करेंगे

(85)

ताबु हातु पांचाइटि — हमारा ग्राम पंचायत

ओरे ताबु हातु पांचाइटि	हमारा ग्राम पंचायत
ओरे ताबु हातु पांचाइटि	हमारा ग्राम पंचायत
नेआतेको टेकाओ लेदा सिदा नाङ को राइज	पहले लोग इसी से युग टिकाए थे
भाइ उड्डुः लेपे	भाइयों, सोचो
एन सोमाए ओड़ोःएः हिआकाना	वही समय फिर आया है
भाइ, लेलीपे	भाइयो, देखो
एन सिंगि ओड़ोःएः तुराकाना	वही सूर्य फिर उगा है

नेरे बानो: घूस-फूस	यहाँ घूस फूस नहीं है
नेरे बानो: होपोसोड़ो	यहाँ असत्य नहीं है
सारतिआर इमान नेरे दालोबा काना	सत्य और ईमान की लता यहाँ फैली है
भाइ, उड्डु: लेपे	भाइयों, सोचो
एन सोमाए ओड़ो:ए: हिआकाना	वही समय फिर आया है
भाइ, लेलीपे	बंधुओं, देखो
एन सिंगि ओड़ो:ए: तुराकाना	वही सूर्य फिर उगा है
काबु सेना काचाइरिते	अब हम कचहरी नहीं जाएंगे
काबु सेना उकिल मुनसि	अब हम वकील मुन्सी नहीं पकड़ेंगे
नेंरेगे बिचारो:आ, दा:आर तोवा बिनगा-बिनगा	यहीं पर दूध-पानी अलग होगा
भाइ, उड्डु: लेपे	भाईयों, सोचो
एन सोमाए ओड़ो:ए: हिआकाना	वही समय फिर आया है
भाइ, लेलीपे	भाइयो, देखो
एन सिंगि ओड़ो:ए: तुराकाना	वही सूर्य फिर उगा है
काए: लेल राजा राइति	यह नहीं देखता कौन राजा कौन प्रजा है
काए: चिना: किसाड़ां रेंगे:	यह नहीं पहचानता कौन धनी कौन गरीब है
आए: नांगेन सोबेन होड़ोबु बाराबारि: गेआ	इसकी आँखों में हम सभी बराबर हैं
भाइ, उड्डु:लेपे	भाइयों, सोचो
एन सोमाए ओड़ो:ए: हिआकाना	वही समय फिर आया है
भाइ, लेलीपे	भाइयों देखो
एन सिंगि ओड़ो:ए: तुराकाना	वही सूर्य फिर उगा है

(86)

सिदा दोलाङ ताइकेना पहले (जब) हम साथ थे

सिदा दोलाङ ताइकेना पहले (जब) हम साथ थे
सुगा लेका होम जागार केना तुमने सुग्गे की तरह बातें की थीं
इना काजि को जीरे रोगे जाना वे बातें मन में बिंध गयी
सुगा रे इन काजि को काहो रिड़िङो सुग्गे, वे बातें भूली-नहीं जा सकती

आटा-माटा बिर को ताला घने जंगल के बीच
दुब केनालाङ कुदा सुबा हम जामून पेड़ के नीचे बैठे थे
मोगो-मोगो बाको सोआन लेना फूलों की भीनी भीनी गंध उड़ी थी
सुगा रे इना ठांओं दो कागे रिड़िङो सुग्गे, वह स्थान भूला नहीं जा सकता

बिर कोरे बुरु कोरे पहाड़ और जंगल में
हुरुम सुकु लेका होनोर तान लो: (हम) मधुमक्खी की तरह घूमते हुए
दुराङ-दुराङ ते बालाङ गुतु केना गीत गा-गा कर फूल की माला पिरोए थे
सुगा रे उड़ु: लेरे कुड़ाम हानदिड़ि ताना सुग्गे, वह सब सोच कर छाती फटी जाती है

बिर को गाड़ा ताला रे बन के बीच नदी के पानी में
इनुङ-इनुङ होलाङ रेआड़ा केना हम खेल-खेल कर नहाए थे
हाइ लेका होलाङ ओएआर बेड़ा केना मछलियों की तरह तैरे थे
सुगा रे इआमते जी दो लेआङ गिड़ि ताना सुग्गे, रो-रो कर जी गला जा रहा है

आमा: हेड़ेम जागार को तुम्हारी मधुर वाणी
आञा: जी रे उड़ु: केरे मन में जब याद आती है
सुइ गुतु हो जीरेञ गुतुताना (तो) लगता है मन में सूई चुभ रही है
सुगा रे जीदान रे काहोञ रिड़िङेआ सुग्गे, जीवन भर नहीं भूलूँगा

निदा दोरोञ कुमु मेआ	रात में मैं तुम्हें स्वपन में देखता हूँ
सिंगि दोरेञ उड्डु: मेआ	दिन को मैं तुम्हें याद करता हूँ
काटा सुबा सोबेन नुबा: जाना	(लगता है) आँखों के आगे अंधेरा छाया है
सुगा रे दुब तिंगुन कारे मोनिञा	सुग्गे, उठने बैठने में मन ही नहीं लगता

(87)

पंचवर्षीय योजना

पंचवर्षीय योजना

ने आबु दिसुम रे	हमारी धरती पर
मोएओद बोंगाए: तुरा काना	एक देवता उगा है
इनि: हेके पंचवार्षिय योजना	वह पंचवर्षीय योजना है
हागा को बुगि लेका इनि:बु मानातिङ	भाइयो, हम इसे अच्छी तरह मनाएं
काए:जोम मिण्डि मेरोम	यह न भेड़ बकरी खाता है
काए: नाम तोवा सिरनि	(और) न दूध मिठाई ही लेता है
इनि: नाम सोबेन कोलो: दुपुलाड़ा	यह सबसे प्रेम चाहता है
हागा को, देपेंगाते मारबु मानातिङ	भाइयो, हम इसे मिलजुलकर मनाए
ओमाबुआए: काल कारखाना	यह हमें कलकारखाने देगा
जुलाबुआए: बिजिलि	बिजली का प्रकाश देगा
हातु-हातु बाइआ बुआए: साण्डाका	गाँव-गाँव से सड़कों का निर्माण करेगा
हागा को, देपेंगाते मारबु मानातिङ	भाइयो, हम इसे मिलजुलकर मनाए
हातु-हातुरे कुआं डाड़ि	गाँव-गाँव में कूवें और डाड़ी
चिमिन हातु रे रानु ओड़ा:	कई गाँवों में अस्पताल देगा
इतु बुआए: चासा रेआ: बुगिन सेड़ां	खेती के अच्छे तरीके सिखाएगा
हागा को, मानातिङ रे काबु ताएओमेन	भाईयो, हम इसकी सेवा में पीछे नहीं पड़

काए: लेल राजा रानि — यह नहीं देखता कौन राजा–रानी है
काए: चिना: किसाड़ां रेंगे: — यह नहीं देखता कौन धनी–गरीब है
आए: नांगेन बु बाराबारि गेआ — इसकी नजर में हम सब बराबर हैं
महादेव सिंह काजि ताना मारबु मानातिङ — महादेव सिंह इसे मनाने की अर्चना करते हैं

(88)

का सेनो: सेनो: मोनिञा — (यहाँ से) जाने का मन नहीं करता है

हेला रे भोगोमन राजा — हे भगवान, हे राजा
बारसिङ नांगेनेम जोनोम कि:ञा — तुमने मुझे दो दिन के लिए जन्म दिया
दिसुम रेआ: निला खेला सुगाड़ा आर सुकु लेलते — धरती की सुन्दर लीला और सुख देखकर
का सेनो: सेनो: मोनिञ — जाने को मन नहीं करता
नेरेगे हो ताइनो: मोनिञ — यहीं रह जाने को जी करता है
का बिरिदे–बिरिद सानाञ — उठने का मन नहीं करता है

बिर को बुरु कोरे — जंगलों और पहाड़ों में
दारु कोरे हो सुड़ा ताना — बृक्षों में कोपलें निकल रही है
सोआन बा को आलाताना चिलका हो सोआन ताना — फूल खिल रहे हैं कैसा गंध बिखर रहा है
का सेनो: सेनो: मोनिञ — जाने को मन नहीं करता
नेरेगे हो ताइनो: मोनिञ — यहीं रह जाने को जी करता है
का बिरिदे–बिरिद सानाञ — उठने का मन नहीं करता है

बुरु मेला नेएगे पोरबो — मेले और पर्व त्योहार
दिसुम रे हो बिउर ताना — देश में बार–बार आते रहते हैं
निमिन सुकुको ओकोरे होञ बागे तुका: — इतने सुखों को कहाँ छोड़ दूंगा
का सेनो: सेनो: मोनिञ — जाने को मन नहीं करता
नेरेगे हो ताइनो: मोनिञ — यहीं रह जाने को जी करता है
का बिरिदे–बिरिद सानाञ — उठने का मन नहीं करता है

हागा होन कुपुल कोलो:	भाई बन्धु कुटुम्ब परिवार के साथ
माया जालोम तेहोञ तोलेजाना	माया जाल में फँसा हूँ
ने माया ने दिसुम काहोञ बागे दाड़िताना	इस माया के देश को छोड़ नहीं सक रहा हूँ
का सेनो: सेनो: मोनिञ	जाने को मन नहीं करता
नेरेगे हो ताइनो: मोनिञ	यहीं रह जाने को जी करता है
का बिरिदे-बिरिद सानाञ	उठने का मन नहीं करता है
काञ नामताना कोठा आटारि	मैं रहने को कोठे, अटारियाँ नहीं चाहता
काञ नामताना टाका सिका	और न कपड़े पैसे ही चाहता हूँ
गुइउ रे होञ ताइकोए: तेञ आसुलेना	झोपड़ी ही में रहूँगा, भीख मांग खाऊंगा
का सेनो: सेनो: मोनिञ	जाने को मन नहीं करता
नेरेगे हो ताइनो: मोनिञ	यहीं रह जाने को जी करता है
का बिरिदे-बिरिद सानाञ	उठने का मन नहीं करता है

सहदेव

जोजोहातु

(89)

सोमाए, कोरेञ नामेआ समय फिर कहाँ पाऊंगा

ने होड़ोमो आला लेना रे यह शरीर जब खिला था
बा लेकाबु डाण्डिद लेद फूल की तरह हमने खोंसा था
बा सोआन ते दिसुम रुमबुल लेनारे फूल की गंध से यह देश भर गया
सोमाए कोरेञ नामेआ (वह) फिर कहाँ पाऊंगा
मुसिङ नांगेन परिड़ि लेना रे (वह तो) केवल एक दिन के लिए खिला था
सोमाए कोरेञ नामेआ समय फिर कहाँ पाऊंगा

ने होड़ोमो गोसो जाना यह शरीर जब मुर्झा गया
जेताए काको होपोरेना कोई भी पास नहीं आता
दासा लेलते गोनोएः लानदा ताना रे (मेरी) यह दशा देख मृत्यु हंसता है
सोमाए कोरेञ नामेआ (वह) जवानी फिर कहाँ पाऊंगा
तोवा लेका पुरिलेना रे वह तो (क्षण भर के लिए) दूध उबला था
सोमाए कोरेञ नामेआ वह जवानी कहाँ पाऊंगा

ने होड़ोमो उरुडु जाना रे यह शरीर जब झड़ जायगा
जेताए काको उडुःइ जीरे मन में कोई नहीं सोचेगा
लेएल रेको चांगा पारोमेआ रे कोई देख भी ले तो आगे बढ़ जाएगा
सोमाए कोरेञ नामेआ वह समय कहाँ पाऊंगा
सहदेव जीरेः उडुः ताना रे (कवि) सहदेव मन में (यही) सोच रहा है
सोमाए कोरेञ नामेआ वह समय कहाँ पाऊंगा

(90)

मोयोद तुका रेबु जोनोम लेना हम एक घोंसले में पैदा हुए

मोयोद तुका रेबु जोनोम लेना हम एक ही घोंसले में पैदा हुए
माएनो लेका गेबु जागार केना मैना की तरह हम बातें किए
जीनिद होरा ताबु जिलिङ गेआ हमारा जीवन रास्ता बहुत लम्बा है
होरा-होरा जानुम ओमोन काना हमारे रास्ते में कांटे उगे हैं

माएनो लेका गेबु जागार केना
मुसिङ जुदान राटि का मोने ताना
होरा-होरा जानुम रामाकाना
चिका लेका तेबु टुण्डाङेना

आपिर जुदान सोमाए तेबागा काना
हागा मेनतेबु उपुड्डु: ताना
हागा मेनते दो उड्डुगो: गेआ
मुसिङ दिने दोबु बापागे गेआ

आयार ते सेने कोदो सेने पेगे
भोगोमान देंगा ताबुइ: ओमे कागे
जीआर कुड़ाम तेले जोआरापे ताना
जोआर ताले ताबु तेलाए पेगे

हमने मैना की तरह बातें की
एक दिन की जुदाई सही नहीं जाती
हमारे रास्ते में कांटे भरे हैं
हम कैसे आगे बढ़ेंगे

उड़कर अलग होने की बेला आयी है
भाई बन्धु के नाते हम सोचते हैं
भाई कहकर सोचना स्वाभाविक ही है
एक दिन तो हमें अलग होना ही है

आगे चलनेवाले चलते ही रहो
भगवान तुम्हारी सहायता करें
मन से, हृदय से नमस्कार करते हैं
बंधुओं इसे ग्रहण कर लो

(91)

सिङबोंगा उकुआकाना जीरे

भगवान (तुम्हारे) मन में छिपा है

ओते चेतान ओते लातार
दाड़ां तानाम आकाल-बाकाल
सिङबोंगा उकुआ काना जी रे
तुरा कानाए: उड्डु: लेमे नेरे

साराम बुटि सोआन निराल
पिड़िम पिचा आकाल-बाकाल
सिङ बोंगा उकुआ काना जीरे
तुरा कानाए: उड्डु: लेमे नेरे

सहदेवए: काजि ताना
आका माकाए: तुराकाना
सिङ बोंगाए: उकुआकाना जीरे
तुरा कानाए: उड्डु: लेमे नेरे

जमीन के ऊपर जमीन के नीचे
खोजते हो घबराए हुए
भगवान तुम्हारे मन में छिपा है
सोचो वह वहीं उगा है

कस्तूरी की गंध ज्यों
(उसे) मैदानों में ढूँढ़ते हो
भगवान तुम्हारे मन में छिपा है
चिंतन करो, वह वहीं उदित है

(कवि) सहदेव कहते हैं
वह ज्योतिर्मय खिला है
भगवान तुम्हारे मन में छिपा है
ढूँढ़ो, वहीं वह उगा है

बा दोरे लेले नांगेन — फूल तो (केवल) देखने के लिये है

बा दोरे लेले नांगेन बा काना — फूल देखने के लिये खिला है
बा दोरे काबु गोदेआ — फूल हम नहीं तोड़ें
गोद केरे बा सुगाड़ा टुण्डु:आ — तोड़ने पर फूल की सुन्दरता उड़ जायगी
तायोमतेदो काबु नामेआ — फिर तो यह नहीं मिलेगा

सुगाड़ा दो मेद नांगेन मेनागा — (इसकी) सुन्दरता आँखों के लिए है
पारकातेबु लेल हापेआ — दूर से ही (उसे) देख लें
बा सुगाड़ा टुण्डु लेले जीओ टुण्डु:आ हो — फूल-सौंदर्य नष्ट करना जीवन नष्ट करना है
उडु:इ रे बा सुगाड़ा काबु नामेआ — (फिर तो) चाहने पर भी सौंदर्य नहीं मिलेगा

दा: रेआ: चाउडाल पोआगो:आ — यह पानी की डोली है, फूट जायगी
तीते दो काबु साबेआ — हाथ से नहीं छूएं
'सहदेव' एन काजि: काजि ताना — (कवि) सहदेव यह निवेदन करता है
चापुइ रेदो काबु लेलेआ — स्पर्श करते ही यह ओझल हो जायगा

(93)

उरुमेमे एन गोनोए: होरा — पहचानो वही मरण की राह है

हेरा कान जामपा ताला — घेरे में घिरा है
हाएआ चारा एला दोला — (फिर भी) लोभ चलो चलो कहता है
चारा हाएआ एनागे माराङ गारा — उसे चाहना ही बड़ा ग्रह है
उरुमेमे एन गोनोए: होरा — पहचानो वही मरण की राह है

सामाकाना डुण्डि मोचा — डुंटी का मुंह खुला है
जानुम ताला पेटे: कुचा — काँटों से ढंका है
तेरे गाण्डुम दुब केरे गे गारा — देखो, यहाँ बैठना ही तुम्हारा ग्रह है
उरुमेमे एन गोनोए: होरा। — पहचानी वही मरण की राह है

चारा रे गोनोए: दानाङाकाना	(इस) चारे में मृत्यु छिपा है
निदा सिंगि आमगे: लोड़ो ताना	यह दिन रात तुम्हारी ताक में है
इसु दिन ते होराए: लोड़ो ताना	बहुत दिनों से तुम्हारी ताक में है

(94)

बाले:बा चाण्डु: दो मुलु: लेना

सरहुल का नया चाँद उग आया

दिने मुण्डि दोरे तेबा: लेना	(इंतजारी के) दिनों का अंत हो गया
बाले: बा चाण्डु:दो मुलु:लेना	सरहुल का नया चाँद उग आया
बिर रे दारु सोबेन सुड़ा ताना	वन में बृक्षों में कोपल फूटे
पुरना पाण्डु साकाम उरुड्ड ताना	पुरानी पीली पत्तियाँ झर रही हैं
आरा: नावा सुड़ा मोला ताना	नई और लाल कोपलें फूट रही हैं
मोगो-मोगो बा को सोआन ताना	फूलों की भीनी-भीनी गंध उड़ रही है
निलि तुमबुलि को बा चेपे:ताना	मधु-भ्रमर रस चूस रहे हैं
बाएआबु मेनते को रासिका ताना	सरहुल मनाएंगे यही सोच कर खुश हैं
बाते कोतो जोतो तिरुबाकाना	फूलों से डालियाँ झुक गयी हैं
ने मुलु: चाण्डु: गेको जोआर ताना	ये नये चाँद को नमस्कार करते हैं
बाते होयो सोबेन सोआन ताना	फूलों से हवा भी सुगन्धित हुई हैं
कुड़ाम बितारे रे नाबा काना	(सुगन्धि) हमारे हृदय में घुली हुई है
बिर रे दारु को हो जुड़िन ताना	वन के वृक्ष जोड़ी लगा रहे हैं
सुपिद बातेको बा पेरेगेन ताना	खोंपे को फूलों से भर रहे हैं
कुइलि-कुइलिकिङ कुपुलि ताना	कोयल कोयली बात कर रहे हैं
राइसि, बोरोगो किङ सालाताना	(लगता है) राशि वर्ग पर विचार रहे हैं

बाले: दारु सुड़ा रे तोवाउ चेंड़ें

बाले: दारु सुड़ारे तोवाउ चेड़ें
जीरे बिलकागे: दुराङ जादा
दुकु सेंगेल को ने बुगिन चेंड़ें
बिलका दुराङेते: राड़े: जादा

सुकुचि दुकुते दुलाड़ा चेड़ें
दारु चुटिआते: काकाला जादा
तेता नाना साड़ि सुगाड़ा चेड़ें
कुड़ाम बितारे रे: गुमबुराओ जादा

रुतु रुमबुल लेका ने छाएला चेड़ें
जी आर कुड़ाम रे: रुमबुल जादा
कुदा जारोम लेकान हेनदे चेड़ें
गोसोआ कान जी राटि: आला जादा

तीते तोआबो: ने तोवाउ चेंड़ें
ओते सिरमा दोए: थामबुर जादा
जाओगे: दुराङे का तोवाउ चेड़ें
'सहदेव राम' दोए: आरजि ताना

वृक्षों की कोपलों पर कोयल पंछी

वृक्षों की कोपलों पर कोयल पंछी
हृदय को करुण लगनेवाले गीत गा रही है
दुख की आग को अच्छी कोयल
अपने गीत से बुझ रही है

दु:ख से या सुख से प्रिय पंछी
वृक्ष की चोटी से आवाज कर रही है
(अपना) सुरीला-स्वर, प्रिय पंछी
हमारे हृदय में घोल रही है

बांसुरी की कंपन की तरह, यह छैला पंछी
मन और प्राण में कंपन ला रही है
पका जामुन-सी यह काली पंछी
मुझे मन को खिला रही है

मुट्ठी भर की यह कोयल पंछी
जमीन और आसमान दहला रही है
निरंतर गाए यह कोयल पंछी
(कवि) सहदेव राम यही अर्ज कर रहा है

(96)

आतु ताना ने डिण्डा सोमाए

आतु ताना बुआल ताना
ने डिण्डा सोमाए
आतु ताना बुआल ताना
ने डोण्डो होड़ोमो

ढह रहा है कुंवारा समय

बह रहा है, ढह रहा है
यह कुंवारा समय
बह रहा है, ढह रहा है
यह नादान शरीर

आतु ताना इकिर ताला — बह रहा है, गहराई की ओर
ने डिण्डा सोमाए — यह कुंवारा समय
बुआल ताना साड़गिर रे — ढह रहा है प्रपात में
ने डोण्डो होड़ोमा — यह नादान शरीर

सेनो: ताना उडु: लेपे — जा रहा है, सोचो
ने डिण्डा सोमाए — यह कुंवारा समय
बिरिद ताना पाहामेपे — उठ रहा है, समझो
ने डोण्डो होड़ोमो — यह नादान शरीर

(97)

आबुगेआ हागा होन — हम ही भाई बंधु है

आबुगेआ हागा होन — हम ही भाई बंधु हैं
काबु एपेराञा — नहीं झगड़ेंगे
आबुगेआ कुटुम-कुपुल — हम ही कुटुम्ब परिवार हैं
काबु बापागेआ — नहीं छोड़ चलेंगे

ने जोनोम मुसिञ नांगेन — यह जन्म एक दिन के लिए है
काबु एपेराञा — नहीं झगड़ेंगे
ने जीनिद बारसिञ नांगेन — यह जीवन दो दिन के लिए है
काबु बापागेआ — नहीं छोड़ चलेंगे

ताइनाबु सोंगेते — रहेंगे एक में
काबु एपेराञा — नहीं झगड़ेंगे
सेनेआबु मिसाते — चलेंगे साथ में
काबु बापागेआ — नहीं छोड़ चलेंगे

सेनेआबु पानति–पानति चलेंगे हम पांति पांति

सेनेआबु पानति–पानति	चलेंगे हम पांति पांति
बागेआबु जाति–पाति	छोड़ देंगे जाति पाति
कामिआबु सोंगे सांगिते	काम करेंगे साथ–संग में
तोबे ताइनाबु रासिकाते	तभी हम रहेंगे हंसी से खुशी से
कामिआबु सोंगे सांगिते	काम करेंगे साथ संग में
सोबेन कोबु सारिआना	हम सब जानते हैं
उपाए: गेबु सेटेराना	मिथ्या हम आए हैं
मुसिङ दिनबु सेनो: रुआड़ा	एक दिन फिर वापस जाएंगे
लेआङो:आ हासा होड़ोमो	मिट्टी का तन ढह जायगा
मुसिङ दिनबु सेनो: रुआड़ा	एक दिन फिर वापस जाएंगे
हासा होड़ोमो लेआ जानरे	यह शरीर जब गल जायगा
का नामो:आ बादाला रे	बदले में कुछ नहीं मिलेगा
कामिआबु सोंगे सांगिते	काम करेंगे साथ संग में
'सहदेव' काजि ताना	सहदेव यही कहता है
उदामाबु सोंगे सांगिते	काम करेंगे साथ संग में

(99)

भगोआन ओमालेमे निराल रासिका भगवान हम में उमंग भर दो

आले डोण्डो मोनोवा को	हम अनजान मनुष्य
निदा सिंगि काटा सुबा	रात दिन (तेरे) शरण में (हैं)
ओमा लेले निराल रासिका	हम में तुम उमंग भर दो
भागोआन, रासिआकान रासिका	भगवान, रसमय उमंग
दिसुम–सितुम लोलोते	जग की आँच से तपे
आंजेदाकान जी बितार	मुझे मन में
ओमालेमे निराल रासिका	उमंग भर दो
भागोआन, रासिआकान रासिका	भगवान, रसमय उमंग

आमागा: बिलेका दा	तुम्हारी दया का
'सहदेव' आसाराए:	सहदेव प्रार्थी (है)
ओमालेमे निराल रासिका	हममें उमंग भर दो
भागोआन रासिआकान रासिका	भगवान रसमय उमंग भर दो

(100)

आहो ताबु काबु हेपेनदोआ

भाइयों, हम घृणा न करें

हासा होड़ोमो एसेल हेनदे	मिट्टी का तन, काला हो या गोरा
से गेआ हो जी सोबेन	(इसमें बसने वाले प्राण) सब एक है
एसेल हेनदे काबु हेपेनदोआ	काला गोरा कहकर किसी को न दुत्कारें
आहो ताबु काबु हेपेनदोआ	भाइयों, हम आपस में घृणा न करें
सोबेन कोपे सारिआना	दो दिन के लिए किसी को न दुत्कारों
मुसिङ दिनबु रुआड़ा	भाइयों, हम आपस में घृणा न करें
बार सिङ नांगेन काबु हेपेनदोआ	तुम सभी समझते हो
आहो ताबु काबु हेपेनदोआ	(कि) हमारा लौटना निश्चित है
ओते आड़ि पुंजि मेनते	जमीन, खेत पूंजी है इसलिए
होड़ो-होड़ोबु ओपोम ताना	आपस में लेन-देन करते हैं
सेनो: हुलाङ काबु सिपिडेआ	जाने की बेला हम साथ नहीं लेंगे
आहो ताबु काबु हेपेनदोआ	भाइयो, हम झगड़ा नहीं करेंगे
'सहदेव' दुराङ ताना	सहदेव गीत गा रहा है
बुगिन लेकाबु लानदा जागार	(कि) हम एक साथ हंसेंगे बोलेंगे
आबु-आबु सोबेन हागा कोगे	हम सभी आपस में भाई हैं
आहो ताबु-काबु हेपेनदोआ	भाइयो, हम झगड़ा नहीं करेंगे

सागू
चोण्डोर

पुस्तकालय
केन्द्रीय

(101)

जीउ मार लेल जोम मे रे मन, पहचान लो

दिसुम तामा: बिलाकाना तुम्हारा देश फैला है
जीउ मारे लेल जोम मे रे मन निहार लो
ने जोनोम ओड़ो: कारेम नाम जोम यह जन्म फिर से तुम नहीं पाओगे

बुधि-सेंड़ा मेना: तामा: तुम्हारी बुद्धि है, ज्ञान है
मेद लुतुर सोबेन बाइआकाना आँख कान सब कुछ है
ओ आमा: सेंड़ां ते दिसुम लेल जोम मे रे मन, अपने ज्ञान से देश देख लो

इलि आरकि होड़ोमो शराब तुम्हारे शरीर
काटारेआ: छांदि मार राड़ा तामे पैरों का बन्धन है उसे काट दो
नेआ तेगे जीदान तामा: तोलाकाना इसी से तुम्हारा जीवन बंधा है

गाति सोंगोतिको सोबेन को तुम्हारे प्रिय दोस्त
निर बागेता:म काचिम हिआतिङ निकल गये इसकी तुम्हें चिन्ता नहीं
ओ डोण्डो जीउ आलोम ओण्डो पोण्डोन रे मुर्ख मन इतना अनजाना बनो नहीं

जुलेताना सेंड़ां दिआ जानाओ जलता प्रकाश पुंज रे मन
निदा सिंगि आयुम जोममे जीउ दिन रात पहचान लो
उदुबामाए: गुरु जानाओ सेन होरा गुरु रास्ता चलने का ज्ञान देगा

ने ओते दिसुमरे कारेम नामे इस धरती में कहाँ पाओगे
सुकु बेगार पुथि पाढ़ाओ सुख बिना ज्ञान के
जालाङ मे जानाओ तोबेम नामे जोम खोजोगे निरंतर तभी तुम पाओगे

(102)

सोमाए ताञ निरेताना मेरा समय निकला जा रहा है

सोमाए ताञ निरे ताना मेरा समय निकला जा रहा है
जेताए काको काजि कोई नहीं कहता
मार तिंगुन मेरे जरा ठहरो तो
आञ नांगेन हीरा जीरेम आगुआकादा मेरे लिए तुम हीरा लाए हो
आञ तिंगुआकाना मैं प्रतीक्षा में हूँ

जोनोम हुलाञाते	जन्म से ही
आमेञ ओतोञ ताना	तुम्हारे पीछा में हूँ
काम तिंगुनारे	तुम ठहरते ही नहीं
ओ सोना सोमाए, हेता रुआड़ा लेमे	ओ स्वर्ण बेला इधर देखो
काम तिंगुना रे	जरा, क्यों नहीं ठहरते
सिटिआञ ताइकेन रे	जब छोटा था
हासा दुड़ा रेञ इनुञ केना	धूल से खेला
ओ सोमाए ताञा: हारा माता जाना	(और) बड़ा हुआ
ओमादिञाम तिसिञ बा लेकान सोमाए	तुमने मुझे यह फूल सा यौवन दिया
जीरे जुले ताना	(जो) मन में जल रहा है
हाड़ाम सोमाए हिजु: जानरे	बुढ़ापा आने पर
पाण्डु साकामलेका	पीली पत्ती की तरह
गोसो मोरोसो:आ	झड़ेगा-गिरेगा
आचाकाते मुसिञ, जीदान उरुडु:आ	अचानक एक दिन जीवन झड़ जायगा
ओतोञ टुण्डु मेआ	(और) मैं पीछा छोड़ दूँगा
आञा: आञा:म मेनेताना	मेरा मेरा कहते हो
कारे तामागो:आ	यह तुम्हारा नहीं हो सकेगा
सोबेन दानाञो:आ	सब छिप जायगा
होड़ोमो, जीउ निरे बागे मेआ	शरीर, जीव तुम्हें छोड़ देगा
कारेबेन लेपेल एन हुलाञाते	(और) तुम उस दिन से नहीं मिल पाओगे

(103)

बिरसा सिंगि लेकाहोम तुरेलेना

बिरसा तुम सूर्य की तरह उगे

चालाकाद हातुरे बिरसा	बिरसा, तुम चलकद् गाँव में
सिंगि लेकाहोम तुरेलेना	सूर्य की तरह उदित हुए
हारा जाना होम माता जाना	तुम बढ़े, जवान हुए
गोटा नागपुरेम मारेसाल केदा	नागपुर को प्रकाशित किए

सुगुना मुण्डा सिरि जाटि ओड़ा: रे	सुगना मुण्डा की झोपड़ी में
जोनोम गेचाहोम आगुलेद	तुम्हीं तो जन्म लिए थे
इनुङ केनामे गाति कोलो:	साथियों के साथ खेले थे
हासा दुड़ा रे ओरोल पोरोल	मिट्टी में धूल-धूसरित
माता जानाम सेले-बोले	बढ़े तुम बड़े हुए
पाढ़ालो केनाम क-क रा: किताब	तुमने ककहरे की किताब पढ़ी
नाम केदाम सेंड़ां मुण्डि	मिला वहीं ज्ञान सूत्र
चेला तामा: हो गुदु-गुदु	चेले तुम्हारे असंख्य हुए
बानो: तामा: हो बाइरि बोरो	तुममें दुश्मन का डर नहीं रहा
बोरसा तामा: हो आ: सार कापि	भरोसा तीर तलवार का
हारातिङ जानाम डोमबारि बुरु रे	(खेद है) हार गये तुम डोम्बारी में
मायोम तामा: होको जोरो केदा	(दुश्मनो ने) तुम्हारा खून की धारा बहाई
बाइरि कोदो रेको साबे केदमेआ	बैरी ने तुम्हें बांधा
तीरे तामा: हो मेंड़ेद बायार	हाथ में लोहे की बेड़ी (पहनाई)
जी रे तामा: हो बानो: उड़ु:	तुम्हारे मन में (इसकी) सोच नहीं
दिसुम नांगेनेम दांड़ेंन जाना	तुमने देश के लिए अपने को बलि किया
नुतुम तामा: होम रोआ तुकाद	तुमने अपना नाम रोप दिया
काले रिड़िङेआ जानाओ हुलाङ	तुम्हें कभी नहीं भूलेंगे
दुराङ तानाले तिरिङ जाकेद	आज भी तुम्हारे गीत गाते हैं
जोआराम तानाले जानाओ हुलाङ	हम तुम्हें नमस्कार करते हैं
कुमु लेका होले जागार ताना	स्वप्न की तरह हम बात कर रहे हैं
नुतुममेचा होले आयुमाना	तुम्हारा नाम हमने सुन रखा है
ओते दिसुम टुण्डु जाकेद	धरती, देश के अन्त तक
नुतुम तामा: हो रोआ जाना	तुम्हारा नाम रोपा गया

(104)

प्रेम दारु दो लिदि लिदि प्रेम का वृक्ष लहलहा रहा है

प्रेम दारु दो लिदि लिदि प्रेम का वृक्ष लहलहा रहा है
काचिरे गातिङेम दुबेको:आ मित्र, तुम नहीं बैठोगे
दाया दारु दो लेपा-लाड़ि दया का पेड़ फैला हुआ है
काचिरे सांगाञेम जारु को:आ प्रिय, तुम नहीं सुस्ताओगे

प्रेम दारु दो लिदि लिदि प्रेम का लहलहाता यह वृक्ष
ओकोए गातिङ रे रोआ लेदा किसने रोपा था
दाया दारु दो लेपा-लाड़ि दया का फैला हुआ यह गाछ
चिमाए सांगाञ रे पोआ लेदा किसने रोपा था

विधि-विधानसाए रोआ लेदा विधि विधानसय ने रोपा है
प्रेम दारु दो लिदि लिदि प्रेम का यह लहलहाता वृक्ष
सुरजु मुनिगे पोआ लेदा सूर्य मुनि ने लगाया है
दाया दारु दो लेपा-लाड़ि दया का फैला हुआ यह पेड़

बारो भाई आसुर को उमबुल केनतेआ बारह भाई असुर बैठे थे
प्रेम दारु दो लिदि लिदि प्रेम के इस वृक्ष के नीचे
तेरो भाई देवता को सुरुकेन तेआ तेरह भाई देवता गण विश्राम किए थे
दाया दारु दो लेपा-लाड़ि दया के इस पेड़ तले

प्रेम दारु लेका तुतुकुन उमबुल प्रेम की तरह मीठी छाया
दिसुम तालारे बानो: ताबु देश में कहीं नहीं है
दाया दारु लेका सिनिबिल जो दया की तरह मीठा फल
गामाए ताला रेओ बानो: ताबु धरती में कहीं नहीं है

रोआ जोमपे प्रेम दारु प्रेम का वृक्ष तुम भी उगाओ
जेटे लोलोरे उम्बुलेन पे हो तपती गर्मी में आराम पाओ
पोआ जोमपे दया दारु दया का गाछ तुम भी उगाओ
रेंगे: तेताङ रे जोमान पे हो भूख प्यास में इसे खाओ

(105)

तिसिङ दो गातिङ काम हेता रूड़ाञ

आज तो तुम हमारी ओर नहीं देखते

लाङ लाङेम धोतिआकाना — फहरती हुई धोती पहने हो
ओकोता: तेम ताना हाले — किधर तुम निकले
कुलिमेरेओ गातिङ काम उदुबाञ ताना — बंधु, पूछने पर भी तुम नहीं बोलते हो

होला दोलाङ ताइकेना — कल तक हम साथ थे
जामारेलाङ सुसुन केना — साथ हम नाचे थे
तिसिङ गातिञ काम हेता रूड़ाञ — आज तो तुम हमारी ओर देखते भी नहीं

तीरा: सोना मुंदाम — हाथ की सोने की अंगूठी
एनाओम इदि केदा — तुमने उसे भी (वापस) ले ली
हेता रूड़ालेम गातिञ काजि ताञ आयुमेमे — प्रिय, हमारी ओर देखो और सुनो भी

बुरू को चेतान रे — पहाड़ों के ऊपर
गाड़ा को जोबेला रे — नदी घाटियों में
रूतु तामा: गातिञ तिरि रिरि साड़िताना — (अब तो) बांसुरी ही सुनाई पड़ती है

(106)

लेल जोममे होरा

राह पहचान लो

लेल जोममे होरा आयुम जोममे काजि — राह पहचान लो, (इन) बातों पर गौर करो
सोबेन कोतेम तायोमाकान, हे दुनिया रे — दुनिया में सबसे पीछे तुम ही पड़े हो
आयुम जोममे काजि — इन बातों पर ध्यान दो

आइदिम ताइकेना सिङबोगा-लो:म जागारकेना — आदि में तुम भगवान के नजदीक थे
तिसिङ दोए: बागेकेदमेआ, हे ठोरेमे — आज उसने तुम्हें छोड़ दिया इसे तुम जान लो
आयुम जोममे काजि — इन बातों पर गौर करो

रेंगे: रेम पासेआकाना सोबेन को लानदाम ताना — गरीबी में फंसे हो, हम पर सब हंसते हैं
बिरिद में आलोम लानदा रिकान, हे ठोरेमे — उठो क्यों उन्हें हंसने देते हो
आयुम जोममे काजि — इन बातों पर ध्यान दो

तुरजानाए: नावा सिंगि	नया सूर्य उगा
मारसाल जाना गोटा दिसुम	धरती पर किरणें फैली
आम नांगेन बानो: जेतान मारसाल,	तुम्हारे लिए कोई प्रकाश नहीं है,
हे ठोरेमे	समझ लो
आयुम जोम में काजि	बातों पर ध्यान दो
मेद मुआंड़ां आबेनमे, हुमु कोतेम जारलाकाना	आँखे तुम साफ कर लो सेल से तुम भरे हो
निरेमे सोबेनकोलो: मिसाते, हे दुनिया रे	दुनिया में सब के साथ मिलकर चलो
आयुम जोममे काजि	बातों पर गौर करो

(107)

ने सोमाए दो गातिञ काम नामेआ

प्रिय, यह समय फिर नहीं पाओगे

डिण्डा सोमाए बा लेका	कुंवारेपन का समय फूल की तरह
आबु नांगेन दोआकाना	हमारे लिए लिखा है
ने सोमाए दो गातिञ	प्रिय, यह समय
चिउलाओ काम नामेआ	फिर से नहीं पाओगे
सेता: इमता बा जाना	बिहान को कली चटकी
तिकिन इमता आला जाना	दोपहर को फूल-फूटा
गाण्डे तारासिङ गातिञ	प्रिय जब मध्याह्न हुआ
बा गोसो चाबा जाना	फूल मुरझा गया
जाओ गेबु मेनेआ	हम रोज रोज कहते हैं
दोलाबु सुसुना	चलो हम नाचें
जानाओ हुलाङ हाले,	प्रिय, हर समय
का ताइना रासिका	उमंग नहीं रहेगा
हाड़ाम बुड़िआ जान रे	बुढ़ापा आने पर
बानो: जेतान रासिका	कोई उमंग नहीं
टाकाब टुकुब हाले	हमें लाठी टेक कर
टुण्डा बाड़ानाबु	चलना होगा

(108)

बा लेकाम लेलो: ताना — तुम फूल से लगते हो

सिंगि लेकाम तुर लेना — तुम सूर्य की तरह उदित हुए
चाण्डु: लेकाम मुलु: लेना — चाँद की तरह दिखाई दिए
आमदोरे गातिञ गोटा दिसुमेम मारेसाल केदा — प्रिय, तुम ने सारे देश में प्रकाश फैलाया
बानो: ताले जीरे हिआतिङ — (तुम्हें देंख) हमारे मन में चिंता नहीं है

बा लेकाम लेलो: ताना — तुम फूल से लगते हो
सोआन तानाम गोटा दिसुम — सारे देश में तुम्हारा गंध उड़ रहा है
आमदोरे गातिञ कुलिमेरे काम जापागार — (किन्तु) तुमतो पूछने पर भी बोलते नहीं
जी ताले हांड़ां गिड़िजाना — मन से हम (इसलिए) बिलकुल उदास हैं

टाका सिका बानो: ताले — हमारे पास रुपये-पैसे नहीं है
सोना सामाड़ोमो बानो: — सोना-चाँदी भी नहीं है
हाएरे गातिञ आम लेलते मेददा: जोरो ताना — प्रिय, तुम्हें देख आँखों से आँसू आ रहे हैं
आम नांगेन चिना:ञ चिकालेका: — तुम्हारे लिए मैं क्या कर सकता हूँ

आमा: नांगेन गे — तुम्हारे लिए ही
तोवा बा को बा काना — दूधी के फूल फूटे हैं
हाएरे गातिञ तोवा बाञ बा कुलताम — प्रिय, तुम्हें फूल पहना कर भेज देंगे
एना चिम हाटिताना तोबे — क्या तुम यही पसन्द करोगे

तीरे ताञ सोना मुंदाम — (नहीं तो) हाथ की मेरी सोने की अंगूठी
काटा रे ताञ जामबार पोला — और पैर का पोला
एनागे गातिञ, तेर गातिञ तोबेञ ओमामे ताना — प्रिय, इसे ही तुम्हें दे देता हूँ
तेला केमे दायाते ताञ तिसिङ — प्रिय, तुम आज इसे ही दयाकर ले लो

Dr. RAM DAYAL MUNDA : A BRIEF BIO DATA

BIRTH

Village : Diuri, P.O. Tamar, Ranchi, Jharkhand, 1939.

EDUCATION

Lutheran Mission School, Amlesa, Tamar, Ranchi, 1946-53.

S.S. High School, Khunti, Ranchi, 1953-57.

Ranchi University, Ranchi, 1957-63, M.A. (Anthropology).

University of Chicago, USA, 1963-70, M.A. PhD (Linguistics).

RESEARCH AND TRAINING

- Research Assistant, South Asian Languages and Civilizations, University of Chicago, 1963-70.
- Assistant Professor- Associate Professor, South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1970-81.
- University Professor, Tribal and Regional Languages, Ranchi University 1981-99.
- Visiting Professor, Australian National University, Canberra, 1983.
- Visiting Professor, Syracuse University, New York, 1996.
- Visiting Professor, Tokyo University of Foreign Studies, 2001.

FELLOWSHIPS

- American Institute of Indian Studies, 1977-78.
- United States Education Foundation in India, 1996.
- Japan Foundation, Tokyo, 2001.

FIELD OF RESEARCH AND TEACHING

- Indian Languages and Literatures.
- Tribal Peoples of India.
- World Indigenous Movement.
- Jharkhand Movement.
- Reconstructing Jharkhand.

ADMINISTRATIVE SERVICES

Pro Vice-Chancellor, Ranchi University, 1985-86.

Vice-Chancellor, Ranchi University, 1986-88.

MEMBERSHIP IN NATIONAL/INTERNATIONAL COMMITTEES/ORGANIZATIONS

1. Committee on Jharkhand Matters, Government of India, 1989-95.
2. Anthropological Survey of India, 1989-95.
3. National Education Policy Review Committee, 1990.
4. Steering Group, Planning Commission, 1996-2000.
5. Expert Committee, National Commission, Women, 1997-2000.
6. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief President).
7. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief Advisor).
8. National Advisory Board, International Labour Organization (ILO), 1997-2000.
9. Executive Committee, Jawaharlal Nehru University, 1990-1995.
10. Executive Committee, North Eastern Hill University, 1993-1996.
11. Jharkhand Peoples Party, 1991-98(Chief President).
12. Adim Jati Seva Mandal, 1990-Present. (President)
13. Jharkhand Sanskritik Morcha, 1998-Present (President).
14. Ranchi University PG Teachers' Association, 1998-2000 (President).
15. Bharatiya Sahitya Vikas Nyas, 1998-Present (Secretary).
16. Binrai Institute of Research and Action, 1997-Present (President).
17. Standing Committee, Human Rights Education University Grant Commission, 1998-2001.
18. National Committee for Promotion for Social & Economic Welfare, 1998-2001.
19. Expert Committee, Sahitya Academy, 1999-Present.
20. National Council for Teachers Education, 2000- 2003.
21. Working Group on Empowerment of Scheduled Tribe, Planning Commission, 2000-2005. (Chairman).
22. All India Literary Forum, (President, 2005—present).
23. Technical Support Group for Formulation of Rules to Operationalise the Schedule Tribe and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006, Ministry of Tribal Affairs, Government of India, 2007, (Member).
24. Committee to Setup Central Tribal University, 2007, (Member).

PARTICIPATION IN INTERNATIONAL MEETINGS/ CONFERENCE

1. Festival of India in USSR, 1987 (Leader of the delegation).
2. International Music Workshop, Bali, Indonesia, 1988.
3. International Dance Alliance, Manila, Philippines, 1989.
4. International Folk Dance Festival, Taipei, 1990.
5. Adivasi Campaign in Europe, 1993.
6. Dalit Campaign in Europe, 1994.
7. International Conference on Indigenous Economy, Copenhagen, Denmark 1997.
8. United Nations Working Group on Indigenous Populations, Geneva, 1987-Present (Leader of the delegation).
9. International Alliance for Indigenous Peoples of the Tropical Forests, Nagpur, 1998.
10. Asian Indigenous Peoples' Conference on UN Permanent Forum on Indigenous. Peoples, Indore, 1999.
11. International Conference on Hunting and Games, Berlin, 2000.
12. International Conference on Indigenous Peoples, Upsala, Sweden, 2002.
13. Asian Indigenous Peoples Conference on UN Permanent Forum on Indigenous Issue, Bangkok, 2002.
14. The UN Permanent Forum on Indigenous Issues, New York, 2002-Present.

PUBLICATIONS

1. Four Mundari Jadur Songs in THE EAST WEST REVIEW 2(3), 1966(with Norman Zide).
2. HISIR (Necklace, Modern Mundari Songs), Sahkari Prakashan, Ranchi,1967
3. SELED (Miscellaneous Poems in Mundari, Nagpuri and Hindi), Sahkari Prakashan, Ranchi,1967
4. PROTO-KHERWARIAN SOUND SYSTEM, Department of South Asian Languages and Civilization, University of Chicago, 1967
5. Songs on Birsa and his Movement in Journal of Social Research 12, Department of Anthropology, Ranchi University, 1969 (with Norman Zide)
6. Descriptive Dialogue Songs in Mundari in M.C. Pradhan, P.K. Mishra and D.J. Shastri(Eds.) ANTHROPOLOGY AND ARCHEOLOGY, Oxford University Press, Bombay, 1969 (with Norman Zide).

7. Aspects of the Mundari Verb in Indian Linguistics 30, 1969.
8. Structural influence of Bengali Vaishnav songs on Traditional Mundari songs in JOURNAL OF SOCIAL RESEARCH 13, Department of Anthropology, Ranchi University, 1970.
9. MUNDARI GÎTKÂR, SHRI BUDU BABU AUR UNKI RACHNAE, Adivasi Sahitya Parishad, Ranchi, 1974.
10. OCEAN OF LAUGHTER, English Translation of Hâsyârnava (The Sanskrit Play by Jagadishwara Bhattacharya), Writers Workshop, Calcutta, 1975 (with David Nelson).
11. STRUCTURAL FEATURES OF THE VAISHNAV SONGS OF PARGANA BANGALI, PhD Thesis, Department of Linguistics, University of Chicago, 1975.
12. KALYANI, English translation of the KALYÂNÎ (Hindi Novel by Jainendra Kumar), Department of South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1976(with Paul Staneslow and Mark Johnson).
13. Some Formal Features of Mundari Traditional Poetry in Philip Jenner, Lawrence Thompson and Stanly Starosta (Eds) AUSTRO ASIATIC STUDIES, University of Hawaii Press, 1976
14. HOLY MAN FROM JAMANIA, English Translation of the Hindi novel JAMANIA KÂ BÂBÂ by Nagarjuna, Writers Workshop, Calcutta, 1977 (with Paul Staneslow).
15. Word Deformation in Mundari Song Texts in Peter Ponette (Ed) MUNDA WORLD, Catholic Press, Ranchi 1978(with Norman Zide).
16. KUCHH NAE NÂGPURÎ GÎT (Songs in Nagpuri), Nagpuri Sahitya Parishad, Ranchi, 1978.
17. MUNDÂRÎ VYÂKARAN (Mundari Grammar), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1979.
18. DHRUWA SWAMINI, English Translation of Hindi Play by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis. Also in JOURNAL OF SOUTH ASIAN LITERATURE 14, Michigan State University Press, 1979 (with Paul Staneslow).
19. Tribal development in JHARKHAND in P. Das Sharma(Eds)PASSING SCENES IN CHOTANAGPUR, Maitree Publications, Ranchi, 1980.
20. EEA NAWA KAANIKO (Seven New Stories), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
21. TITLI, English Translation of the Hindi Novel by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis,1980(with Paul Staneslow).

22. NADÎ AUR USKE SAMBANDHÎ TATHÂ ANYA NAGÎT, Jharkhand Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
23. THE SUN CHARIOTEER, English Translation of Hindi long poem RASHMIRATHI by Ramdhari Singh Dinkar, Department of South Asia Studies, University on Minnesota,1981 (with Paul Staneslow and David Nelson).
24. LANGUAGE OF POETRY, Classical Publication, Delhi, 1981.
25. BIRSA MUNDA, Hindi Translation of the BENGALI BIRSA MUNDA by Mahasweta Devi, Ekta Prakashan, Chaibasa,1981. Second edition, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2000.
26. WAPASI, PUNARMILAN AUR ANYA NAGÎT, Jharkhand Sahitya Parishad, 1985.
27. ALL JHARKHAND STUDENTS UNION KA SAMVIDHÂN, Ranchi, AJSU, Ranchi, 1986(with S. Basu Malik, Suraj Singh Besra and Deosharan Bhagat).
28. MEMORANDUM OF JHARKHAND COORDINATION COMMITTEE, JCC, Ranchi, 1987 (with B.P.Keshari, Santosh Rana, S. Basu Malik, and Suraj Singh Besra).
29. JHARKHAND VÂRTÂ, Position Paper for talks between the JCC and the Central Government, JCC, Ranchi, 1989 (with B.P.Keshri).
30. Tribal Identity: The Crisis and the Way Out in Karuna.M.Braganza and S.Peeradina(Eds) CULTURAL FORCES SHAPIG INDIA, (Macmillan) Bangalore, 1989 . Also in RELIGION AND SOCIETY 36, Bangalore, 1989.
31. Jharkhand Movement, Retrospect and Prospect in JOURNAL OF SOCIAL CHANGE, Council for Social Development, Delhi, 1990.
32. JHARKHAND PEOPLES PARTY KA SAMVIDHÂN, JPP Office, Ranchi, 1990 (with Suraj Singh Besra and Devsharan Bhagat).
33. Dispossession and Exploitation of Tribal Peoples Through Communication Manipulation, with Special reference to Jharkhand in RELIGION AND SOCIETY 38,1991
34. Recent Development in Jharkhand Movement in INDIA INTERNATIONAL QUTERLY, Indian International Centre, 1992.
35. Introduction to Indigenous and Tribal Solidarity, ICITP, Delhi, 1997.
36. BHURIA COMMITTEE REPORT AUR JHARKHAND KI SHETRA ME USKÂ KÂRYÂNVAYAN, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 1997.

37. Abstract on Socio-Cultural Rights: Language, Education and Cultural Identity in B.K. Roy Burman and B.G. Verghese (Eds) ASPIRING TO BE, Delhi, Konark Publication, 1995.

38. An Insiders View of the Struggle for Jharkhand in JAI JHARKHAND, Coimbatore, Sarini, 1999.

39. Adivasi Identity in RISING FACISM, Delhi, Update Collection, 2000.

40. ADI DHARAM, Religious Beliefs of Adivasi of India, Sarini, Coimbatore, 2000. Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001. Bangali, Sail Rakab Puthi Centre, 2002.

41. ADIVASI ASTITVA AUR JHARKHANDI ASMITA KE SAWÂL, Prakashan Sansthan, Delhi, 2001.

42. ADANDI BONGA (WIVÂH MANTRA), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001 (with Ratan Singh Manki).

43. JI-TONOL (MAN BANDHAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.

44. JI-RANAªA (MAN BICHHURAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001.

45. ENEON (JÂGARAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.

46. BA (H) BONGA (SARHUL MANTRA), Mundari- Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.

47. REPORT OF THE WORKING GROUP ON EMPOWERMENT OF THE SCHEDULE TRIBES DURING THE TENTH FIVE YEAR PLAN, Planning Commission, Government of India, Delhi, 2002.

48. GONOE? PAROMEN BONGA (SHRÂDDHA MANTRA), Mundari Hindi Version, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2003(with Ratan Singh Manki).

49. JHARKHAND MOVEMENT, Indian Social Institute, Delhi, 2000 (with S. Basu Malik).

50. GLOBALISATION AND THE CHALLENGES OF TRIBAL DEVELOPMENT (Dr. Durgabai Deshmukh Memorial Lecture), Council for Social Development, New Delhi, 2005.

51. ADI DHARAM, BHÂRATIYA ADIVÂSIYAON KI DHÂRMIK ASTHÂYEN, New Delhi (Rajkamal Prakashan), 2009.

52. SOSOBONGA (BHELWA PÛJAN) PUNARNAVISRIT, New Delhi (Rajkamal Prakashan) in press.

WORKS IN PROGRESS

1. TUKUI? LUTUR BONGA (KARNA BEDHI MANTRA), Mundari-Hindi Version.
2. BURU SENGEL (FOREST FIRE), Mundari Novel.
3. RECONSTRUCTING JHARKHAND: A DEVELOPMENT BLUE PRINT.
4. INDIA'S CONTRIBUTION TO THE UN WORKING GROUP ON INDIGENOUS POPULATIONS 1990-2000.(with Jebra Ram Muchahari)
5. MUNDARI VYAKARAN AUR SABDKOSH.
6. PANCHPARGANA KE PREM GEET.
7. MUNDARI CHHAND.
8. MUNDARI LOKGEET/KAVITAYEN.
9. JHARKHANDI JAGARAN GEET.
10. STUDIES IN TRIBAL LANGUAGES AND CULTURES OF INDIA, Professor Norman Zide Commemoration Volume.

उल्लेखनीय सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियां

आदिवासी सांस्कृतिक पहचान प्रतिबिंबन–

- राँची विश्वविद्यालयी दिनों में ही वृहत्तर झारखण्ड क्षेत्रीय आदिवासी सरहुल महोत्सव के रूप में राँची में एक विशाल शोभायात्रा की परम्परा प्रारंभ करने में प्रमुख भूमिका। इस महोत्सव ने कालक्रम में पिछले 50 वर्षों में एक क्षेत्रीय विकेन्द्रिय रूप ले लिया है जिसके फलस्वरूप चैत्र का पूरा महीना ही महोत्सवमय हो जाता है।
- विदेश (अमेरिका–यूरोप) प्रवास के 18 वर्षों (1963–81) के दौरान भाषाविज्ञान और भारत विद्या के अध्ययन–अध्यापन के क्रम में साउथ एशिया फोक पर्फोमर्स के 25 सदस्यीय दल के नेतृत्वकारी टीम सदस्य के रूप में मध्यअमेरिका प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं अन्तरराष्ट्रीय नृत्यसंगीत आयोजनों में सफल सहभागिता।
- स्वदेश वापस आने के बाद राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना के साथ आदिवासी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रारंभ। साथ ही पूर्व एशिया (ताइपेई, जापान) एवं दखिण–पूर्व एशिया (इण्डोनेशिया, फिलीपीन) में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजनों में झारखण्डी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुति।
- झारखण्ड विषयक समिति, भारत सरकार (1989–2000) में सक्रिय सदस्यता एवं उल्लेखनीय भूमिका, जिसके फलस्वरूप झारखण्ड राज्य गठन।
- विश्व सामाजिक मंच (World Social Forum) मुंबई (2004) एवं दिल्ली (2007) सत्रों में सर्वोत्तम भागीदारी।
- डोम्बारी पहाड़ (जिला–खूंटी, झारखण्ड) पर जनसहयोग एवं सरकारी विभागों के समन्वय से आदिवासी महानायक, बिरसा मुण्डा की विशालकाय (18′) प्रतिमा एवं, 80′ शहीद स्तंभ खड़ा करने में अग्रणी भूमिका निर्वहन।
- झारखण्ड सांस्कृतिक क्षेत्र में यहां की लोक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए अखरा (ग्राम सांस्कृतिक केन्द्र) के पुनर्जागरण एवं विस्तार–प्रसार को एक अभियान का रूप देने में उल्लेखनीय भूमिका निर्वहन। इस चेष्टा की मान्यता स्वरूप 2008 में संगीत–नाटक अकादमी द्वारा भारत के राष्ट्रपति के करकमलों से पुरस्कृत।
- सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से मिलकर जनविकास के अनेक कार्यक्रमों में सफल सहभागिता, विशेषकर वन विस्तार एवं संरक्षण के क्षेत्र में।
- राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी जनहित अधिनियमों के प्रारूप निर्माण कार्य में सक्रिय भूमिका, विशेषकर ग्राम स्वशासन (PESA) आदिवासी नीति एवं वन नीति–नियम निर्माण में।
- प्रकृति और मनुष्य के पारम्परिक सम्पोषण (Symbiotic) संबंध को बनाए रखने की चेष्टा के एक आस्थागत अभियान का रूप आदिधर्म को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापना को समर्पित एवं देश की आदिवासी आबादी के लिए 'आदिधर्म' की प्रस्तावना।
- देश के आदिवासी क्षेत्रों में फैलते हुए उग्रवाद पर चिंतित एवं इसके पीछे की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने की चेष्टा में संलग्न।

Travels : North America, Europe, Asia-Pacific
Contact : Sarnatoil-Hatma, Behind Ranchi College, Ranchi-834008, Jharkhand.
Email : rdmunda@yahoo.co.uk ● ***Cell Phone:*** 9431938180 ***Home:*** 0651-2233090